जलतरंग

माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड की राजभाषा पत्रिका

अंक 12

सितंबर 2019

150 YEARS OF CELEBRATING THE MAHATMA

28 सितम्बर 2019 को एमडीएल की हेरिटेज गैलरी का उद्‌घाटन करते हुए माननीय रक्षामंत्री श्री राजनाथ सिंह साथ में भारी उद्योग मंत्री श्री अरविंद सावंत तथा एमडीएल के सीएमडी के साथ अन्य अधिकारीगण

साहित्यिक संस्था आशीर्वाद से पत्रिका के लिए सर्वोत्तम पुरस्कार माननीय भारी उद्योग मंत्री श्री अरविंद सावंत से प्राप्त करते हुए श्री पी डी सिद्दीकी, श्री रामप्रीत यादव सप्र(राजभाषा)

जलतरंग

माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड की राजभाषा पत्रिका

संरक्षक

कमोडोर राकेश आनंद, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

मुख्य परामर्शदाता

श्री संतोष कुमार मल्लिक, महाप्रबंधक (मानव संसाधन)

संपादक मण्डल

श्री एस एस कदम, अपर महाप्रबंधक (मा सं एवं क सं)

श्री श्रीनिवास सिन्हा, अपर महाप्रबंधक (मा.सं - राभा)

श्री रामप्रीत यादव, सहायक प्रबंधक, राजभाषा

श्री पी डी सिद्दीकी, सहायक प्रबंधक, राजभाषा

सुश्री जयंतिका मुखर्जी, वरिष्ठ राजभाषा अनुवादक

मुद्रक

न्यू जैक प्रिंटिंग प्रेस प्रा. लि.

बी-5/130, मित्तल इंडस्ट्रियल इस्टेट, मरोल नाका,

अंधेरी-कुर्ला रोड, मुंबई - 400 059

फोन नं. +91-22-67721000

प्रकाशक

राजभाषा अनुभाग

माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड

माझडॉक हाउस, दूसरी मंजिल, डॉकयार्ड रोड, मुंबई - 400 010

फोन नं. +91-22-23710456

विषय-सूची

अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक की कलम से... 3

निदेशक (समवाय योजना एवं कार्मिक) का संदेश..... 4

महाप्रबंधक (मानव संसाधन) का संदेश................ 5

सम्पादक की कलम से.................................. 6

जहाज निर्माण - पाइप कार्यशाला........................ 7

श्री लाल साहब सिंह

मुख्य प्रबंधक (जनि. - पाइप शॉप)

एमडीएल में पनडुब्बी का निर्माण........................ 9

पी डी सिद्दीकी

सहायक प्रबंधक (राजभाषा)

गाँधी जयंती 150 वर्ष 11

श्री रामप्रीत यादव

सहायक प्रबन्धक(राजभाषा)

ऐसा दो वरदान प्रभु..................................... 16

प्रकाश चन्द्र झा

उ म प्र (जनि-कार्य)

पी17ए परियोजना...................................... 17

सौमित्र मिश्राप्र (पी17ए)

एमडीएल को प्राप्त पुरस्कार एवं सम्मान 19

सिमनलाल आर्य

वरिष्ठ लिपिक

आयुष्मान भारत 22

जयन्तिका मुखर्जी

वरिष्ठ अनुवादक (राभा)

वापस मिली पांडुलिपि 24

प्रियंका गायकवाड

उप्र (मा.सं- अधिकारी)

भाषा और विकास....................................... 25

श्री अशोक शेल्हाल्कर्

अपर महाप्रबंधक (आं.ले.)

सार्वजनिक खरीद और संविदा / 27

अनुबंध प्रबंधन से सम्बंधित मुद्दे

श्री विवेक मोरे

मुख्य प्रबन्धक (सतर्कता)

एमडीएल में विभिन्न कार्यक्रमों की झलकियाँ 33

साइबर सुरक्षा 38

श्री अशोक कुमार शिंदे

मुख्य प्रबन्धक (सीआईटी)

ईमानदारी का पुरस्कार................................. 41

आशीष कुमार यादव

प्रअ (अनुरक्षण)

निगमित सामाजिक दायित्व और स्थायी विकास 42

रोहित पाण्ड्य

उप्र (सीएसआर)

जमाना बदल रहा है..................................... 44

रामअवतार यादव

क्यूसी निरीक्षक

उत्पादन कार्यशाला - दक्षिण यार्ड 45

रोशन कुमार

वरिष्ठ अभियंता (उत्पादनशाला)

प्रशिक्षु प्रशिक्षण शाला एवं 49

समुद्री अभियांत्रिकी प्रशिक्षण

शशि भूषण तिवारी

अपर महाप्रबंधक(एटीएस/एमईटी)

धन्यवाद धन्यवाद धन्यवाद 51

रमेश चन्द्र जैन

मुख्य प्रबंधक (पीएससी)

नेताजी सुभाष चन्द्र बोस................................ 52

श्री करनैल सिंह

प्र (पी15बी)

प्रकृति और मानव.. 56

रामाश्रय यादव

उप्र (भंडार-पूर्व खंड)

मार्टिन लूथर... 58

कृष्ण प्रधान

प्र (मा.सं- समवाय)

दान में चाहिए ज्ञान 58

सुधीर दिवेकर

टीआरए

मानव संसाधन - साझेदार कार्यनीति 59

सत्यनारायण प्रधान

अमप्र (मा.सं - समवाय)

जब गोरों ने एक गांव को घोषित किया “गैरचिरागी” 63

महीप गोयल

प्रबंधक (मानव संसाधन)

इस पत्रिका में दिये गये लेखकों के विचार से सम्पादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक की कलम से...

कंपनी की राजभाषा पत्रिका ''जलतरंग'' के 12 वें अंक को नये कलेवर में प्रस्तुत करने पर हर्ष की अनुभूति हो रही है। यह अंक राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी को समर्पित किया गया है। उन्होंने समाज और देश के लिए अनेकों मुसीबतों का सामना किया और अपमान झेलकर भी समाजहित, जनहित, राष्ट्रहित को सर्वोपरि रखा।

माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड में राजभाषा हिन्दी का कार्यालयीन प्रयोग नियमित रूप से प्रगति पर है। कम्पनी के सभी कर्मचारी अपना कार्यालयीन कार्य और प्रतिवेदन हिन्दी में कर रहे हैं।

भारत सरकार के प्रमुख विभागों में पदासीन अधिकतर मंत्री हिन्दीतर राज्यों से हैं फिर भी उनका योगदान हिन्दी के प्रचार - प्रसार में अतुलनीय और प्रशंसनीय है।

सुधार का सूत्रपात यदि शिखर से हो तो जमीनी स्तर तक पहुंचकर जनसामान्य में स्वतः स्वीकार्य हो जाता है।

भारत सरकार की नीतियों को पुस्तकों से निकालकर जमीनी स्तर लागू करना सरकारी कर्मचारियों की जिम्मेदारी है।

मेरा विचार है कि देश की एकता और अखंडता को कायम रखने के लिए हिन्दी से बेहतर कोई अन्य भाषा कारगर नहीं हो सकती इसलिए सभी कर्मचारियों को अपना दैनिक कार्य हिन्दी में अधिक से अधिक करने का प्रयास करना चाहिए।

एमडीएल में हिन्दी के निरंतर प्रगति के लिए तीन पत्रिकायें प्रकाशित होती हैं जिसमें से दो की भाषा मिश्रित होती है।

''जलतरंग'' की गुणवत्ता तथा लेखों में नवीनता लाने का प्रयास जारी है।

कम्पनी के उत्पादों तथा सामाजिक सरोकारों को भी पत्रिका में समाहित किया गया है जो जन भागीदारी का परिचायक है।

मैं पत्रिका की सफलता की कामना करता हूँ।

कमोडोर राकेश आनन्द, भानौ (नि.)
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

निदेशक (समवाय योजना एवं कार्मिक) का संदेश

प्रिय मान्यवर,

राजभाषा पत्रिका "जलतरंग" का 12वां अंक प्रकाशित करते हुए हमें हर्ष हो रहा है।

पत्रिका प्रकाशित करने का हमारा मुख्य लक्ष्य माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड में हिंदी की प्रगति करना है। पत्रिका में एमडीएल के कर्मचारियों एवं अधिकारियों के लिखे गए लेखों एवं कविताओं को प्रकाशित किया जाता है जिससे कि उन्हें कार्यालय में हिंदी लिखने एवं पढ़ने में आसानी हो।

एमडीएल में "जलतरंग" का प्रकाशन वर्ष 2014 से हो रहा है, तब से वर्ष 2019 तक इसे मुबंई उपक्रम टॉलिक का प्रत्येक वर्ष प्रथम पुरस्कार प्राप्त हो रहा है तथा इसके साथ ही स्कोप एवं हिंदी के विकास से जुड़े अनेक संस्थानों से भी पुरस्कार हो रहे हैं। जलतरंग राजभाषा पत्रिका को वर्ष 2015 में प्रथम कीर्ति पुरस्कार तथा वर्ष 2016 में द्वितीय कीर्ति पुरस्कार महामहिम राष्ट्रपति द्वारा प्राप्त हुए हैं।

माझगॉव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड, रक्षा उत्पादन विभाग, रक्षा मंत्रालय, भारत सरकार की एक ईकाई है जो भारतीय नौसेना के लिए युद्धपोत एवं पनडुब्बी का निर्माण करती है। राष्ट्र निर्माण और समुद्री खतरों से सीमा सुरक्षा को सुरक्षित करने के लिए कंपनी लगभग 246 वर्षों से सेवारत है। कंपनी ने 28 सितंबर 2019 को एक पोत नीलगिरी का जलावतरण तथा पनडुब्बी खंडेरी की कमिशनिंग कर ऐतिहासिक उपलब्धि प्राप्त किया है। एमडीएल का कार्य तकनीकी होने के बावजूद भी एमडीएल हिंदी के हर क्षेत्र में प्रगति किया है तथा राजभाषा विभाग के आदेशों का अनुपालन करता है।

मैं एमडीएल के उन अधिकारियों एवं कर्मचारियों को विशेष धन्यवाद देता हूँ जिनकी रचनाएं इस पत्रिका में प्रकाशित की गई हैं। मैं इस संदेश के माध्यम से सभी एमडीएल सदस्यों से पत्रिका में और सक्रिय सहयोग करने की अपील करता हूँ।

मैं पत्रिका की सफलता की कामना करता हूँ।

कमोडोर टी वी थॉमस, भानौ (नि.)
निदेशक (समवाय योजना एवं कार्मिक)

महाप्रबंधक (मानव संसाधन) का संदेश

माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड रक्षा मंत्रालय के रक्षा उत्पादन विभाग के अंतर्गत एक सार्वजनिक उपक्रम है, जिसका प्रधान कार्य देश की नौसेना को सामरिक शक्ति प्रदान करना है। हालांकि इसकी शुरुआत एक सामान्य डॉक के रूप में हुई थी जहां जहाजों की मरम्मत हुआ करती थी। पिछले 246 वर्षों के इस लंबे कालक्रम पर एक सरसरी दृष्टि डालने पर यह ज्ञात होता है कि इसका विकासक्रम विशाल और विस्तृत रहा है। मराठा साम्राज्य से होते हुए ईस्ट इंडिया कंपनी तक और स्वतंत्रता पश्चात इसके अधिग्रहण तक माझगांव डॉक विकास के विभिन्न पड़ाओं से गुजर चुका है।

राजभाषा गृहपत्रिका "जलतरंग" माझगांव डॉक के उत्पादों और उससे जुड़े कार्यों को सर्वसाधारण तक पहुँचने का कार्य करती है। लेख कंपनी के उत्पाद से जुड़ें होते हैं। हमारी कोशिश हमेशा से यह रही है कि जलतरंग को और अधिक सारगर्भित बनाए और पाठकों के रुचि और तत्कालीन गतिविधियों से जुड़े लेख प्रस्तुत करें। जलतरंग के प्रकाशन से मैं प्रत्यक्ष रूप से जुड़ा हूँ। इसकी प्रगति और प्रचार में कंपनी के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों का योगदान सराहनीय है।

"जलतरंग" के 12वें अंक में कंपनी के उत्पाद से जुड़े लेखों के विविध रचनात्मक विधाओं से संबन्धित जानकारियों का समावेश किया गया है। भाषा सरल और सुबोध रखने का प्रयास किया गया। विभिन्न पाठक वर्ग की रुचि की सामग्री का चयन किया गया है।

एमडीएल में राजभाषा पत्रिका "जलतरंग" को प्रकाशित करने में राजभाषा विभाग के सभी मानदंडों का पालन किया जाता है जिससे कि पत्रिका का स्तर ऊंचा रहे। भारत सरकार, राजभाषा विभाग द्वारा निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करना हमारा ध्येय है और इस उद्देश्य को पूरा करने के लिए हमें सभी कर्मचारियों का पूर्ण सहयोग प्राप्त है।

मुझे आशा है कि इस पत्रिका के लेखों को आप सभी का प्यार और सराहना मिलेंगी।

संतोष कुमार मल्लिक
विभाग प्रमुख (मानव संसाधन)

सम्पादक की कलम से...

विगत वर्षों के दौरान राजभाषा पत्रिका के 11 अंक प्रकाशित हुए हैं जिनमें प्रयास किया गया है कि प्राचीन ऐतिहासिक उपलब्धियों के साथ-साथ कंपनी के तकनीकी पहलुओं पर हिन्दी में प्रकाश डाला जाय जो अब तक अधिकतर अंग्रेजी में होता रहा है। इस अंक में तकनीकी पक्षों के अलावा पहली बार वाणिज्यिक विषयों को भी सरल भाषा में प्रस्तुत किया गया है जो पाठकों का ज्ञानवर्धन करने में सहायक होगा।

राजभाषा के प्रसार की जिम्मेदारी देश के प्रत्येक नागरिक की है जिससे कि सभी भारतीय भाषाओं का आपस में सामंजस्य हो सके और देश का प्रत्येक नागरिक चाहे वह पूर्वोत्तर राज्य का हो या दक्षिण क्षेत्र का हिन्दी बोलने और समझने में सरलता महसूस कर सके।

वर्तमान समय में भाषाई जटिलता दक्षिण के राज्यों में भी कम हुई है। तीर्थ स्थल और ऐतिहासिक स्थानों पर स्थानीय लोग अपने व्यवसाय हित को देखते हुए बेहिचक हिन्दी का प्रयोग कर रहे हैं। कुछ राजनीतिक कारणों से भाषाई विवाद है लेकिन व्यक्तिगत विकास एवं व्यावसायिकता के सामने कुछ मुद्दे स्वतः गौड़ हो जाते हैं। देश में हिन्दी की महत्ता प्रतिदिन बढ़ रही है और आम जन बोल-चाल सर्वाधिक हिन्दी में कर रहे हैं।

यह देश के लिए सुखद अनुभूति का समय है कि भाषाई सीमायें अपने आप गिर रही हैं। भारत सरकार की नीति भी भाषा के मामले में सुधारवादी है। सबके विकास में देश का विकास निहित है। विश्व के सभी देशों ने अपनी अभिव्यक्ति का माध्यम अपनी भाषा को बनाया है।

इंग्लैंड में फ्रांसीसी शासन के दौरान सभी शासकीय कार्य फ्रेंच भाषा में होते थे और फ्रेंच भाषा शासन की भाषा थी। फ्रेंच शिक्षित व्यक्तियों को सरकारी सेवा में लेने की व्यवस्था निश्चित होने पर अंग्रेजी गवारों की भाषा हो गई।

दो सौ वर्षों पश्चात इंग्लैंड के नागरिकों में गुलामी के शासन में दम घुटने लगा और मुक्ति की चाह से स्वाभिमान जाग गया जिसके कारण 13वीं शाताब्दी में इग्लैंड फ्रांस से स्वतंत्र हुआ। आज भी अंग्रेजी भाषा में फ्रेंच शब्दों की मात्रा अधिक है। साथ ही रोमन लिपि यूरोप के सभी देशों में है, लेकिन ध्वनियाँ अलग-अलग हैं। लैटिन, ग्रीक, जर्मन फ्रेंच भाषा के सहयोग से अंग्रेजी का विकास हुआ है। विश्व के कुल 10 देशों में अंग्रेजी का वर्चस्व है जो अंग्रेजों के गुलाम रहे हैं।

रामप्रीत यादव
सहायक प्रबंधक (राजभाषा)

जहाज निर्माण - पाइप कार्यशाला

श्री लाल साहब सिंह
मुख्य प्रबंधक (जनि. - पाइप शॉप)

जहाज निर्माण प्रभाग की पाइप कार्यशाला में ग्राहक की मांग के अनुसार अनेक उपकरणों की सहायता से विभिन्न पोतों के लिए पाइप-स्पूल का निर्माण, झलाई (वेल्डिंग), टेस्टिंग एवं पिक्लिंग किया जाता है। इसके अतिरिक्त ब्रास-फिनिशिंग सेक्शन में विभिन्न प्रकार के नट, अडाप्टर, निप्पल, फ्लांज इत्यादि बनाये जाते हैं जो कि पाइप-स्पूल के फेब्रिकेशन या टेस्टिंग में काम आते हैं। 5-एस प्रमाणित इस कार्यशाला में कार्य के अनुसार मुख्य रूप से 5 भाग हैं - फेब्रिकेशन, वेल्डिंग, टेस्टिंग, मशीनिंग और पिक्लिंग।

प्रमुख उपकरण एवं उनके कार्य:

1) सी.एन.सी. फ्लेयरिंग मशीन (CNC Flaring machine, Model: F-200)

टी-ड्रिल (T-Drill), फ़िनलैंड द्वारा निर्मित यह आधुनिक मशीन जुलाई 2016 में स्थापित की गयी। जैसा कि नाम से विदित है इस मशीन की सहायता से पाइप के दोनों सिरों को फैलाकर (Flaring) कप जैसा आकार दे दिया जाता है जहां लूज फलांज डाल दिया जाता है जिससे पाइप में अलग से फ्लांज वेल्डिंग की जरुरत नहीं पड़ती है। ऐसे पाइप को जहाज में लगाते वक्त जरुरत के हिसाब से घुमा भी सकते हैं। अतः यह मशीन लागत कम करने में सहायक है। प्रशिक्षित पाइप-फिटर ही इस मशीन को चला सकता है। इसमें सभी तरह की धातु के पाइप में फ्लेयरिंग कर सकते हैं जो कि नीचे तालिका में वर्णित है:

तरीका	शीत फ्लान्जिंग	गर्म फ्लान्जिंग
कॉपर पाइप	20-200 NB	
कॉपर-निकल पाइप	20-200 NB	
कार्बन-स्टील/स्टेनलेस स्टील पाइप	20-50 NB	65-200 NB

2) सी.एन.सी. पाइप बेन्डिंग मशीन (CNC Pipe Bending Machine)

स्क्वार्ज़ रोबोटिक्स (Schwarze Robotics), जर्मनी द्वारा निर्मित यह आधुनिक मशीन दिसम्बर 2000 में स्थापित की गयी। इस मशीन की सहायता से 25-80 मिलीमीटर एन.बी. की किसी भी मटेरियल की पाइप में गर्म किये बिना बेन्डिंग कर सकते हैं। इस मशीन में सेमी-आटोमेटिक (Semi-automatic) और पूर्ण-आटोमेटिक (Fully-automatic) दोनों माध्यम उपलब्ध हैं। 1.5D और 3D दोनों तरह के बेंड बनाये जाते हैं तथा प्रशिक्षित पाइप-फिटर ही इस मशीन को चला सकता है। बेन्डिंग की गुणवत्ता की जाँच के लिए ट्रेस मास्टर (Trace master) मशीन का एक भाग है।

3) वर्टीकल बैंड सॉ मशीन (Vertica~ Band Saw Machine, Model: VBM-400 R)

मल्टी-कट मशीन टूल्स (Multi-cut Machine Tools), वडोदरा द्वारा निर्मित यह बहुपयोगी मशीन सितम्बर 2017 में स्थापित की गयी। इस मशीन की सहायता से उचित ब्लेड साइज़ (TPI) का चयन करके 25-300 मिलीमीटर एन.बी. की सभी धातु की पाइप किसी भी एंगल में कटिंग कर सकते हैं। कटिंग आयल और पानी का मिश्रण शीतलक (Coolant) के रूप में उपयोग किया जाता है।

4) नेकिंग मशीन (Necking Machine, Mode~ T-150)

टी-ड्रिल (T-Drill), फिनलैंड द्वारा निर्मित यह मशीन 1985 में स्थापित की गयी। इस मशीन की सहायता से एल्युमीनियम, कॉपर, क्युप्रोनिकिल, कार्बन-स्टील, स्टेनलेस स्टील की किसी भी पाइप में छेद करके ब्रांचिंग कर सकते हैं। सामान्यतया ब्रांच पाइप का बोर (dia) मुख्य पाइप से एक साइज़ छोटा होता है। क्लैंप साइज तथा कोल्लरिंग हेड टूल के अनुसार मुख्य पाइप और ब्रांच पाइप का रेंज निम्न तालिका में दिया गया है:

	निम्नतम बोर (मिमी)	अधिकतम बोर (मिमी)
मुख्य पाइप	50	250
ब्रांच पाइप	40	150

5) बोम्बे लेथ मशीन (Bombe Lathe Machine)

यह एक खराद मशीन है जिस पर जरुरत के अनुसार अनेक कार्य कर सकते हैं जैसे कि वस्तु को गोल करना (Rounding), चूड़ी काटना (Threading), छेद करना (Drilling), छेद को बड़ा करना (Boring) इत्यादि। इसके अतिरिक्त ब्रास-फिनिशिंग सेक्शन में 8 और भी लेथ मशीनें हैं। इन मशीनों का उपयोग करके विभिन्न साइ. ज की नट, अडाप्टर, निप्पल, फ्लांज इत्यादि का निर्माण किया जाता है। इस मशीन के मुख्य फीचर्स नीचे दिए गए हैं:

विवरण	माप (मिमी)
चक (Chuck) का आतंरिक व्यास	100
चक (Chuck) का वाह्य व्यास	700
बेड की लम्बाई	2000
चूड़ी काटने (Threading) का रेंज	50-150

6) मेटल बैंड सॉ कटिंग मशीन (Meta~ Band Saw Cutting Machine, Model-260DCA)

एंडटूल्स (Endtools) लिमिटेड, इंदौर द्वारा निर्मित यह मशीन किसी भी धातु की पाइप्स को काटने में सहायक है इस मशीन के मुख्य फीचर्स नीचे दिए गए हैं:

विवरण	माप (मिमी)
पाइप की साइज़	20-260
ब्लेड की लम्बाई	4100

एमडीएल में पनडुब्बी का निर्माण

पी डी सिद्दीकी
सहायक प्रबंधक (राजभाषा)

माझगांव डॉक लिमिटेड (मुंबई) का इतिहास लगभग 242 वर्ष पुराना है। यहाँ एक छोटी डॉक सन् 1774 में बनी थी। आज भी यह दुनिया के सबसे पुरानी डॉक है। वर्षों बाद यहाँ भारतीय नौसेना जहाज मरम्मत का काम शुरू किया और बाद में सन् 1960 में यह भारत सरकार द्वारा एक राष्ट्रीय रक्षा उत्पादन उपक्रम के रूप में घोषित कर दिया गया। यह दुनिया के बड़ें शिपबिल्डरों में एक ISO-9001 प्रमाणित राष्ट्र का पोत निर्माता है। एमडीएल भारतीय नौसेना एवं अन्य संस्थानों के लिए नेवल शिप, ऑफशोर प्लेटफार्म, टैंकर, बल्क कॅरियर, प्लैटफ़ार्म सप्लाई वेसल और पेट्रोल बोट बनाते रहा है।

सन् 1984 में तत्कालीन भारत की प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी द्वारा माझगांव डॉक लिमिटेड में पनडुब्बी यार्ड का अनावरण करने के साथ भारतीय नौसेना के इतिहास में एक नए दौर का सूत्रपात हुआ। माझगांव डॉक लिमिटेड ने जर्मनी से प्रौद्योगिकी हस्तांतरण के आधार पर दो पनडुब्बी प्रथम शंकुल और द्वितीय शल्की बनाने का आर्डर प्राप्त किया। अपनी अतिउत्तम प्रौद्योगिकी और कुशल प्रशिक्षित कार्मिकों के निरंतर प्रयत्न से अपने लक्ष्य को प्राप्त कर लिया, जिसके परिणाम स्वरूप 7 फरवरी 1992 को शल्की और लगभग दो वर्ष बाद 28 मई 1994 को शंकुल भारतीय नौसेना को सौंप दिया गया।

इससे उत्साहित होकर भारतीय नौसेना ने सन् 2005 में कलवरी श्रेणी की 06 अटैक सबमैरीन का लगभग 23000 करोड़ रुपये का एक बड़ा ऑर्डर दिया। कलवरी श्रेणी का प्रथम पनडुब्बी आई.एन.एस कलवरी का जलावतरण सितम्बर 2015 में किया गया और 14 दिसंबर 2017 में भारतीय नौसेना को सुपुर्द किया। इस श्रेणी की दूसरी पनडुब्बी खंडेरी 28 सितंबर 2019 को माननीय रक्षामंत्री श्री राजनाथ सिंह जी द्वारा भारतीय नौसेना को सुपुर्द की गयी। स्कोर्पिन श्रेणी की तीसरी पनडुब्बी करंज का जलावतरण 31 मार्च

पनडुब्बी "खंडेरी" की नौसेना को कमीशनिंग

पनडुब्बी "खंडेरी" को सलामी देते हुए

स्कोर्पिन परियोजना अपने विभिन्न चरणों में रक्षा मंत्रालय, रक्षा उत्पादन विभाग के सक्रिय प्रोत्साहन और बिना शर्त सहयोग के वर्तमान प्रगति को प्राप्त नहीं कर सकता था।

2018 को किया गया था और वर्तमान समय में यह कठोर समुद्री परिक्षण के दौर में है। स्कोर्पिन श्रेणी की चौथी पनडुब्बी वेला का जलावतरण 06 मई 2019 को किया गया और इसे समुद्री परीक्षण के लिए तैयार किया जा रहा है। शेष दो पनडुब्बियाँ वागीर और वागशीर वाह्य सज्जा के प्रगतिगत चरणों में हैं।

माझगांव डॉक लिमिटेड के पुराने इतिहास को देखते हुए इसके स्वर्णिम भविष्य की परिकल्पना करना और उद्योग जगत में उच्च शिखर पर स्थापित करना कोई आश्चर्य की बात नहीं होगी अपितु राष्ट्रहित के लिए निरंतर कार्य करने वाला यह भारत के लिए एक गौरवमयी ताज के तुल्य है। स्वयं को इसने अपने आपको उस जगह पर स्थापित कर लिया है जहाँ दूसरे राष्ट्रों को पहुँचने में समय लगेगा। स्कोर्पिन श्रेणी की पनडुब्बी मल्टीफेरीयस टास्क की जिम्मेदारी ले सकती है विशेष रूप से किसी आधुनिक पनडुब्बी के साथ जिसमें एन्टी-सरफेस के साथ-साथ एंटी-सबमैरीन वारफेयर भी शामिल हो।

खंडेरी की सुपुर्दगी के साथ भारत अपनी स्थिति पनडुब्बी निर्माता राष्ट्र के रूप में प्रमाणित किया है और एमडीएल अपनी प्रतिष्ठा भारत के अग्रणी शिपयार्ड के रूप में स्थापित करने के साथ ही भारतीय नौसेना की आवश्यकताओं को पूरा करने की क्षमता साबित करता है।

यह भी उल्लेख करना आवश्यक है कि एमडीएल द्वारा वर्ष 1992 एवं 1994 में निर्मित दो एसएसके श्रेणी पनडुब्बियां आज भी 25 वर्षों से अधिक समय तक सक्रीय सेवा में है यह एमडीएल के कौशल तथा क्षमता का प्रमाण है। एमडीएल ने भारतीय नौसेना की सभी चार एसएसके श्रेणी पनडुब्बियों के मध्यम पुर्नसज्जा के सफल निषादन के साथ साथ पनडुब्बी पुर्नसज्जा में भी विशेषज्ञता प्राप्त किया है। वर्तमान समय में एमडीएल एसएसके श्रेणी की पहली पनडुब्बी आईएनएस शिशुमार की मध्यम पुर्नसज्जा और लाइफ सर्टिफिकेशन का कार्य पूरा कर रहा है।

एमडीएल हमेशा राष्ट्र के प्रगामी स्वदेशी युद्धपोत निर्माण कार्यक्रम में आगे रहा है वास्तव में लीएंडर और गोदावरी श्रेणी युद्धपोत, खुकरी श्रेणी कारवेट्स मिसाईल बोट्स, दिल्ली और कोलकाता श्रेणी विध्वंसक, शिवालिक श्रेणी स्टील्थ विध्वंसक, एसएसके पनडुब्बियां और पहली स्कोर्पिन पनडुब्बी इसकी परिधि में हैं। एमडीएल का वर्तमान इतिहास भारत में स्वदेशी युद्धपोत निर्माण का व्यापक चित्र प्रस्तुत करता है।

पनडुब्बी "वेला" का जलावतरण

गाँधी जयंती 150 वर्ष

रामप्रीत यादव
सहायक प्रबन्धक(राजभाषा)

मोहनदास करमचंद गाँधी का जन्म 02 अक्टूबर 1869 को वर्तमान गुजरात राज्य के पोरबंदर नामक स्थान पर हुआ था। उनके दादा उत्तमचंद गाँधी तथा पिताश्री करमचंद गाँधी पोरबंदर रियासत में दीवान के उच्च पद पर कार्य किये थे। पोरबंदर तत्कालीन पश्चिमी भारत की 300 रियासतों में से एक था। उस समय उन राजाओं ने शासन किया जो मात्र राजकुल में जन्म लेने के कारण और अंग्रेजों की सहायता से सिंहासन पर विराजमान थे। उस समय मनमानी करने वाले राजा तथा सर्वोच्च ब्रिटिश सत्ता के निरंकुश प्रतिनिधि जनता का शोषण करते थे।

गाँधीजी के दादा उत्तमचंद गाँधी को अपनी सत्यनिष्ठा और कर्तव्य परायणता के कारण एक बार शासक के विरोध का सामना करना पड़ा था। राजा की सेना ने इनके घर को घेरकर गोले बरसाये थे। इसके कारण इनके दादा को पोरबंदर छोड़कर भागना पड़ा। गांधीजी के पिता श्री करमचंद गाँधी ने भी अपने सिद्धान्तों पर अटल रहकर पोरबंदर से हट जाना उचित समझा। किशोर मोहनदास का स्कूल का जीवन साधारण था और वह औसत दर्जे के छात्र थे। वर्ष 1886 में पिताजी की मृत्यु के कारण परिवार की आर्थिक हालत ख़राब हो गई थी। सन 1887 में मोहनदास ने मुम्बई से मैट्रिक की परीक्षा पास किया था। आगे की पढ़ाई के लिए मोहनदास को भावनगर भेजा गया। वहाँ पढ़ाई का माध्यम अंग्रेजी होने कारण इनकी समझ में कुछ नहीं आता था। आगे बढ़ने का आसार कम होने के कारण वापस घर आये। परिवार के मित्र श्री मावजी दवे ने सलाह दिया कि मोहन को इंग्लैंड जाकर कानून की पढ़ाई करनी चाहिए क्योंकि वकील का व्यवसाय उस समय प्रतिष्ठित तथा कमाईवाला समझा जाता था।

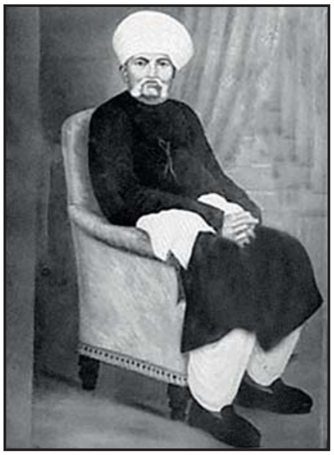

श्री करमचंद गाँधी

उनकी माँ शिक्षा के लिए इंग्लैंड भेजने के विरुद्ध थी। घर की हालत ठीक नहीं थी। इस परिवार का सम्बंध मोढ बनिया बिरादरी से था। बिरादरी का आदेश था कि कोई मोढ यदि इंग्लैंड जायेगा तो अछूत छाँटकर पूरे परिवार समाज से बहिष्कृत कर दिया जायेगा। किसी तरह समस्याओं से रास्ता निकालकर परिवार ने सितम्बर 1888 में 19 वर्ष की उम्र में मोहनदास को समुद्री जहाज से इंग्लैंड के लिए रवाना किए। उनका जीवन विभिन्न घटनाओं से भरा है जिसमें कुछ न कुछ सन्देश दिया है। 11वी पास करने के उपरांत वह इंग्लैंड जाने की तैयारी करने लगे थे लेकिन रुपयों की व्यवस्था नहीं हो पा रही थी। रिस्तेदारों, मित्रों से उधार लेकर किसी तरह विदेश

जाने की व्यवस्था कर पाये थे। इंग्लैंड निवास के दौरान वह सबसे सस्ते इलाके में पेइंग गेस्ट के रुप में रहते थे। उस समय इंग्लैंड की आर्थिक हालत सामाजिक रुप से सभी नागरिकों की ठीक नहीं थी। कुछ परिवार अपने मूल यूहूदी धर्म में थे और उपनिदेशवाद से आर्थिक लाभ प्राप्त करने में असमर्थ थे। यूहूदी से ईसाई बने नागरिक इंग्लैंड के उपनिवेशों में नौकरी तथा व्यवसाय से कमा कर सम्पन्न हो गये थे। यहूदियों की गरीबी देखकर गाँधीजी ने कहा था कि "अंग्रेजों को गरीब यहूदियों की सहायता करनी चाहिए"।

कस्तूरबा के साथ गांधीजी

करुणा का संदेश लाकर मानवता के सामने आत्मोत्सर्ग का उदाहरण पेश करने वाले ईशा मसीह के नाम पर यूरोप में भीषण अत्याचार किये जाते थे और धर्म युद्द के नाम पर लोगों को जबरन ईसाई बनाया जाता था।

बाइबल में उल्लेख है कि "सुई की नोक से ऊंट निकल सकता है पर धनी मनुष्य स्वर्ग में प्रवेश नहीं कर सकता है" यह कहने वाले ईसा के नाम पर चर्च और पोप उस समय दुनिया के सबसे धनी संस्थानों और व्यक्तियों में शुमार किए जाते थे। यही समाज की स्थिति यूरोप के विभिन्न देशों में थी। यूरोप के कुछ स्वार्थी शासकों ने अपने स्वार्थ के लिए दुनिया के अलग-अलग भूभागों को गुलाम बना कर लूटा और मानव शोषण का कारोबार किया था। सन 1891 में मोहनदास गांधी कानून की डिग्री प्राप्त कर लिये और भारत के लिए प्रस्थान करने पर पता चला कि माताजी का स्वर्गवास हो चुका है।

05 जुलाई 1894 को भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अग्रणी नेता श्री दादा भाई नौरोजी को गाँधीजी ने एक पत्र लिखा था। उसमें अपने संकोच एवं अनुभव हीनता के बारे में लिखा था की हो सकता है कि मुझसे गलती हो फिर भी मैं किसी का अहित नहीं करुगा। मोहनदास ने अफ्रीकी भारतीयों की सारी जिम्मेदारी अपने कंधे पर ले लिया क्योंकि वहाँ सभी भारतीय साक्षर नहीं थे।

स्वदेश लौटने पर गाँधीजी का चित्र

13 जनवरी 1897 को गुजराती व्यापारी अब्दुला सेठ और उनके रिस्स्तेदार के बीच 5 लाख रुपये के लेन देन में बेइमानी का मुकदमा लड़ने के लिए गांधीजी दक्षिण अफ्रीका अब्दुला सेठ के बुलावे पर गये थे क्योंकि अब्दुला सेठ अनपढ़ थे और गुजराती के अलावा उनको किसी भाषा का ज्ञान नहीं था।अफ्रीका में मानवता के प्रति अत्याचार को रोकने के लिए उन्होंने अंग्रेज सरकार की नीतियों का विरोध किया था जो भारतीय गुलामों के साथ वहाँ किया जा रहा था।इसके कारण वहाँ के अंग्रेज़ उनसे नाराज थे।

24 वर्ष की उम्र में अपनी पत्नी तथा बच्चों के साथ स्टीमर द्वारा दूसरी बार अफ्रीका पहुँचने पर अंग्रेजो ने 3 दिन तक गाँधीजी को स्टीमर से उतरने नहीं दिया था।

परन्तु गाँधीजी वापस आने के लिए तैयार नहीं थे। पत्नी और बच्चों को अब्दुला सेठ सुरक्षित उतार ले गये लेकिन गाँधीजी का विरोध करने की लिए बंदरगाह पर अंग्रेजों का जमावड़ा हो चुका था। भीड़ से बचने के लिए वह शाम तक सीमा में रुके रहे। शाम के समय वह स्टीमर से उतर कर अब्दुला सेठ के घर चल दिये। रास्तें में भीड़ ने उनके उपर अंडा - पत्थर तथा लात से प्रहार किया जिसके कारण वह जमीन पर गिरे पड़े। उसी समय शहर के पुलिस अधीक्षक की पत्नी श्रीमती एलेक्जेंडर ने गाँधी को पहचाना और अपने पति को सूचित कर गाँधी जी को बचाया।

गाँधी जी पारसी व्यक्ति रुस्तमजी के घर में शरण लिये थे। अंग्रेजों की भीड़ ने पारसी के घर को चारों ओर से घेर कर जलाने की योजना बनाई । उस समय

उस मकान में 20 भारतीय थे। पुलिस अधीक्षक मिस्टर एलेक्जेंडर ने बेकाबू भीड़ को बेवकूफ बनाकर गाँधीजी को पुलिस की वर्दी पहनाई और पीछे की खिड़की के बाहर भेज दिया। उस समय क्रोधित भीड़ मोहनदास की हत्या करना चाहती थी। पुलिस अधीक्षक ने भीड़ को आश्वासन दिया था कि मैं गाँधी को आपको सौंप दूँगा - आप लोग पेड़ पर फाँसी दे देना। इतनी बड़ी घटना के बाद भी गाँधीजी ने अपनी सुरक्षा के लिए पुलिस थाना में रिपोर्ट नहीं लिखवाया। अफ्रीका में रहते हुए एक्का गाड़ी में आगे बैठने पर एक अंग्रेज ने गाँधीजी की पिटाई किया था और उनके बचाव में कुछ अंग्रेज़ ही आये थे। गांधी जी ने फिर भी कोई प्रतीकार नहीं किया।

ईसाई धर्म का प्रचार अफ्रीका के विभिन्न क्षेत्रों में गुलामी के दौरान किया गया। अनेक धर्म प्रचारकों ने गाँधी जी कहा कि यदि आप ईसाई धर्म स्वीकार कर लें तो सरकार आपकी सभी माँगों को मान लेगी। गांधी जी का धर्म परिवर्तन करने के लिए दो पादरी नियुक्त किए गए थे लेकिन गाँधीजी ने अपने अध्ययन तथा तर्क से उनको निरुत्तर कर दिया।

यहाँ आने पर काग्रेस पार्टी को पहली बार सामान्य जनता की पार्टी बनाया और जन आंदोलन खड़ा किया। उस समय भारतीय राजनीतिक परिदृश्य पर राजनीति मुख्य रुप से उच्च वर्ग और शिक्षित मध्यम वर्ग तक सीमित थी। इसके विपरीत ब्रिटिश शासन के खिलाफ गुप्त रुप से क्रांतिकारी आंदोलन जारी थी जिसको जन समर्थन प्राप्त नहीं था।

महात्माजी का बड़ा योगदान भारतीय जनता में अहिंसा का नैतिक बल प्रदान करना है। जिससे भय से मुक्ति मिलती है। निर्भय व्यक्ति ही हिंसक शासन का अहिंसक ढंग से विरोध कर सकता है। इस नैतिक बल ने गाँधीजी को विराट व्यक्तित्व प्रदान किया। उनकी मृत्य पर प्रसिद्ध वैज्ञानिक तथा उनके चिंतक अल्बर्ट आईस्टाइन ने कहा था कि **"आने वाली पीढ़ियाँ विश्वास नही कर पायेगी कि इस पृथ्वी पर कोई गाँधी जैसा मनुष्य भी चला करता था"**।

मोहनदास के दिल में बैचेनी थी कि वकालत कहाँ करूँ, कैसे निर्वाह करूंगा, लोगों के सामने कैसे बोलूगा - परिवार सदस्यों को मोहन से काफी उम्मीदें क्योंकि परिवार में कोई कमाने वाला व्यक्ति नहीं था। मोहनदास गांधी स्माल काजेज़ कोर्ट मेट्रो सिनेमा से पहले वाली कोर्ट में वकालत करने गये। पहले मुवक्किल से 30 रुपया फीस लिये थे लेकिन जब गवाह से जिरह करने खड़ा हुए तो बुरी तरह घबराकर काँपने लगे और मुवक्किल की फीस वापस कर दिया।

अपना भविष्य अंधकारमय देखकर मुम्बई के एक स्कूल में 75 रू. मासिक नौकरी के लिए कोशिश किये और नाकामयाब होने पर राजकोट लौट गये। वहाँ वकालत न कर अर्जी दावे लिखकर तीन सौ रुपये प्रतिमाह कमाने लगे। कचहरी के काम से डरबन प्रिटोरिया से जाते समय टीसी ने प्रथम श्रेणी का टिकट होते हुए भी ट्रेन से जबर्दस्ती उतार दिया था। उपरोक्त दो घटनाओं के बाद गाँधी जी ने आत्मनिरीक्षण किया और स्वयं का मूल्यांकन करना शुरू किया।

भारतीयों पर अन्याय देखकर मोहनदास उनके लिए पहली बार ट्रासवाल में एक सभा का आयोजन किया। नेटाल प्रांत की सरकार भारतीयों का मतदान अधिकार छीनने के लिए विधेयक लाना चाहती थी जिसके प्रतिकार के लिए गाँधीजी ने ब्रिटेन भारत और नेटाल के प्रमुख व्यक्तियों को चिट्ठी लिखी थी।

अफ्रीका में गुलामों को राजमार्गो पर चलने, गाड़ी में दुसरे दर्जे का टिकट खरीदने की मनाई थी। वहाँ के होटलो में भारतीयों को प्रवेश वर्जित था। भारतीयों के बचाव के लिए मोहनदास ने एक स्थायी संगठन बनाया और उनका नाम दादाभाई नौरोजी के सम्मान में नेटाल इंडियन कांग्रेस रखा। संगठन का चंदा जमा करने का कार्य खुद करते थे। भारत से समर्थन प्राप्त करने के लिए मोहनदास गांधीजी सन 1896 में कुछ दिनों के लिए भारत आये थे। 10 जनवरी 1897 को वापस नेटाल पहुचने पर यूरोपियों की एक उग्र भीड़ से मुक़ाबला किया था।

सन 1899 में बोअर युद्ध में गाँधीजी ने घायल अंग्रेजों की सहायता 1100 भारतीय लोगों की सहायता से किया था फिर भी अंग्रेजों ने गाँधीजी की बात नहीं मानी थी।

जनवरी सन 1908 में पंजीकरण कानून तोड़ने के अपराध में वह गिरफ्तार कर लिये गये और एक माह बाद सरकार से समझौता होने पर जेल से छोड़े गये थे। जेल से छूटने पर कुछ भारतीयों को अंग्रजो ने समझाया कि मोहनदास ने इनके साथ विश्वासघात किया है। एक भारतीय मुस्लिम ने बहककर मोहनदास गांधी पर लाठी से हमला कर दिया जिससे वह गम्भीर रुप से घायल हो गये लेकिन आरोपी के विरुद्ध कोई मुकदमा दायर नहीं किया।

जोहान्सवर्ग से 55 मील दूर 1100 एकड़ जमीन भारतीय लोगों से चंदा जुटाकर खरीदी और उसे टलस्टाय फार्म नाम देकर रहने लायक एक बस्ती स्थापित किया। यह स्थान शहर से 55 मील दूर जंगल में था। मोहनदास प्रतिदिन 40 मील पैदल चलकर शहर पहुँचते थे।

सन 1912 में गाँधी जी के राजनीतिक गुरु श्री गोपालकृष्ण गोखले उनके आग्रह पर दक्षिण अफ्रीका गये थे।

दक्षिण अफ्रीका में भारतीयों की सभी यथा सम्भव समस्याओं का मानवीय स्तर पर समाधान कर मोहनदास गांधीजी सन 1914 में अफ्रीका छोड़ दिया और एक कुशल वकील तथा राजनेता के रुप में बाद में स्वयं को स्थापित कर लिया था।

प्रिटोरिया के क्वेकर मित्र उन्हें ईसाई तो न बना सके परन्तु धर्म सम्बंधी अध्ययन की उनकी स्वाभाविक जिज्ञासा अवश्य ही तेज हो गई। उन्होंने अनेक धर्मो की पुस्तकों का गहरा अध्ययन किया। इनमें से एक पुस्तक टालस्टोय की, द किंगडम ऑफ़ गाड इज वीदीन यू (स्वर्ग आपके ह्रदय में है), इसे पढ़कर गांधीजी आत्ममुग्ध हो गये।

09 जनवरी 1915 को गाँधी जी बम्बई के अपोलो बंदगाह पर उतरे थे और उनका राष्ट्रीय वीर जैसा स्वागत हुआ था। बम्बई के सम्पन्न एवं धनी पारसी व्यक्ति जहाँगीर पेटीट के भव्य भवन में शानदार स्वागत समारोह किया गया था।

तत्कालीन भारत सरकार ने उनको क़ैसर ए. हिन्द का स्वर्ण पदक दिया था। वर्ष 1915 में ही उनके राजनीतिक गुरु श्री गोपालकृष्ण गोखले का निधन हो गया। उस समय गांधीजी शांतिनिकेतन बंगाल गये थे।

तार पाकर वापस आये और अपने गुरु का सम्मान करते हुए एक साल तक नंगे पैर रहे।

वर्ष 1917 में गाँधी जी ने अफ्रीका से अपने साथ आये व्यक्तियों तथा बच्चों के लिए अहमदाबाद के निकट कोचरब गाँव में एक आश्रम स्थापित किया। यह स्थान नदी के किनारे जंगली भूमि पर था जहाँ कोई रहने लायक सुविधा नहीं थी।

उस समय राजनीतिक रुप से भारत में केवल दो व्यक्ति राष्ट्रीय मंच पर छाए हुए थे।

1. ऐनी बेसेन्ट   2. लोकमान्य तिलक।

सन 1919 तक कांग्रेस पार्टी भारत के उच्च एवं मध्यम वर्ग की पार्टी थी। इसके सदस्य केवल स्नातक व्यक्ति होते थे जो एक रुपया सदस्यता शुल्क भरकर कांग्रेस के सदस्य बनते थे। सामान्य जनता से कांग्रेस का कोई सरोकार नहीं था। गाँधीजी इस कमी को जानते थे कि बिना जन भागीदारी के कोई आंदोलन नहीं चलाया जा सकता है। उन्होंने कांग्रेस की सदस्यता शुल्क 25 पैसा कर दिया और शिक्षा की कोई शर्त नहीं रखी। इसके कारण अधिकतर लोग कांग्रेस के सदस्य बने।

पहले कांग्रेस के प्रमुख नेता साल में एक बार किसी शहर में बैठकर ब्रिटिश सत्ता का विरोध करते थे और शांति से अपने काम में लगे रहते थे। आम जनता की भागीदारी कांग्रेस में पहले शून्य थी। गांधी जी के अथक प्रयास से कांग्रेस पार्टी संगठित हुई और सबल होने पर अंग्रेजों के सामने खड़ा होने लायक बनी थी।

जेल में रहते हुए मोहनदास गाँधी ने अनेक विषयों की पुस्तकों का गहन अध्ययन किया और कई भाषाओं में हस्ताक्षर करना सीखा। 11 भाषाओं में गाँधीजी का हस्ताक्षर निम्नलिखित हैं।

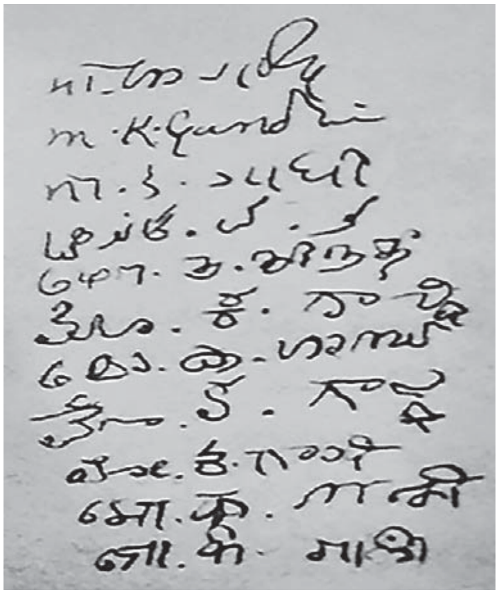

वर्ष 1937 के आरम्भ में देश में विधानसभाओं के चुनाव हुए थे। कुल 11 प्रातों में से 6 प्रान्तो में कांग्रेस ने सरकार का गठन किया था। चुनाव पश्चात मुस्लिम लीग पार्टी ने धार्मिक आधार पर राजनीति करने की योजना बनाई और गाँधी जी को मुसलमानों का दुश्मन नंबर एक घोषित किया गया। जुलाई 1946 में लार्ड वावेल ने जवाहरलाल नेहरू को सरकार बनाने के लिए आमंत्रित किया। नेहरू मुस्लिम लीग को सरकार में शामिल करना चाहते थे लेकिन जिन्ना ने इनकार कर दिया और 16 अगस्त को मुस्लिम लीग ने सीधी कार्रवाई की घोषणा कर दिया।

उस दिन कलकत्ता में भीषण खून ख़राबा और हत्या हुई। इसके प्रतिक्रिया स्वरुप पूर्वी बंगाल, बिहार और पंजाब में सांप्रदायिक दंगे हुए। मार्च में बिहार के कुछ जिलों में पूर्वी बंगाल के दंगो की प्रतिकिया स्वरुप सांप्रदायिक दंगे हुए। गाँधीजी ने इन दंगों को शांत कराया और बदला लेने की प्रकृति को रोका। दंगों के कारण देश में अराजकता की स्थिति बन गयी थी। 03 जून 1947 को योजना बनी कि 15 अगस्त 1947 को दो राष्ट्र की घोषणा की जाय। गाँधी जी बटवारा के खिलाफ थे। फिर भी बंटवारा हो गया जिसके कारण सरकारी सेवा में लगे कर्मचारियों में भी भेदभाव हो गया। अगस्त महीने के अंत तक पुलिस और फौज पर सांप्रदायिक तत्व हावी हो गये। जिसके कारण हिन्दूओं का पश्चिमी पंजाब में और मुसलमानों को पूर्वी पंजाब में रहना असम्भव हो गया था। पश्चिमी पाकिस्तान से आये हिन्दू शरणार्थी थे तथा दिल्ली से भागने वाले मुसलमान सीमा पर जाने की प्रतीक्षा कर रहे थे। 20 जनवरी 1948 को पश्चिमी पंजाब के शरणार्थी युवक मदनलाल ने बिरला भवन में गाँधीजी पर बम से हमला किया था लेकिन वह बच गए थे।

षडयंत्रकारी दल के सदस्यों का विचार था कि गाँधीजी हिन्दू धर्म के लिए भीतरी खतरा हैं और इस्लाम बाहरी खतरा है। मदनलाल के बाद दूसरा षड्यंत्रकारी नथुराम गोड़से 30 जनवरी 1948 को गाँधीजी की प्रार्थना सभा में गया और पिस्तौल से अचानक हमला कर दिया जिससे गाँधीजी का देहान्त हो गया। इसके साथ ही एक युग का अंत हो गया।

गाँधीजी जीवन भर समाज उत्थान, छुआछुत, अशिक्षा दूर करना, स्वच्छता को बढ़ावा देना, सर्व सुलभ शिक्षा तथा समानता पर जोर दिये थे। ऐसे महापुरुष को शत-शत प्रणाम।

ऐसा दो वरदान प्रभु

प्रकाश चन्द्र झा
उ म प्र (जनि-कार्य)

हे जगत के रचनाकार,
सकल विश्व के पालनहार,
सुखमय हो जाये संसार, ऐसा दो वरदान प्रभु ।।1।।

कितनी सुन्दर है तेरी रचना, सागर, नदियाँ, पर्वत, झरना ।
जीव, जंतु, पशु- पक्षी प्यारे, जंगल बाग-बगीचे न्यारे ।
सब कुछ हो रहा है दूषित,
जल-थल-नभ मंडल प्रदूषित,
होता मानव मन भी कलुषित,
दो सबको सज्ञान प्रभु, ऐसा दो वरदान प्रभु ।।2।।

कागज पर खिंची लकीरों से, देश-प्रांत बँट जाता है ।
मानव-मानव के शत्रु बन जाते, भूमि लहू से रंग जाता है ।
मंडरा रहे हैं युद्ध के बादल,
अहंकार से दुनियाँ पागल,
कांप रहा धरती माँ का आंचल,
कर सबका कल्याण प्रभु, ऐसा दो वरदान प्रभु ।।3।।

बारूद के ढेर पर है जग बैठा, न जाने कब हो जाए विस्फोट ।
मानव विध्वंशक हथियार हैं इतने, पृथ्वी भी खा जाए चोट ।
जाति-धर्म की राजनीति से,
छल-छद्म की कूटनीति से,
लोभ मोह की अधम नीति से,
सुधर जाएँ इन्सान प्रभु, ऐसा दो वरदान प्रभु ।।4।।

हे जगत के रचनाकार,
सकल विश्व के पालनहार,
सुखमय हो जाये संसार, ऐसा दो वरदान प्रभु ।।

पी17ए परियोजना

सौमित्र मिश्रा
प्र (पी17ए)

माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड भारत सरकार का अग्रणी डीपीएसयू शिपयार्ड है जो वर्तमान समय में भारतीय नौसेना तथा निर्यात बाजार दोनों के लिए प्रतिष्ठित परियोजनाओं पर कार्य कर रहा है। एमडीएल भारतीय नौसेना के लिए स्टील्थ युद्धपोत विध्वंसक और पनडुब्बियों का निर्माण कर रहा है।

नौसेना पोतों और वाणिज्यिक पोतों की निरंतर बढ़ती मांग को पूरा करने के साथ कठोर गुणवत्ता एवं सुपुर्दगी कार्यक्रम को ध्यान में रखते हुए एमडीएल ने बड़ी मात्रा में कार्य का आउटसोर्सिंग किया है।

एमडीएल के पास भरोसे मंद कार्यों की आउटसोर्सिंग के लिए स्पष्ट रूप से लिखित और पारदर्शी क्रय प्रक्रिया है जो स्थापित ठेकेदारों की सक्रिय सहायता से पूरा की जाती है। तथापि एमडीएल इसके आगे अपने विस्तृत विक्रेता आधार को विस्तारित एवं स्थापित करने की अपेक्षा करता है। विशेष रूप से संरक्षा पहलूओं पर एमडीएल अपने कार्मिकों को प्रशिक्षण देने की उचित व्यवस्था विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम के माध्यम से करेगा।

माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड (एमडीएल) शिपयार्ड भारत के रक्षा मंत्रालय के अंतर्गत है। इसका मुख्य उद्देश्य युद्धपोत एवं पनडुब्बी का निर्माण है। एमडीएल भारत सरकार द्वारा संचालित

नीलगिरी जलावतरण के समय रक्षामंत्री श्री राजनाथ सिंह एवं निदेशकगण

स्टार्ट अप इंडिया पहल का एक अंग बनने के लिए प्रतिबद्ध है जिससे उद्यमशीलता को प्रोत्साहित किया जाय और नवीनता को विकसित किया जाय।

श्रीमती सावित्री सिंह (धर्मपत्नी श्री राजनाथ सिंह) द्वारा जलावतरण के समय दाहिने से नौसेना प्रमुख एडमिरल सुनील लांबा, रक्षा मंत्री श्री राजनाथ सिंह, एमडीएल के सीएमडी कमोडोर राकेश आनन्द और श्रीमती सीमा आनन्द।

पी17ए स्टील्थ युद्धपोत का रूपांकन भारतीय नौसेना के इन हाउस रूपांकन संस्थान द्वारा किया गया है जो भारतीय नौसेना की दक्षता स्टेट ऑफ आर्ट नेवल काम्बेटेंट का प्रमाण विश्व में सर्वोत्तम की तुलना में है। यह दो गैस टर्बाइन और दो डीजल इंजीन द्वारा संचालित है। इसका रूपांकन इस प्रकार किया गया है कि यह 28 नॉट की गति से चल सकता है। इसकी विस्थापन क्षमता लगभग 6670 टन है। इस स्टील्थ युद्धपोत में स्टेट ऑफ आर्ट वेपन,सेंसर, एक अग्रिम कार्यवाई सुरक्षा प्रणाली, एक एकीकृत प्लेटफर्म, प्रबंधन प्रणाली, विश्व श्रेणी का माड्डुलर लिविंग स्पेस और परिष्कृत ऊर्जा सुविधाएं शामिल हैं। यह सुपरसोनिक सरफेस टु सरफेस मिसाइल सिस्टम से सुसज्जित होगी। पोत की एयर डिफेंस क्षमता इस तरह रूपांतरित की गई है कि वह दुश्मन के एयर क्राफ्ट एंटी शिप मिसाइल के खतरों का मुक़ाबला कर सके। यह वर्टिकल लॉन्च और लंबी दूरी की मिसाइल सिस्टम का चक्कर लगाती रहेगी। इसमें एयर मिस्टर रेपिड फायरगन उपलब्ध होगी जो पोत को नजदीकी रक्षा क्षमता प्रदान करेंगे जबकि मिस्टर गन की सहायता से प्रभावशाली नौसेना गनफायर सपोर्ट प्रदान करेगी। पोत की वायु रक्षा क्षमता को दुश्मन एयर क्राफ्ट के खतरे का मुक़ाबला करने के लिए रूपांतरित किया गया है और एंटी शिपक्रूज मिसाइल एयर मिसाइल प्रणाली के वर्टिकल लॉन्च और लाँग रेंज सरफेस के चारों ओर चक्कर लगाएगी। दो 30 एमएम रैपिडफायर गन इस पोत में रक्षा क्षमता के साथ स्थापित की गई है। मिस्टर गन प्रभावी नौसेना गन सपोर्ट के लिए लगाया गया है। स्वदेशी रूप से विकसित दो ट्यूब टारपीडो लॉचर और राकेट लॉचर इस पोत की एंटीसबमैरिन क्षमता में वृद्धि करेगी।

वर्ष 2018-19 के दौरान एमडीएल का अब तक का उच्चतम टर्नओवर रुपये 4600 करोड़ से अधिक है। यह पहली बार है कि एमडीएल ने रुपये 4600 करोड़ का टर्नओवर पार किया है।

एमडीएल दोनों बुनियादी और तकनीकी विकास बढ़ाने के लिए तैयार है। हमने न्हावा शिपयार्ड का हिस्सा प्राप्त किया है जो 11 मीटर गहरे डीपवॉटर चैनेल पर स्थित है और उसे ग्रीन फील्ड शिपयार्ड में रूपांतरित किया जाएगा। 11.5 एकड़ एमडीएल से सटी हुई मुंबई पोर्टट्रस्ट की भूमि अधिग्रहण का विषय भी प्रगति पर है। हम स्वयं को प्रौद्योगिकी रूप से उन्नत करने के लिए भी तैयार हैं जिससे कि शीघ्र ही शिपयार्ड में उद्योग मानक 4.0 का अनुपालन कर सकते हैं। शिपयार्ड के सभी कर्मचारियों में नव उन्मेष संस्कृति का विकास किया गया है। यह पहली बार है कि हमने 50 पेटेंट के लिए फ़ाइल किया है जो हमारे अधिकारियों एवं कामगारों द्वारा किए गए इन नवीन कार्यों पर आधारित हैं।

एमडीएल को प्राप्त पुरस्कार एवं सम्मान

सिमनलाल आर्य
वरिष्ठ लिपिक

पुरस्कार प्राधिकरणः स्कोच

पुरस्कारः कम्युनिटी आउटरिच एवं डेवेलपमेंट (सम्पूर्ण विकास के लिए खेरड़े ग्राम पंचायत को गोद लेना)

भारत के उच्च सीएसआर परियोजना में अव्वल होने के लिए नई दिल्ली में स्कोच सी एसआर सिल्वर अवार्ड एवं ऑर्डर ऑफ मेरिट प्राप्त किया।

पुरस्कार प्राधिकरणः टॉलिक

पुरस्कारः दिनांक 21 जुलाई 2018 को मुंबई टॉलिक द्वारा "जलतरंग" को प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ।

पुरस्कार प्राधिकरण: स्कोप

पुरस्कार: 3 अगस्त 2019 दिल्ली में राजभाषा का सर्वश्रेष्ठ "गृहपत्रिका" का स्कोप पुरस्कार प्राप्त

पुरस्कार प्राधिकरण: एनआईपीएम

पुरस्कार: मानव संसाधन में बेस्ट प्रेक्टिसेस के लिए पुणे में 28 सितम्बर 2018 को एनएटीसीओएन 2018 एनआईपीएम अवार्ड (सर्टिफिकेट ऑफ मेरिट - 3रा स्थान) प्राप्त किया।

पुरस्कार प्राधिकरण: गवर्नेंस नाउ

पुरस्कार: 17 जनवरी 2019 को नई दिल्ली के इंपिरियल में गवर्नेंस नाउ का "6वां पीएसयू अवार्ड 2019 सीएसआर के लिए" प्राप्त हुआ।

पुरस्कार प्राधिकरण: ग्रीनटेक सीएसआर अवार्ड

पुरस्कार: 26 फरवरी 2019 पणजी, गोवा में 6वां वार्षिक ग्रीनटेक सीएसआर सिल्वर अवार्ड 2018 प्राप्त हुआ।

(देश के विभिन्न भागों में 09 क्षेत्रीय कैंसर हॉस्पिटल में कैंसर रोगियों को परामर्श और सहयोग हेतु)

पुरस्कार प्राधिकरण: गोल्डन पीकॉक अवार्ड 2019

पुरस्कार: 05 मार्च को दुबई में गोल्डन पीकॉक इनोवेटिव प्रोडक्ट / सर्विस अवार्ड 2019 इनोवेटिव प्रोडक्ट / सर्विस के लिए दिया गया।

पुरस्कार प्राधिकरण: इंडिया सीएसआर कम्यूनिटी

पुरस्कार: 01 अप्रैल 2019 को नई दिल्ली में इंडिया सीएसआर कम्यूनिटी अवार्ड 2019 प्राप्त किया।

(लक्ष्मी चैरिटेबल ट्रस्ट, पनवेल द्वारा रायगढ़ और ठाणे जिला के 11000 रोगियों का मुफ्त मोतियाबिंद सर्जरी के लिए प्राप्त)

पुरस्कार प्राधिकरण: आशीर्वाद

पुरस्कार: साहित्यिक संस्थान आशीर्वाद से राजभाषा कार्योन्वयन के लिए श्री कैसर खालीद-डीआईजी पोलीस, श्री विश्वनाथ सचदेव-नवनीत समाचार-पत्र के संपादक से पुरस्कार प्राप्त करते हुए श्री रामप्रीत यादव एवं पीडी सिद्दीकी, सहायक प्रबंधक (राजभाषा)

आयुष्मान भारत

जयन्तिका मुखर्जी
वरिष्ठ अनुवादक (राभा)

आयुष्मान भारत योजना भारत सरकार की योजना है इसका शुभारंभ राष्ट्रीय स्वास्थ्य नीति 2017 की अनुसंशा पर राष्ट्रीय स्वास्थ्य कवरेज के दृष्टिकोण को प्राप्त करने के लिए किया गया था। आयुष्मान भारत योजना को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 14 अप्रैल 2018 को बाबा साहब भीमराव अम्बेडकर की जयन्ती के दिन छत्तीसगढ़ के बीजापुर जिले से आरम्भ किया था। जबकि अंत्योदय के स्वप्नद्रष्टा पंडित दीनदयाल उपाध्याय की जन्मतिथि 25 सितंबर 2018 से प्रधानमंत्री मोदी द्वारा ही इस योजना को पूरे देश में लागू कर दिया गया है।

इसका पहल की रूपरेखा एसडीजी को प्राप्त करने के लिए लक्ष्य को तैयार किया गया है। इसकी निम्नलिखित प्रतिबद्धताएँ हैं जिसमें पहला है कि "कोई पीछे न छूटे"।

आयुष्मान भारत योजना या प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना, भारत सरकार की एक स्वास्थ्य योजना है, जिसका उद्देश्य आर्थिक रूप से कमजोर लोगों खासकर बीपीएल धारक को स्वास्थ्य बीमा मुहैया कराना है।

आयुष्मान भारत स्वास्थ्य सेवा की सूरदगी में सेकटोरल और सेगमेंटेड अप्रोच के माध्यम से व्यापक आवश्यकता आधारित स्वास्थ्य केयर सेवा प्रदान करने का प्रयास है। आयुष्मान भारत का उद्देश्य पूर्णरूप से स्वास्थ्य केयर सेवा प्रदान करने का प्रयास है। आयुष्मान भारत उद्देश्य पूर्ण रूप से स्वास्थ्य (निरोध, विकास और एंबुलेटरी केयर को शामिल कर) प्राथमिक, द्वितीय या तीसरे को अपनाता है। इसमें दो परस्पर संबन्धित घटकों का समावेश है जो निम्न हैः

- स्वास्थ्य और स्वास्थ्य केंद्र (एचडबल्यूसी)
- प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना (पीएम - जेएवाई)
- स्वास्थ्य और स्वास्थ्य केंद्र (एचडबल्यूसी)

फरवरी 2018 में भारत सरकार ने 150000 स्वास्थ्य और स्वस्थ केन्द्रों का निर्माण वर्तमान प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र और उपकेन्द्रों को रूपांतरित कर किया है। ये वर्तमान केंद्र व्यापक प्राथमिक स्वास्थ्य देखभाल केन्द्रों और आम लोगों के घर के समीप स्वास्थ्य देखभाल करेंगे जिसमें माता और जच्चा स्वास्थ्य दोनों सेवाएँ शामिल हैं और गैर सन्सर्गजन्य बीमारियों के साथ मुफ्त आवश्यक दवाएं तथा निदान सेवाएँ भी शामिल हैं।

इस योजना में दो प्रमुख तत्व शामिल हैंः- एक राष्ट्रीय स्वास्थ्य सुरक्षा योजना, जो अब आयुष्मान भारत योजना में तब्दील हो चुकी है, इसके अंतर्गत सरकार 10 करोड़ गरीब और कमजोर परिवारों के लगभग 50 करोड़ लाभार्थियों को शामिल कर रही है। यह हर परिवार के लिये, प्रति वर्ष 5 लाख रुपये मूल्य के माध्यमिक और तृतीय स्तर पर अस्पताल में देखभाल के लिये कवरेज प्रदान करती है।

इस योजना का लाभ पूरे देश में कहीं भी पैनल में शामिल निजी या सरकारी अस्पतालों में लिए जा सकते हैं। इस योजना के अंतर्गत आने वाले लाभार्थी को किसी भी सार्वजनिक या निजी अस्पताल से कैशलेस लाभ लेने की अनुमति है।

एस.ई.सी.सी डेटाबेस में दिए गए मानदंड के आधार पर यह तय किया गया है कि किसे इस योजना का लाभ उठाने का हक है। यह योजना लगभग 10.74 करोड़ गरीब, वंचित ग्रामीण परिवारों और विस्तृत शहरी कर्मचारियों के परिवारों को लक्षित कर रहा है। यह परिवार एस.ई.सी.सी. डेटाबेस, जिसमें गावों और शहरों दोनों के डेटा शामिल हैं, के मुताबिक तय होंगे। यह लगभग सभी माध्यमिक और कई तृतीय अस्पतालों को कवर करता है।

दूसरा, कल्याण केंद्र, इस योजना के तहत स्वास्थ्य और कल्याण केंद्र में प्रदान की जाने वाली निम्न सेवाओं को भी शामिल किया गया है: जैसे गर्भावस्था देखभाल और मातृ स्वास्थ्य सेवाएं, नवजात और शिशु स्वास्थ्य सेवाएं, जीर्ण संक्रामक रोग, गैर संक्रामक रोग, मानसिक बीमारी का प्रबंधन, दांतों की देखभाल, बुजुर्ग के लिए आपातकालीन चिकित्सा, आदि।

इस योजना के तहत अब तक 3.07 करोड़ लाभार्थियों को पीएम-जेएवाई का ई-कार्ड जारी किया गया है। इसी योजना के तहत 15,400 अस्पताल को भी जोड़ा गया है, जिनमें से 50 प्रतिशत निजी अस्पताल हैं। सच कहा जाए तो 'आयुष्मान भारत" योजना निजी अस्पतालों और बीमा कंपनियों के लिए संजीवनी बन चुकी है। प्रख्यात अमेरिकी उद्योगपति बिल गेट्स ने भी आयुष्मान भारत योजना की तारीफ की है।

सरकार इस योजना के माध्यम से गरीब, उपेक्षित परिवार और शहरी गरीब लोगों के परिवारों को स्वास्थ्य बीमा उपलब्ध कराना चाहती है। क्योंकि सामाजिक-आर्थिक जाति जनगणना 2011 के हिसाब से ग्रामीण इलाके के 8.03 करोड़ परिवार और शहरी इलाके के 2.33 करोड़ परिवार आयुष्मान भारत योजना के दायरे में आ रहे हैं। जबकि इस योजना के दायरे में लगभग 50 करोड़ लोग आएंगे।

आयुष्मान भारत योजना में हर परिवार को सालाना पांच लाख रुपये का मेडिकल इंश्योरेंस मिल रहा है। साल 2008 में यूपीए सरकार द्वारा शुरू राष्ट्रीय स्वास्थ्य बीमा योजना को भी आयुष्मान भारत योजना में मिला दिया गया है। मोदी सरकार ने महिला, बच्चे और सीनियर सिटीजन को इस योजना में खास तौर पर तरजीह दी है।

खास बात यह कि आयुष्मान भारत योजना में शामिल होने के लिए परिवार के आकार और उम्र का कोई बंधन नहीं है। सरकारी अस्पताल और पैनल में शामिल अस्पताल में आयुष्मान भारत योजना के लाभार्थियों का कैशलेश और पपेरलेस इलाज हो सकेगा।

एसईसीसी के आकड़ों के हिसाब से आयुष्मान भारत योजना में लोगों को मेडिकल इंश्योरेंस मिल रहा है। एसईसीसी के आकड़ों के हिसाब से ग्रामीण इलाके की आबादी में डी-1, डी-2, डी-3, डी-4, डी-5 और डी-7 कैटेगरी के लोग आयुष्मान भारत योजना में शामिल किये गए हैं। वहीं, शहरी इलाके में 11 पूर्व निर्धारित पेशे व कामकाज के हिसाब से लोग आयुष्मान भारत योजना में शामिल हो सकते हैं। राज्यों में राष्ट्रीय स्वास्थ्य बीमा योजना में पहले से शामिल लोग खुद ही आयुष्मान भारत योजना में शामिल हो गए हैं।

आयुष्मान भारत योजना के लिए योग्यता

ग्रामीण

आयुष्मान भारत योजना में शामिल होने के लिए मोटे तौर पर ग्रामीण इलाके में कच्चा मकान होना चाहिए, परिवार में किसी वयस्क (16-59 साल) का नहीं होना, परिवार की मुखिया महिला हो, परिवार में कोई दिव्यांग हो, अनुसूचित जाति और जनजाति से हों और भूमिहीन व्यक्ति व दिहाड़ी मजदूर हों। इसके अलावा, ग्रामीण इलाके के बेघर व्यक्ति, निराश्रित, दान या भीख मांगने वाले, आदिवासी और क़ानूनी रूप से मुक्त बंधुआ आदि खुद आयुष्मान भारत योजना में शामिल हो जायेंगे।

शहरी

जबकि, शहरी इलाकों में भिखारी, कूड़ा बीनने वाले, घरेलू कामकाज करने वाले, रेहड़ी-पटरी दुकानदार, मोची, फेरी वाले, सड़क पर कामकाज करने वाले अन्य व्यक्ति, कंस्ट्रक्शन साईट पर काम करने वाले मजदूर, प्लंबर, राजमिस्त्री, मजदूर, पेंटर, वेल्डर, सिक्योरिटी गार्ड, कुली और भार ढोने वाले अन्य कामकाजी व्यक्ति स्वीपर, सफाई कर्मी, घरेलू काम करने वाले, हेंडीक्राफ्ट का करने वाले लोग, ड्राईवर, रिक्शा चालक, दुकान पर काम करने वाले लोग आदि आयुष्मान भारत योजना में शामिल किये जा रहे हैं।

आयुष्मान भारत योजना का लाभार्थी अस्पताल में एडमिट होने के लिए कोई चार्ज नहीं चुकाएगा। अस्पताल में दाखिल होने से पहले और बाद के खर्च भी कवर किये जायेंगे।

पैनल में शामिल हर अस्पताल में एक आयुष्मान मित्र होगा। वह मरीज की मदद करेगा और उसे अस्पताल की सुविधाएं दिलाने में मदद करेगा। अस्पताल में एक हेल्प-टेस्क भी होगा जो दस्तावे. ज चेक करने, स्कीम में नामांकन के लिए वेरिफिकेशन में मदद करेगा। आयुष्मान भारत योजना में शामिल व्यक्ति देश के किसी सरकारी या पैनल में शामिल निजी अस्पताल में इलाज करा सकेगा।

आयुष्मान भारत योजना में तकरीबन हर बीमारी के लिए चिकित्सा और अस्पताल में दाखिल होने का खर्च कवर है। इसमें 3 दिन पूर्व हास्पिटेलाइजेशन और 15 दिन हास्पिटेलाइजेशन पश्चात के खर्च जैसे डाएग्नोस्टिक और मेडिसिन शामिल हैं। स्वास्थ्य मंत्रालय ने आयुष्मान भारत योजना में 1354 पैकेज शामिल किये हैं। इसमें कोरोनरी बायपास, घुटना बदलना और स्टंट डालने जैसे इलाज शामिल हैं। आयुष्मान भारत योजना में इलाज का खर्च केंद्र सरकार की स्वास्थ्य योजना (सीजीएचएस) से 15-20 % कम है।

आयुष्मान भारत योजना का लाभ लेने के लिए कोई औपचारिक प्रक्रिया नहीं है। बस एक बार इसके योग्य होने पर आप सीधे इलाज करा सकते हैं। सरकार द्वारा चिन्हित परिवारों के लोग इस योजना में शामिल हो सकते हैं। केंद्र सरकार, सभी राज्य सरकार और इलाके की अन्य संबंधित एजेंसियों के साथ आयुष्मान भारत योजना के लिहाज से योग्य परिवार की जानकारी साझा करेगी। उसके बाद इन परिवारों को एक फैमिली आइडेंटिफिकेशन नंबर मिलेगा। लिस्ट में शामिल लोग ही आयुष्मान भारत योजना का लाभ उठा सकते हैं। जिन लोगों के पास 28 फरवरी 2018 तक राष्ट्रीय स्वास्थ्य बीमा योजना का कार्ड होगा, वे भी आयुष्मान भारत योजना का लाभ उठा सकते हैं।

सभी सरकारी अस्पताल में आयुष्मान भारत योजना के लाभार्थी इलाज करा सकते हैं। इसके साथ ही सरकार के पैनल में शामिल निजी अस्पताल में भी इस योजना के लाभार्थी इलाज करा सकते हैं। हां, पैनल में शामिल होने के लिए निजी अस्पताल में कम-से-कम 10 बेड और इसे बढ़ाने के क्षमता होनी चाहिए।

बता दें कि लाभार्थियों के हित में सरकार द्वारा आयुष्मान भारत योजना के लिए एक हेल्पलाइन नंबर 14555 जारी किया गया है, जिस पर आप कभी भी कॉल कर सकते हैं। इस पर आपको समस्त जानकारियां मुहैय्या कारवाई जाएंगी।

वापस मिली पांडुलिपि

प्रियंका गायकवाड
उप्र (मा.सं- अधिकारी)

इंग्लैंड के प्रसिद्ध कवि ओलिवर गोल्डस्मिथ को यूं तो अपने जीवन काल में ही काफी लोकप्रियता हासिल हो गई थी, लेकिन प्रसिद्धि पाने से पहले उन्हें भी कठिन संघर्ष के दौर से गुजरना पड़ा था। लंबे समय तक ऐसे हालात में रहे कि उनके पास खाने तक के पैसे नहीं होते थे। उन्हें मकान मालकिन को किराया दिए भी काफी समय गुजर जाता था। एक बार जब गोल्डस्मिथ कई महीनों तक किराया नहीं दे सके तो मकान मालिकन का धैर्य जवाब दे गया। गुस्से में उसने गोल्डस्मिथ की एक पांडुलिपि उठा ली और बोली, ‘यह पांडुलिपि मैं तुम्हें तभी दूंगी जब तुम मेरा किराया चुका दोगे और यदि तूम किराया नहीं चुका पाए तो यह पांडुलिपि आग की भेंट चढ़ जाएगी।“ गोल्डस्मिथ घबरा गए। उन्होंने उस पांडुलिपि को बड़ी मेहनत से तैयार किया था। स्थिति की गंभीरता को देखते हुए उन्होनें अपने मित्र डॉ. जॉनसन को बुलवाया।

डॉ. जॉनसन आए तो उन्होंने देखा कि मकान मालकिन गोल्डस्मिथ के सिर पर सवार है और बेचारे गोल्डस्मिथ नीचे सिर झुकाए खड़े हैं। उन्हें पूरा माजरा समझते देर नहीं लगी। उन्होंने तत्काल मकान मालकिन से क्षमा मांगी और गोल्डस्मिथ की तरफ से बकाया चुकाकर पांडुलिपि वापस ली। गोल्डस्मिथ पांडुलिपि वापस पाकर खिल उठे और डॉ. जॉनसन को गले लगाते हुए बोले, ‘तुम जैसा दोस्त सबको मिले।“ इसके बाद डॉ. जॉनसन अनेक प्रकाशकों के पास घूमे। वह चाहते थे कि यह पांडुलिपि जल्द से जल्द पुस्तक रूप में आ जाए। आखिर एक प्रकाशन ने उस पांडुलिपि को साठ पौंड में खरीद लिया। जब वह पांडुलिपि पुस्तक के रूप में प्रकाशित होकर आई तो जल्द ही बाजार में छा गई। वह पुस्तक थी ‘विकर ऑफ़ वेकफील्ड।“ आज यह उपन्यास न केवल गोल्डस्मिथ की महान कृतियों में गिना जाता है बल्कि विश्व साहित्य में काफी ऊँचा स्थान रखता है।

भाषा और विकास

श्री अशोक शेल्हाल्कर
अपर महाप्रबंधक, (आं.ले.)

भाषा किसी भी समाज और देश की बौद्धिक चिंतनशीलता एवं विचारधारा के अभिव्यक्ति का माध्यम है। जिसके कारण समाज का प्रत्येक व्यक्ति आपसी मेलजोल के अलावा विचारों का आदान-प्रदान करता है और अपनी विद्वता, साहित्यिक क्रियाशीलता, कर्मठता, नवोन्मेष को व्यक्त करता है।

प्रत्येक देश का व्यक्ति अपनी भाषा में सहजता से अपने मनोभाव अभिव्यक्त करता है। बिना भाषा के प्रत्येक व्यक्ति गूंगा है। वर्तमान भाषाओं का विकास करीब 3 हजार वर्षों के अथक परिश्रम का परिणाम है।

आज भारत में करीब 1362 बोलियां और 22 मान्य भाषाएँ हैं। स्वतंत्रता से पहले आक्रमणकारी शासकों की भाषाएँ इस देश में लागू करने की कोशिश अनेकों बार हुई हैं जिसमें से कुछ शासक कामयाब हुए और कुछ शासकों ने यहाँ की भाषाओं में ही अपनी शासन प्रक्रिया को जारी रखा। मुगल शासन काल के पहले दक्षिण भारत में खड़ी बोली हिन्दी का विकास आरंभ हो चुका था। इसके पहले 16वीं शताब्दी में गोस्वामी तुलसीदास ने अपनी रचनाएँ अवधी भाषा में लिखी। पश्चिमी उत्तरप्रदेश में ब्रज भाषा विकसित थी जिसमें प्रसिद्ध कवि सूरदास ने श्रीकृष्ण के बाल्यकाल का मार्मिक वर्णन ब्रजभाषा में किया। मुगल काल में फारसी लिपि का प्रयोग सरकारी विभागों में किया जाता था। अरबी और फारसी लिपि के जानकार लोगों को शासन द्वारा नौकरी प्रदान की जाती थी। स्वार्थवश शासन से जुड़े लोगों ने अपनी जीविका को स्थायी बनाने के लिए खड़ी बोली हिन्दी का विकास रोकने की कोशिश किया जिसके परिणामस्वरूप फारसी लिपि में उर्दू भाषा विकसित हो गई और सरकारी कार्य उर्दू में होने लगा। स्वतंत्रता पश्चात खड़ी बोली हिन्दी का रूप विकसित हुआ और सरकारी महकमों से उर्दू का स्थान हिन्दी भाषी राज्यों में हिन्दी ने ले लिया। मुगल शासन के पतन के पश्चात 16वीं शताब्दी में अग्रेज़ कोलकाता पहुंचे और ईस्ट इंडिया कंपनी की स्थापना किया। इसके लिए उन्होने वहाँ 6 गाँव खरीदे और वही रहकर व्यवसाय करने लगे। धीरे-धीरे उन्होने शासन पर पकड़ बना ली और शासन तंत्र अपने हाथ में ले लिया। सन् 1614 में उन्होने कुछ भारतीय हिंदुओं को ईसाई धर्म में परिवर्तित किया और ईस्ट इंडिया कंपनी की सेवा में रखकर उन्हें आगे ईसाई धर्म का प्रचार करने के लिए शिक्षा दिया। कंपनी कर्मचारियों के बच्चों को शिक्षा देने के लिए स्कूल खोले गए और उनका उपयोग ईसाई धर्म का प्रचार करने के लिए किया गया। भारतीय जनता के दो महत्वपूर्ण अंग थे- एक हिन्दू और दूसरा मुसलमान। दोनों को खुश करने के लिए सन् 1780 में गवर्नर जनरल वारेन हेस्टिंग्स ने कोलकत्ता मदरसा की स्थापना किया जो पूर्ण रूप से मुसलमानों के लिए था। इन्हें शिक्षित कर सरकारी सेवा में लेने की व्यवस्था थी। इसी तरह सन् 1791 में सर जोनाथन डंकन ने हिंदुओं के लिए बनारस संस्कृत कॉलेज की स्थापना किया। इस प्रकार दोनों समुदायों को खुश रखने का प्रयास सन् 1947 तक चलता रहा। बाद में इसका परिणाम देश के बटवारे के लिए जिम्मेदार हुआ।

6वीं और 7वीं सदी में ईसाई धर्म का प्रचार फ्रांस, इंग्लैंड और यूरोपीय देशों में हुआ। मूल रुप से वर्तमान यूरोप के सभी देश यूहदी धर्म को मानते थे और सामाजिक, राजनीतिक कारणों से दो नए धर्मों का उदय हुआ जिन्हें आज ईसाई और इस्लाम के नाम से जाना जाता है। जब रोमन साम्राज्य यूरोप में शक्तिशाली हुआ तो उसने यूरोप के सभी राज्यों को गुलाम बनाया और उनकी भाषाओं को नष्ट कर दिया। इंग्लैंड भी पहली शताब्दी से 4थी शताब्दी तक रोम का गुलाम था। रोमन शासकों ने इंग्लैंड की भाषा केल्टिक को समाप्त कर लैटिन भाषा लागू कराया था। रोमन लोगों के इटली जाने के बाद फ्रांस के शासकों की इंग्लैंड में भाषा फ्रेंच थी। अंग्रेजी बोलने वालों को गवार कहा जाता था और सभी सरकारी कार्य केवल फ्रेंच में ही होते थे। अपने देश में अपना

अपमान सहना लोगों को अच्छा नहीं लगता था इसलिए उन्होने सत्ता के विरुद्ध विद्रोह किया और फ्रेंच भाषा की हमेशा के लिए विदाई कर दी। अंग्रेजी भाषा को मजबूत और प्रभावशाली बनाने के लिए लैटिन ग्रीक, फ्रेंच तथा हिन्दी, उर्दू, अरबी, पुर्तगाली भाषाओं के शब्दों को अंग्रेजी में शामिल किया। आज भी प्रतिवर्ष करीब 300 हिन्दी के शब्द अंग्रेजी में शामिल किए जाते हैं। जैसे बाजार, सरदार, जंगल, चिन्दी, आदि। सत्ता पर पूर्ण रूप से कब्जा करने के बाद ब्रिटिश सरकार कोई ऐसा कदम नहीं उठाना चाहती थी जिसकी तीव्र प्रतिक्रिया हो। सन् 1773 में अंग्रेजों ने अमेरिका में दमनकारी नीति लागू किया था जिसके परिणामस्वरूप क्रांति का उदय हुआ और अमेरिका स्वतंत्र हो गया जिसके कारण अंग्रेजो को आर्थिक हानि उठानी पड़ी। ऐसा वह दुबारा भारत में नहीं करना चाहते थे। शासन तंत्र मजबूत करने के लिए स्थानीय लोगों पर अधिक विश्वास नहीं था इसलिए अंग्रेज़ अधिकारियों ने धर्म प्रचार का कार्य ईसाई मिशनरियों के जिम्मे दे दिया और गरीबों के बच्चों को पढ़ाने के लिए स्कूल खोले। गरीबों को लाचार देखकर या आर्थिक सहायता देकर उनको ईसाई धर्म में परिवर्तित करा लेते थे। इस कार्य के लिए अनेक मिशनरी कार्य कर रहे थे जिनको आर्थिक सहायता सरकार देती थी। भारतीय लोगों को शिक्षित करने के लिए अनेक स्कूल खोले गए थे। सेंट मेरी स्कूल मद्रास (1715) चैरिटी स्कूल मुंबई (1719) चैरिटी स्कूल कलकत्ता (1720) फ़ीमेल आरफन और मेल असाईलयम मद्रास (1787), इंग्लिश चैरिटी स्कूल तंजौर (1772) इंग्लिश चैरिटी स्कूल रामनाद तथा शिव गंगा (1785) थे। कुछ समय बाद ईसाई मिशनरियों ने स्कूलों के माध्यम से ईसाई धर्म का प्रचार आरंभ किया।वे लोगों को आर्थिक सहायता देते थे और चमत्कारी बातों का विश्वास दिलाते थे। धार्मिक मामलों में हस्तक्षेप के कारण सन् 1806 में भारतीय सैनिकों ने बेलूर में बगावत कर दिया। इसके पहल सन् 1802 में ईस्ट इंडिया कंपनी के सिपाहियों ने समुद्र पार करने के अपने कमांडर के आदेश को मानने से इंकार कर दिया था। सन् 1806 की बेलूर वाली घटना में अंग्रेजों ने भारतीय सिपाहियों को आदेश दिया था कि दाढ़ी मुड़वा कर स्मार्ट बनो और पगड़ी की जगह चमड़े की टोपी पहनो। अंग्रेज़ अफसर हिंदुओं के तिलक या पगड़ी या दाढ़ी मूँछ के धार्मिक महत्व को नहीं समझने के कारण इन्हें नौकरी छोड़ने का आदेश दे दिए थे।

भारतीय सिपाहियों ने सोचा कि कंपनी के अधिकारी हमारा धर्म छुड़वाकर हमें ईसाई बनाना चाहते हैं इसलिए बगावत आरंभ कर दिया जिसके परिणामस्वरूप बेलूर में उपस्थित 300 अंगेज़ अधिकारियों में से 200 अधिकारियों को मार डाला ।

18वीं शताब्दी के उतरार्ध में इंग्लैंड में मिशनरी का सेवा कार्य . जोर शोर से जारी था। इंग्लैंड में औद्योगिक क्रांति के बाद अमीर तथा गरीब की खाई बहुत बढ़ गई थी। सभी नागरिकों को शिक्षा उपलब्ध नहीं थी। सन् 1759 में डॉक्टर जॉनसन ने लिखा है कि "यूरोपियन जिस देश में भी गए केवल अपने लालच की पूर्ति के लिए भ्रष्टाचार फैलाने के लिए, अवैध रूप से राज्य हड़पने के लिए, और क्रूरता का काम, अपने उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए गए और किसी की भलाई करने नहीं गए थे।"

अंग्रेज़ों को सस्ते नौकर की जरूरत शासन चलाने के लिए थी। इसी उद्देश्य की पूरा करने के लिए हिन्दू तथा मुसलमान के कुलीन वर्ग को शिक्षा दी जाती थी और इसके लिए अनेक स्कूल बंगाल तथा अन्य प्रान्तों में खोले गए थे। सन् 1832 में लार्ड मैकाले ने देश भर का दौरा किया और ब्रिटिश सरकार को सलाह दिया कि कैसे इस देश के कुलीन वर्ग को गुलाम बनाया जा सकता है। इसी तरह का व्यापार रोमन तथा फ्रेंच लोगों ने इंग्लैंड को गुलाम बनाते समय किया था। सन् 1832 में धर्म प्रचारक एलेक्ज़ांडर डफ अपने उद्देश्य में सफल हुए। उन्होने बंगाल के ब्राह्मण कृष्णमोहन बनर्जी को ईसाई बनाया। इसके पश्चात महेश चन्द्र घोष, कैलाश चन्द्र मुखर्जी, प्यारे मोहन रुद्र, एसी मजूमदार, लालबिहारी डे, माइकल मधुसूदन दत्ता ईसाई बने। सन् 1844-45 में कुलीन ब्राह्मण परिवार के बच्चे स्कोटिश चर्च कॉलेज के विद्यार्थी थे। इनमें से दो विद्यार्थी प्रसन्न चन्द्र बनर्जी तथा ताराचंद बैनर्जी ईसाई बने। अंग्रेज़ों का विचार था कि कुलीन वर्ग के लोग ईसाई बनाए जाएंगे तो अन्य वर्ग के लोग पीछे-पीछे आ जाएंगे। वे अपने प्रयास में सफल हो गए।

नए ईसाई बने नौजवान गाय तथा सुवर का मांस खाने लगे और पश्चिमी सभ्यता में रमकर शराब पीते थे। सिगरेट का धुंआ उड़ाते हुए स्वच्छंद रूप से जीवन बिताने लगे जिसका दर्शन 1947 तक भारत में जारी था। स्वतंत्रता पश्चात सन् 1950 तक भारत में अंग्रेजी बोलने वाली का प्रतिशत 2.5 था जो 72 साल बाद 10% तक विशेष रूप से शहरों में पसरा है। देश में अंग्रेजी भाषा की शिक्षा प्रणाली देश के राजाओं, नवाबों, जमींदारों ने अपने बच्चों के हितों को ध्यान में रखकर लागू कराया था जो आज निरंतर बढ़ रही है। यह लोकहित में नहीं है क्योंकि सबके लिए अंग्रेजी की शिक्षा संभव नहीं है।

सार्वजनिक खरीद और संविदा / अनुबंध प्रबंधन से सम्बंधित मुद्दे

श्री विवेक मोरे
मुख्य प्रबन्धक (सतर्कता)

दूरस्थ और शत्रुतापूर्ण वातावरण में लक्ष्यों के निरंतर दबाव में काम करने के बावजूद, सतर्कता से एक प्रश्नावली का डर, तलवार की तरह हमेशा मँडराता रहता है।

सार्वजनिक खरीद को जनता के उपयोग और लाभ के लिए, सार्वजनिक धन का उपयोग करके, किसी बाहरी स्रोत से माल, सेवाओं या कार्यों के अधिग्रहण के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। सरकारों के लिए सतत विकास के उद्देश्य को कुशलतापूर्वक पूरा करना एक अनिवार्य दायित्व है।

यह वांछित है कि खरीदे गए सामान, सेवाएं या कार्य इस प्रकार हैं:

- जनता की जरूरतों को पूरा करने के लिए सर्वोत्तम संभव लागत (किफायती) पर खरीदे गए हो।
- उपयुक्त (उपयोगकर्ता के अनुकूल और स्थानीय आदतों और संस्कृति के अनुकूल)।
- गुणवत्ता (टिकाऊ और प्रयोग करने योग्य), मात्रा (कोई अधिशेष नहीं), समय (कोई विलंब नहीं) और स्थान (आसानी से पहुंच के दायरे में हो)।

भारत में सार्वजनिक खरीद सकल घरेलू उत्पाद का 25-30% हिस्सा है।

सार्वजनिक धन के महत्वपूर्ण प्रवाह के कारण, यह आवश्यक है:

- लाल फीताशाही को खत्म करना और कार्यक्षमता सुनिश्चित करना।
- उत्पादकता बढ़ाने के लिए निरंतरता और पारदर्शिता बनाए रखना।
- ठोस सार्वजनिक सेवा वितरण प्रणाली सुनिश्चित करना।
- पैसे की कीमत हेतु लागत प्रभावशीलता और मूल्य सुनिश्चित करना।
- सरकार में नागरिकों का भरोसा बनाए रखना।

भरोसे का नुकसान

लेकिन जब नागरिक अंततः जिन उत्पादों के लिए भुगतान करते हैं वे अनुचित या महंगे होते हैं, तो संगठनों और सरकारों में जनता के विश्वास को ठेस पहुँचती है।

- कोलकाता में जो फ्लाईओवर गिर गया वह दुर्भाग्यपूर्ण था।
- कुख्यात बीआरटी गलियारे का निर्माण और फिर दिल्ली में विघटित करना अनुचित था।
- दिल्ली में आयोजित कलमाड़ी के नेतृत्व वाली कॉमन वेल्थ गेम (सीडब्ल्यूजी) प्रक्रिया बहुत महंगी थी।

हमारी उम्मीदें हैं:

- सभी सार्वजनिक खरीद प्राधिकरण उनके सलाहकारों सहित संपूर्ण खरीद प्रक्रिया में पारदर्शिता, निष्पक्षता और ईमानदारी का उच्च दर्जा बनाए रखेंगे।
- उन्हें ईमानदार, विश्वसनीय, जिम्मेदार और उत्तरदायी माना जाएगा। वे खरीद नियमों के भीतर काम करेंगे ।
- वे धोखाधड़ी, बर्बादी और सार्वजनिक संसाधनों के दुरुपयोग से बचने का प्रयास करेंगे।

लेकिन हम पाते हैं:

- निजी स्वार्थ के लिए की गई अनियमितताएं गलत इरादों से की गई हैं।
- लापरवाही या उचित परिश्रम का अभाव।
- बाहरी प्रभाव या हस्तक्षेप।
- नियमों को पारित करने के लिए नकली आपात स्थिति।
- नियमों / दिशानिर्देशों की जानकारी का अभाव।

- विक्रेताओं, बोलीदाताओं, ठेकेदारों या उनके एजेंटों द्वारा अनैतिक व्यवसाय प्रथाओं का प्रयोग।

सीवीसी के अनुसार:

सार्वजनिक खरीद एक गतिविधि है जो भ्रष्टाचार के चपेट में आ सकती है,क्योंकि:

- अनुबंध प्रक्रिया के दौरान निजी विक्रेताओं के साथ सार्वजनिक खरीद में कार्यरत अधिकारियों का इंटरफ़ेस।
- सार्वजनिक खरीद में कार्यरत अधिकारियों द्वारा स्थिति और शक्ति का दुरुपयोग।
- सार्वजनिक खरीद में कार्यरत अधिकारियों द्वारा बुद्धि और भेदभाव का प्रयोग।
- पारदर्शी और निष्पक्ष सार्वजनिक खरीद नीति की अनुपलब्धता।
- एकाधिकार की उच्च सीमा लेकिन कम उत्तरदायित्व।

इसलिए सार्वजनिक खरीद नीति का होना आवश्यक है।

सार्वजनिक अधिप्राप्ति और संविदा प्रबंधन का उद्देश्य होना चाहिए :

- इंटरफेस और विचारशीलता को कम करके भ्रष्टाचार पर अंकुश लगाना।
- पारदर्शिता और उत्तरदायित्व लाना ।
- सहमति पर उद्धार सुनिश्चित करना।

मूल्यांकन/आंकलन की जरूरत है :

- प्रत्येक खरीद प्रक्रिया की आवश्यकता मूल्यांकन से शुरू होती है। आपको इस स्तर पर बहुत सावधान और सतर्क रहना होगा।
- आवश्यकता संगठन के समग्र उद्देश्य को बढ़ाने के लिए हो।
- आवश्यकता को दक्षता, उत्पादकता और लाभप्रदता में जोड़ने वाली हो।
- जरूरत जनता के स्थायी लाभ के लिए होनी चाहिए।

प्रबंधक - अपने आप से पूछे:

- क्या चाहिए मुझे ?
- मुझे क्यों चाहिए ?
- मुझे कितनी मात्रा में चाहिए ?
- मुझे कौन से विशेष विवरण (स्पेसिफिकेशन) के चाहिए ?
- कब मुझे इसकी आवश्यकता हो ?
- क्या हमारे पास पर्याप्त विक्रेता हैं जो मेरी आवश्यकताओं को डिजाइन और आपूर्ति कर सकते हैं ?

सीनियर मैनेजरों को पूछने की जरूरत है :

- क्या हमें वाकई इसकी जरूरत है ?
- यह संगठन की कैसे मदद करेगा ?
- क्या यह विक्रेता विशिष्ट है ?
- यह फिर से सुनिश्चित करें कि, जो जरुरत है वह किसी विशेष विक्रेता को लाभ पहुंचाने के हेतु आश्वस्त है कि नहीं ?

मूल्यांकन की जरूरत :

- किसी विशेष विक्रेता को लाभान्वित करने के लिए आवश्यकता को प्रेरित नहीं किया जाना चाहिए।
- तकनीकी मापदंड विक्रेता विशिष्ट नहीं होने चाहिए।
- विशेष विवरण (स्पेसिफिकेशन) निष्पक्ष होना चाहिए।
- इसे संगठन के लक्ष्यों और उद्देश्यों को पूरा करना चाहिए।
- यह उपयोगकर्ता के अनुकूल होना चाहिए तथा स्थानीय संस्कृति और परंपराओं को ध्यान में रखते हुए बनाई हुए हों।

मूल्य का अनुमान तैयार करना:

- यह एक महत्वपूर्ण गतिविधि है, लेकिन आमतौर पर सबसे अधिक उपेक्षित है। ज्यादातर सलाहकारों को बाहरी ठेका देकर मूल्य का अनुमान तैयार किया जाता है। संगठनों का विशेष रूप से, इसमें कोई सहयोग नहीं होता। परियोजना तथा कार्यस्थल का कोई दौरा या सर्वेक्षण नहीं किया जाता।
- यह बयाना राशि (ईएमडी)/सुरक्षित राशि/ठेव (सिक्यूरिटी डिपाजिट) को निर्देशित करने, पूर्व अर्हता के मानदंड तय करने, विक्रेताओं का चयन करने, काम का पुरस्कार, बजट तय करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है ।
- दोषपूर्ण अनुमानों के परिणाम विचलन, विवाद, लागत और समय से अधिक होते हैं।

कुछ महत्वपूर्ण वस्तुओं को कम करने या हटाने के लिए भी कभी-कभी अनुमान का निर्माण किया जाता है ताकि:

- स्वीकृत बजट के भीतर मूल्य रखा जाए।
- अपनी वित्तीय शक्तियों के अन्तर्गत योजना को लाया जाए।
- निर्धारित सीमा के भीतर कोई विशेष एक ठेकेदार को रखा जाए।
- जब अनुमानित मात्रा कई गुना बढ़ जाती है, तो संगठन प्रतिस्पर्धा का लाभ खो देता है और अनुबंध की विभिन्नता

परिच्छेद के अनुसार बाजार दरों के हिसाब से अतिरिक्त मात्रा और अतिरिक्त / प्रतिस्थापित आइटम के लिए भुगतान करना पड़ता है।

- एक बड़ा नुकसान यह भी है कि, आप एक अनुभवहीन और वित्तीय रूप से अक्षम ठेकेदार का चयन करते हैं, जो सही अनुमानित लागत के अनुसार वित्तीय और अनुभव मानदंड के योग्य नहीं होता।

गृह समनुदेशन/नियत कार्य :

- संगठन में आकलन की प्रणाली को मानकीकृत किया जाना चाहिए और सभी विक्रेताओं को ज्ञात होना चाहिए।
- उन मामलों की संख्या का पता करें जहां आरंभिक अंदाज मूल्य के अनुमान से 20% (+)/(-) की सीमा से अधिक/कम दर पर निविदाएं दी गई हैं।
- ऐसी विविधताओं के कारण का पता लगाएं।
- दरों का पुनरीक्षण करें तथा इसे अद्यतन करें।
- वित्तीय बोली खुलने के बाद यदि वह आरंभिक अंदाज मूल्य से अधिक हो तो ऐसी स्थिति में विशेष रूप से मूल्य का अनुमान तैयार करने की समीक्षा प्रणाली बनाए।

विशेष विवरण तथा विनिर्देशों और आवश्यकताओं का मसौदा तैयार करना:

विशिष्ट आवश्यकताओं का विवरण है।

- आवश्यकता को पूरी तरह से, स्पष्ट रूप से, तार्किक और स्पष्ट रूप से निर्धारित करें।
- विश्वसनीय और यथार्थवादी प्रस्ताव प्रस्तुत करने के लिए संभावित आपूर्तिकर्ताओं के लिए पर्याप्त जानकारी रखें।
- सुनिश्चित करें कि प्रभावी मूल्यांकन के लिए आवश्यक सभी जानकारी मांगी गई है और स्वीकृति मानदंड निर्धारित किए गए हैं।
- सभी संभावित आपूर्तिकर्ताओं को ऑफ़र देने के लिए उचित अवसर प्रदान करें।
- किसी भी आपूर्तिकर्ता के प्रति भेदभाव या पक्षपात नहीं करना चाहिए।

विशेष विवरण विनिर्देशों के सफल प्रारूपण एक खरीद पेशेवर की सबसे महत्वपूर्ण जिम्मेदारियों में से एक है।

विनिर्देश दस्तावेज की समीक्षा आवश्यक ज्ञान, अनुभव और अधिकृत व्यक्ति द्वारा की जानी चाहिए।

- विशेष विवरण बिना किसी अस्पष्टता के पूर्ण और सटीक होनी चाहिए।
- बहुत महत्वपूर्ण बात - यह बाजार से मिलने में सक्षम होनी चाहिए।
- इसमें किसी आपूर्तिकर्ता/बोलीदाता के प्रति भेदभाव या पक्षपात नहीं होना चाहिए।

पूर्व गुणवत्ता:

संगठन की व्यावसायिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए संभावित आपूर्तिकर्ताओं की उपयुक्तता का आकलन करने का यह सबसे प्रभावी तरीका है। यह आम तौर पर निविदाओं को आमंत्रित करने से पहले किया जाता है या वित्तीय आवरण खोलने से पहले एक घोषित मापदंड के संबंध में उपयुक्तता का मूल्यांकन किया जाता है।

आम तौर पर चयन मानदंड का दायरा तीन प्रमुख क्षेत्रों तक सीमित होता है:

- दिवालियेपन, गंभीर दुराचार और इसी तरह की पात्रता।
- आर्थिक और वित्तीय स्थिति।
- परियोजना के लिए क्षमता और क्षमता और समान कार्य/सेवाएं प्रदान करने में पूर्व इतिहास।

पूर्व अर्हता (पीक्यू) के उपर सीवीसी के दिशानिर्देश:

पूर्व अर्हता (प्रीक्वालिफिकेशन) की प्रक्रिया को सक्षम विक्रेताओं के चयन को सुनिश्चित करने के लिए अपनाया जाता है,जो गुणवत्ता और समय के निर्धारित मापदंडों के अन्तर्गत परिकल्पित कार्य तथा सेवा को निष्पादित कर सकते हैं और इसलिए पूर्व अर्हता मानदंड तदनुसार प्रारूप (डिजाइन) किए जाने चाहिए। यह विक्रेता विशिष्ट और सख्त/कठोर नहीं होने चाहिए। इसे भेदभाव को प्रोत्साहित नहीं करना चाहिए, बल्कि, यह निविदा प्रक्रिया में प्रतिस्पर्धा, पारदर्शिता और निष्पक्षता लाना चाहिए।

- टेंडर दस्तावेजों में पूर्वअर्हता, मूल्यांकन और स्वीकृति-मानदंडों को स्पष्ट रूप से अधिसूचित किया जाना चाहिए।
- कोई छूट/कोई विचलन के अलावा अधिसूचित मानदंड के अनुसार मूल्यांकन सख्ती से किया जाना चाहिए।

पूर्व अहर्ता (पीक्यू) में सतर्कता जोखिम:

- सीवीसी के सख्त दिशा-निर्देशों के कारण, निविदा प्रक्रिया के पश्चात,ठेका केवल एल 1 ठेकेदार/पूर्तिकर्ताओं को ही जाना चाहिए, जिसमें हेरफेर करने और धोखाधड़ी करने का नजरिया विक्रेताओं के पूर्व अहर्ता के ऊपर केंद्रित किया गया है।

- प्रतियोगिता को प्रतिबंधित करने या अनुकूल विक्रेता को शामिल करने के लिए पूर्व निर्धारित शर्तों को शिथिल करने के लिए पात्र एजेंसियों को अयोग्य घोषित करने के लिए अब कई संगठनों में प्रयास किए जा रहे हैं।
- यहां तक कि पूर्व अर्हता मानदंड,कार्य की आवश्यकता के बजाय, इष्ट समूह के परिचय पत्र को ध्यान में रखते हुए निर्धारित किये जाते हैं।
- कई मामलों में निविदाओं के आवाहन से पहले मूल्यांकन मानदंड भी तय नहीं किए जाते हैं और उन्हें घोषित नहीं किया जाता है। बोलीदाताओं को अंधेरे में रखा जाता है कि उनका मूल्यांकन कैसे किया जायेगा- विक्रेता का चयन करने के लिए बुद्धि का उपयोग किया जाता है।
- कुछ मामलों में हालांकि मूल्यांकन मानदंड तय किए जाते हैं लेकिन किसी विशेष बोली लगाने वाले के पक्ष में बोलियाँ प्राप्त होने के लिए उसमें शिथिलता दी जाती है।
- नियमों में किसी भी तरह के विवेकाधिकार (डिस्क्रीशन) की अनुमति नहीं होनी चाहिए।
- आम तौर पर पूर्व अर्हता मानदंड समान काम के अनुभव को निर्धारित करते हैं। यहां समान कार्य को कार्य की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए स्पष्ट रूप से परिभाषित करने की आवश्यकता है। यह कभी भी विक्रेता विशिष्ट नहीं होना चाहिए।

समान कार्य :

- यदि किसी कंपनी ने छह मंजिल तक की इमारत बनाई हो तो वह आठ मंजिलेवाली इमारत भी बना सकती है।
- यदि किसी कंपनी ने 7.5 किलोमीटर का सुरंग (टनल) बनाया हो, तो वह 7.6 किलोमीटर का सुरंग भी सकती है।
- इसके पीछे यह संकल्पना है कि, कंपनी को उस तरीके/किस्मके, आसपास के परिमाणसे मिलता-जुलता या निकटतम कार्य करने का अनुभव हो न कि वही मापदंड तथा परिमाण के जैसा अनुभव हो।
- हमने अक्सर यह देखा है कि ऐसेही कोई कच्चे तथा बेहूदा आधार पर कई बोलीदाताओं की बोली अस्वीकार की गई है ताकि विशिष्ट मापदंड तथा परिमाण को निर्धारित करके स्पर्धा को कम किया जाय या हटाया जाय।

निविदा की प्रक्रिया:

1. टेंडरिंग की प्रणाली/तरीका :

- खुली, प्रतिबंधित, नामांकन - स्पष्ट नीति हो।
- प्रतिबंधित प्रचार/विज्ञापन, एकल विक्रेता स्थिति न हो।

2. निविदा प्रक्रिया के दस्तावेज बनाना :

- सटीक और पूरी जानकारी, मानकीकृत करें।
- निविदा शर्तों / BOQ में कोई अस्पष्टता नहीं होनी चाहिए।

3. संविदा/अनुबंध का पुरस्कार:

- सबसे कम बोलीदाता और बोली राशि का निर्धारण किया हो।
- मूल वैधता अवधि के भीतर ही स्वीकार करें।

टेंडरिंग के तरीके:

बोलीदाताओं (बिडर्स) का आत्मविश्वास बनाए रखना चाहिए।

1. खुली निविदा :

- केवल पंजीकृत विक्रेता (एकल/दो लिफाफा)। (Single Bid/ Two Stage)
- पूर्व अहर्ता के साथ सभी विक्रेता (दो चरण-दो लिफाफा)। (Two Bid-Two Stage)

2. प्रतिबंधित निविदा :

- चयनित विक्रेताओं से ही केवल वित्तीय बोली।

3. नामांकन:

- निविदाओं को बुलाये बिना सीधे अनुबंध।

4. आरएफपी (तीन चरण में निविदा)

खुली और प्रतिबंधित निविदाएं:

जबकि खुली प्रतियोगिता खरीद बाजार में अप्रतिबंधित सार्वभौमिक पहुंच प्रदान करती है, प्रतिबंधित प्रतियोगिता, जो अत्यधिक विशिष्ट सेवाए तथा कार्य के लिए अपनाई जाती है, उसमें भ्रष्टाचार और सत्यनिष्ठा के जोखिम की संभावना है।

इसलिए निविदा की पद्धति का चयन करने के लिए और प्रतिस्पर्धी बोली के अपवादों के लिए भी नीति निर्धारित की जानी चाहिए। इस बात का ध्यान रखा जाना चाहिए कि इस तरह के अपवादों में भेदभाव और भ्रष्टाचार न हो।

अपवाद :

- एक निश्चित मानक जैसे कि विशिष्ट स्रोत या किसी विशेष प्रकार/ट्रेडमार्क/ब्रैंड या स्थिरता के आधार पर उत्पादन को निर्दिष्ट करके, पुष्टि न करने वाले उत्पादों को हटाया जाता है और प्रतियोगिता को सीमित कर दिया जाता है।

- प्रतिस्पर्धी बोली-प्रक्रिया को समाप्त करने के लिए अत्यावश्यकता या राष्ट्रीय सुरक्षा का हवाला दिया जाता है।
- जब भी प्रतिस्पर्धा प्रतिबंधित होती है, तो सत्यनिष्ठा/ईमानदारी/प्रामाणिकता की जोखिम अधिक होती है।

नामांकन :

नामांकन के आधार पर, निविदाए बुलाए बिना, काम तथा सेवा का पुरस्कार करने को प्रोत्साहित नहीं किया जाना चाहिए। प्रतियोगिता के अभाव में आप लागत प्रभावशीलता के बारे में निश्चित नहीं होंगे। इसके अलावा समान रूप के या उससे अधिक सक्षम विक्रेताओं को बराबर के अवसर न देनेका मौलिक अधिकारों का भी उल्लंघन होता है। सीवीसी केंद्र सरकार के अंतर्गत कार्यरत सार्वजनिक उपक्रम के लिए भी नामांकन के आधार पर काम के पुरस्कार को प्रोत्साहित नहीं करता है।

एकल निविदा स्थिति :

एकल निविदा स्थितियां प्रतिस्पर्धा की कमी को दर्शाती है और इसलिए ऐसी स्थितियों को संभालने के लिए प्रक्रिया निर्धारित की जानी चाहिए। हालांकि, दो या अधिक बोलियां होना वांछनीय है, लेकिन सीवीसी के नियमों के अंतर्गत, एकल टेंडर स्वीकार न करने को . खारिज नहीं किया है, बशर्ते कि उचित विज्ञापन करने के बाद नियत प्रक्रिया का पालन किया गया हो। हालांकि,एकल बोली प्रतिक्रिया में अनुबंध के पुरस्कार से पहले,उद्धृत मूल्य (quoted price) की देयता के बारे में अतिरिक्त सावधानी बरतनी चाहिए।

बोली दस्तावेज (1/3) :

बोली दस्तावेजों का मूल उद्देश्य अनिश्चितता को कम करना और खरीददार और विक्रेता की समझ में स्पष्टता लाना है। सभी बोलीदाताओं को इस बारे में स्पष्ट होना चाहिए कि क्या करना है और इसे करने में उनकी भूमिका क्या है। चूंकि यह सभी उपलब्ध सूचनाओं के साथ एक लिखित दस्तावेज है, यह बोलीदाताओं को उनकी दरों को अधिक सटीक रूप से उद्धृत करने में मदद करता है और वह भी पारदर्शिता और निष्पक्षता बनाए रखने के लिए एक समान प्रारूप में होता है।

बोली दस्तावेज (2/3) :

बोली दस्तावेज तैयार करने के लिए जिम्मेदार अधिकारियों को सार्वजनिक खरीद प्रक्रिया में अच्छी तरह से प्रशिक्षित,अनुभवी तथा पारंगत होना चाहिए। उन्हे कार्य/सेवाओं के दायरे को समझना चाहिए और निष्पादन और वितरण में शामिल विभिन्न चरणों, नए उत्पादों/विकास/नवीनतम कार्यप्रणाली आदि का अच्छा ज्ञान होना चाहिए।

बोली दस्तावेज (3/3) :

- किसी भी अस्पष्टता से बचने के लिए सरल और सटीक भाषा (समझने में और अर्थ लगाने में आसान हो) का उपयोग करें - एक मुद्दे के बारे में स्पष्ट और पूरी जानकारी एक जगह पर उपलब्ध होनी चाहिए। योजना और काम के बारे में जानकारी का अभाव, इसे कैसे निष्पादित किया जाना है, यह अस्पष्टता भी छोड़ देता है। याद रखें-अस्पष्टता यदि कोई है तो वे अधिकतर/हमेशा ठेकेदार/विक्रेता के पक्ष में जाती है।
- अस्पष्टता खतरनाक हैं - वे विवाद और मुकदमेबाजी उत्पन्न करती हैं।

निविदाओं का पुरस्कार :

- पारदर्शिता के लिए पुरस्कार देने वाली निविदाओं में नियम आधारित निर्णय लेने की आवश्यकता होती है।
- नियम-आधारित निर्णय लेने को छिपा भेदभाव को सीमित करने के लिए डिज़ाइन किया गया है।
- यह अनुबंध अधिकारियों के निर्णयों की निष्पक्षता की समीक्षा करने की सुविधा प्रदान करता है।

सीवीसी के दिशानिर्देश:

- केवल एल 1 को ही अनुबंध प्रदान किया जाना चाहिए।
- यदि एल 1 पीछे हट जाता है, तो निविदा वापस बुला ली जानी चाहिय।
- आम तौर पर बातचीत /मोलतोल/समझौता नहीं होना चाहिए।
- यदि बातचीत/मोलतोल अपरिहार्य हो जाती है, तो यह केवल एल 1 के साथ ही होनी चाहिए।

किसी भी परिस्थिति में, एल 1 के अलावा अन्य किसी के भी साथ बातचीत नहीं की जानी चाहिए ।

कार्य का ठेका देने के पश्चात और क्रय/ठेकेको कार्यान्वित/कृति में लाने के दौरान :

1. संविदा/ठेका/अनुबंधों में बदलाव (वेरिएशन):

- एक ठेके में अतिरिक्त चीजें/वस्तुओं और प्रतिस्थापित चीज़े/वस्तुओं से बचा नहीं जा सकता है। हालाँकि हम इन बदलावों को कम कर सकते हैं यदि हम आवश्यकता मूल्यांकन, अनुमान तैयार करने और निविदा के स्तर पर सावधान रहें।

- बदलाव से निपटने के लिए, आम तौर पर संविदाओं में प्रावधान रखे जाते हैं। हालांकि इस तरह की धाराएं अप्रत्याशित परिस्थितियों के लिए रखी जाती हैं, लेकिन इसका दुरुपयोग, कार्य का दायरा बदल कर या इसे मंजूरी/स्वीकृति से बढ़ा कर बहुत बार किया जाता है। अत्यधिक बदलाव पर सवाल उठाने की जरूरत है।
- देखरेख/निरीक्षण/पर्यवेक्षण तथा जिम्मेदारी का अभाव।
- कार्य, डिजाइन, कार्यप्रणाली, विशेष विवरण तथा विनिर्देशों या किसी अन्य संविदा की शर्तों के दायरे में परिवर्तन।
- भुगतान प्रक्रिया।
- अनधिकृत अग्रिम और छुट/रियायतें।
- अग्रिमों की वसूली में देरी।
- सुरक्षा और बीमा प्रावधान।
- मात्रा, गुणवत्ता और कारीगरी का गलत प्रमाणीकरण।
- कार्य/सेवा के पूर्णत्व के संबंध में प्रमाणपत्र जारी करने में और संविदा समापन में होनेवाली देरी।

2. भुगतान जारी करना:

- इतना ही नहीं कभी-कभी अभियांत्रिकी, वित्त और लेखा विभाग भी भ्रष्टाचार की चपेट में आ जाते हैं। कभी-कभी रिश्वत दिए बिना भुगतान जारी नहीं किया जाता। देयक,धन वापसी,सुरक्षा जमा वापसी यहां तक कि एलटीसी अग्रिम और चिकित्सा बिल देते वक्त भी रिश्वत देनी पड़ती है।
- रिश्वत की प्रतिशतता (%) विभिन्न प्रकार के भुगतानों के लिए तय की जाती है।
- ई-भुगतान, बिल ट्रैकिंग, पहले आओ पहले पाओ कुछ हद तक मदद करता है।

3. भ्रष्टाचार पर नियंत्रण:

- भारी/बोझिल और जटिल प्रक्रियाएं भ्रष्टाचार का मुख्य स्त्रोत हैं। अधिक जाँच केंद्र, अधिक से अधिक भ्रष्टाचार।
- इन ब्लॉकों को हटा दें और प्रक्रियाओं को सरल करें, अनुचित को रोकने के लिए स्व विवेक का प्रयोग करें और गलत संभावना को हटाने के लिए मैनुअल में उन्हें वर्णित करें।
- नियमित अंतराल पर देरी और बदलाव के उदाहरणों की समीक्षा करें और सिस्टम में सुधार के लिए उनका विश्लेषण करें।

4. ई-टेंडरिंग को अपनाएं:

पारदर्शिता बढ़ाने के लिए ई-खरीद एक शक्तिशाली उपकरण है। इसके मुख्य लाभ हैं :

- पारदर्शिता और कार्यक्षमता बढ़ाती है।
- लागत कम करती है।
- निष्पक्ष प्रतिस्पर्धा को बढ़ाता है - बोली प्रक्रिया के लिए आसानी से पहुँच के दायरे में है।
- प्राधिकरण और बोलीदाताओं के बीच के इंटरफ़ेस को कम करके भ्रष्टाचार के अवसर को रोकने का कार्य करता है।

5. ईमानदारी समझौता (Integrity Pact) को अपनाएं:

- भ्रष्टाचार कम करने में ईमानदारी समझौता एक प्रमुख हथियार है।
- दोनों पक्ष एक समझौता करार करते हैं जिसमें घूस तथा अनैतिक कार्य न करने के लिए प्रतिबद्ध होते है।
- यह समझौता दोनों पक्ष के लिए आपसी अधिकार तथा दायित्व स्थापित करता है।
- स्वतंत्र बाहरी निगरानी संस्था विश्वास तथा सक्षम प्रक्रिया प्रदान करती है।

6. प्रशिक्षण आयोजित करें:

- भ्रष्टाचार के जोखिमों और इसको रोकने संबंधी ,कर्मचारियों को नियमित अंतराल पर समुचित प्रशिक्षण का आयोजन करें।
- संगठन की खरीद प्रक्रियाओं और नीतियों की जानकारी दें।
- खरीद पर नवीनतम सीवीसी दिशानिर्देश बताएं।
- संगठन में खरीद प्रक्रिया में पाई गयी कमियों का विश्लेषण करें।

लाल फीतासाही:

- पारदर्शिता और सक्रिय सतर्कता के अभियान में, सार्वजनिक खरीद में अनावश्यक "लाल फीतासाही" और "अक्षमता" देरी के कारण पैदा नहीं होने चाहिए।
- पारदर्शिता प्रदान करने के लिए सिस्टम को जटिल, महंगा और समय लेने वाला नहीं बनाया जाना चाहिए।
- याद रखें: विलंबता भागीदारी को हतोत्साहित करती है एवं नये भ्रष्टाचार को गति प्रदान करती है।

एमडीएल में विभिन्न कार्यक्रमों की झलकियाँ

यार्ड 11876 खंडेरी भारतीय नौसेना को सुपुर्दगी करते हुए सीएमडी

सुपुर्दगी के समय एमडीएल के निदेशकगण एवं नौसेना अधिकारी

20 अप्रैल 2019 को इम्फाल जलावतरण के अवसर पर सभा को संबोधित करते हुए सीएमडी

20 अप्रैल 2019 को इम्फाल का जलावतरण समारोह

06 मई 2019 को यार्ड 11878 (वेला) स्कोर्पिन पनडुब्बी का जलावतरण

06 मई 2019 को यार्ड 11878 (वेला) स्कोर्पिन पनडुब्बी का जलावतरण

एमडीएल में विभिन्न कार्यक्रमों की झलकियाँ

राष्ट्रीय सुरक्षा सप्ताह का शपथ ग्रहण करते हुए दाएँ से सीएमडी कमोडोर राकेश आनन्द, ए के सक्सेना, नि (जनि), कमोडोर टी वी थॉमस, नि(सयों एवं का) एवं संजीव शर्मा, नि(वित्त)

सुरक्षा सप्ताह में कर्मचारी को प्रमाणपत्र देते हुए सीएमडी कमोडोर राकेश आनन्द

एमडीआरसी में आयोजित टीबी निरोधक कार्यक्रम पर चर्चा करते हुए एक श्रोता

टीबी निरोधक कार्यक्रम में श्रोतागण

पखवाड़ा प्रमाणपत्र वितरण समारोह में अधिकारी को प्रमाणपत्र देते हुए सीएमडी कमोडोर राकेश आनन्द और राजीव लठ, नि (पनडुब्बी एवं भारी अभियांत्रिकी)

सीएमडी द्वारा हिन्दी पखवाड़ा प्रमाण पत्र वितरण

एमडीएल में विभिन्न कार्यक्रमों की झलकियाँ

राजभाषा पत्रिका 'जलतरंग'' के 11वें अंक का विमोचन करते हुए अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, निदेशकगण एवं वरिष्ठ अधिकारी

''साइबर सुरक्षा हैंडबुक'' विमोचन करते सीएमडी तथा अन्य निदेशकगण

दिनांक 30/8/2019 में कोरियन शिपबिल्डिंग डेलीगेशन का एमडीएल दौरा

सम्मेलन कक्ष में कोरियन शिपबिल्डिंग डेलीगेशन से चर्चा करते हुए एमडीएल के सीएमडी और निदेशकगण

वाईस एडमिरल आर बी पंडित एवीएसएम चीफ ऑफ स्टाफ एचक्यूडबल्यूएनसी का एमडीएल दौरा

वाइस एडमिरल आर बी पंडित को मोमेंटों प्रदान करते हुए सीएमडी साथ में अन्य निदेशकगण

एमडीएल में विभिन्न कार्यक्रमों की झलकियाँ

डॉ अजय कुमार, आईएएस (रक्षा उत्पादन) द्वारा यार्ड-12652 (पी-17ए) की कील लेईंग समारोह में उपस्थित सभा को संबोधित करते हुए

डॉ अजय कुमार, आईएएस (रक्षा उत्पादन) द्वारा यार्ड- 12652 (पी-17ए) का कील लेईंग समारोह

टग अंडमान एवं निकोबार का दिनांक 7 मई 2019 को एमडीएल में इंडक्सन

टग का उदघाटन करते हुए मुख्य अतिथि डॉ अजय कुमार, आईएएस (रक्षा उत्पादन), सीएमडी एवं निदेशकगण

21 जून 2019 को एमडीआरसी में अंतराष्ट्रीय योग दिवस का उदघाटन

एमडीआरसी में योग अभ्यास करते हुए कर्मचारीगण

एमडीएल में विभिन्न कार्यक्रमों की झलकियाँ

निदेशक (जनि) ने 04/6/2019 को जहाज निर्माण प्रभाग को राजभाषा चल पदक प्रदान किया।

हिन्दी पखवाड़ा के अनुवाद स्पर्धा में प्रतिभागियों के साथ निर्णायक श्री महीप गोयल

हिन्दी पखवाड़ा के गायन स्पर्धा में प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए सीएमडी और बैठे हुए निदेशकगण

हिन्दी पखवाड़ा के गायन का आगाज़ करता हुआ प्रतिभागी

दिनांक 9 जुलाई 2019 को सीएसआर कार्यक्रम के अंतर्गत 'जॉय ऑफ गिविंग'' के अंतर्गत पुराने कपड़े, खिलौने गरीब बच्चों को दिए गए।

जॉय ऑफ गिविंग के दौरान सामग्री प्राप्त करते निदेशक कमोडोर टी वी थामस, श्री संजय काजवे, कमोडोर जे एम जांगीर एवं अन्य अधिकारीगण

साइबर सुरक्षा

श्री अशोक कुमार शिंदे
मुख्य प्रबन्धक (सीआईटी)

साइबर सुरक्षा के लिए प्रत्येक व्यक्ति और समाज को जागरूक और सतर्क रहने की जरूरत है। कार्यस्थल या घर या किसी अन्य सार्वजनिक स्थान पर बढ़ते डिजिटल प्रौद्योगिकी उपयोग के साथ सभी प्रकार की कनेक्टिविटी बढ़ रही है इसके कारण सुरक्षा स्तर पर बड़ी चुनौतियाँ उत्पन्न हुई हैं चाहे इसे हम पसंद करें या न करें। साइबर सुरक्षा केवल परंपरागत समाधान द्वारा अकेले निराकरण नहीं किया जा सकता है। सभी लोगों को उचित सावधानी के साथ इसे जीवन अंश के रूप में अपनाना चाहिए। साइबर सुरक्षा का प्रसार लोगों, उनके परिवारों तथा समाज में जागरूकता का प्रसार करने का एक प्रयास है।

साइबर सुरक्षा के लिए आवश्यक कदमः

क्या करें

- अपने पासवर्ड को सुरक्षित रखेंः बेवसाइट तथा एपलिकेशन के सम्बंध में सावधान रहें, जहां पासवर्ड का प्रयोग किए जाते हैं।
- क्लिक करने से पहले देखेंः सुनिश्चित करें कि प्रत्येक पॉप-अप या लिंक जिसपर क्लिक किया जा रहा है वह प्रमाणित है।
- हमेशा अद्यतन रखें : सिस्टम को अद्यतन रखने के लिए अद्यतन वर्जन के साफ्टवेअर तथा एंटीवायरस महत्वपूर्ण हैं। रैनसमवेअर के कारण डाटा लॉस को रोकने के लिए नियमित आधार पर बैकिंगअप रखें।
- बचाव के लिए इनक्रिप्ट करें : ड्राईव पर डाटा को सुरक्षित रखने के लिए इंडस्ट्री स्टैंडर्ड का उपयोग करते हुए महत्वपूर्ण डाटा को इनक्रिप्ट करें। इनक्रिप्टेड सूचना का उपयोग अथवा सुरक्षित नेटवर्क का प्रयोग वर्चूअल प्राइवेट नेटवर्क के माध्यम से विकसित किया जाना चाहिए।
- वाइरस मुक्त डिवाइस से जोड़ें : यदि आप किसी थर्ड पार्टी डिवाइस का प्रयोग करने के लिए प्राधिकृत हैं जैसे यूएसबी या हार्ड ड्राइव तो सिस्टम से जोड़ने के पहले सुनिश्चित करें कि यह मालवेयर से सुरक्षित एवं मुक्त है।
- डाउनलोडिंग से पहले प्रामाणिकता की जाँच करें : सिस्टम पर प्रत्येक एप्लीकेशन अधिकृत पक्ष से लिया होना चाहिए। इंस्टालेशन से पहले सिग्नेचर तथा एप्लीकेशन सर्टिफिकेट का सत्यापन आवश्यक है।
- साइबर सुरक्षा से बातचीत करेंः साइबर सुरक्षा के लिए बेहतरीन प्रक्रियाओं पर उपयोगकर्ताओं को शिक्षित करना बहुत महत्वपूर्ण है। जैसे पासवर्ड सुरक्षा आदि ।
- नेटवर्क को नियंत्रित रखें : नेटवर्क निगरानी तथा प्रतिक्रिया प्रणाली सही स्थिति में होना चाहिए जो संदेहास्पद आचरण तथा ऑनलाइन खतरों का पता लगा सके।
- अनाधिकृत आचरण हेतु चौकसी : नियमित जांच करें कि कैसे क्लाउड सर्विस का उपयोग हो रहा है। अनाधिकृत आचरण जैसे संवेदनशील डाटा की नकल, नॉन- कार्पोरेट क्लाउड स्टोरेज एप्लीकेशन में करना। इसकी रिपोर्ट होनी चाहिए।
- प्रत्येक फाइल को सुरक्षित रखें : व्यक्तिगत फाइल स्तर के लिए निरंतर सिक्युरिटी लागू करें जिससे निगरानी हो सके और डाटा तक पहुँचने से अनाधिकृत उपयोगकर्ता को रोका जा सके।

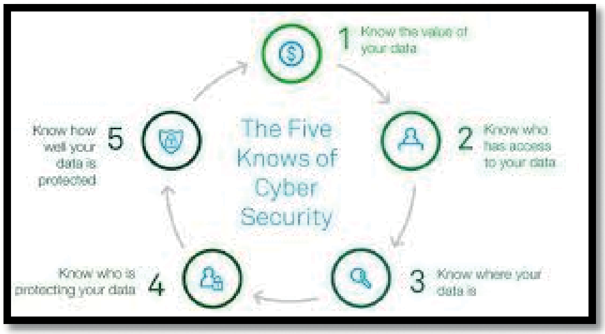

क्या न करें:

- एक समान पासवर्ड न रखें : एक ही प्रकार के पासवर्ड अनेक एप्लीकेशन में प्रयोग करने से बचना चाहिए।
- स्पैम ईमेल खोलने से बचे : संदेहास्पद दिखने वाले ईमेल से बचना चाहिए क्योंकि उसमें स्पैम तथा मेलवेयर हो सकते हैं।
- एडमिनिस्ट्रेटर अधिकारों की शेअरिंग सीमा : एडमिनिस्ट्रेटर अधिकार केवल सीमित लोगों को देना चाहिए जैसे कि एडमिनिस्ट्रेटर एकाउंट की एक्सेसेबिलिटी का दुरुपयोग हैकर द्वारा किया जा सकता है।
- एकाउंट विवरण को शेअर न करें : किसी व्यक्तिगत खाता की गोपनियता को किसी संदिग्ध कॉल द्वारा मांगने पर नहीं देना चाहिए।
- सार्वजनिक वाई- फाई का सीमित उपयोग करें : फ्री वाई-फाई का सावधानी से उपयोग करें।
- जालसाजी में न पड़े : यूआरएल के लिए सावधान रहें जो प्रमाणिक वेबसाइट के समान दिखती हो लेकिन जाली हो।

परम्परागत साइबर सुरक्षा मानक एवं उत्तम प्रयोग

इन्टरनेट कनेक्टेड या स्टैंडएलोन कंप्यूटर का प्रयोग करते समय मैलवेयर (वाइरस, ट्रोजॉन वर्मस इत्यादि) के इन्फेक्शन को कम करने हेतु क्या करें और क्या न करें।

हमेशा असली तथा अधिकृत साफ्टवेयर का उपयोग करें।

- ऑपरेटिंग सिस्टम के लिए एंटीवाइरस तथा एप्लीकेशन साफ्टवेयर अद्यतन अपडेट / पैचेज को इंस्टाल करें।
- एक फायरवाल इनेबल करें। ऑपरेटिंग सिस्टम में इनबिल्ट फायरवाल रहता है जिसका उपयोग अनावश्यक इन्टरनेट कनेक्सन को रोकने के लिए किया जा सकता है।
- कंप्यूटर पर यूजर कार्य को सीमित करें। हमेशा इन्टरनेट का एक्सेस मानक यूजर के रूप में करें न कि एडमिनिस्ट्रेटर के रूप में।
- फाइल संलग्नकों तथा ईमेल एवं वेबपेज पर लिंक क्लिक करने से पहले ईमेल सेंडर का आईडी तथा वेबलिंक सत्यापन एवं जाँच करें।
- सोशल इंजीनियरिंग अटैक से सुरक्षित रहें। फिसिंग ईमेल तथा एसएमएस का उपयोग यूजर क्रेडेंशियल जैसे यूजर नेम, पासवर्ड, क्रेडिटकार्ड तथा एनआईएम संख्या आदि प्राप्त करने के लिए किया जाता है।

- ईमेल एकाउंट के पिछले लॉगिन विवरण की नियमित जाँच करते रहें।
- स्ट्रांग पासवर्ड का उपयोग करें जिसमें अक्षर, संख्या तथा चिन्ह का समावेश हो।
- केवल आधिकारिक रूप से प्रदान की गई यूएसबी स्टोरेज मिडिया का उपयोग करें। उपयोग के बाद यूएसबी स्टोरेज मिडिया का नियमित फार्मेट सामान्य रूप से न दिखने वाले मालिसिअस फाइल्स को हटाने के लिए करें।
- आपात स्थिति जैसे मालवेयर इनफेक्शन, हार्ड डिस्क क्रैस, करपटेड एप्लीकेशन तथा अन्य अप्रत्याशित घटनाओं से फाईलों को क्षति से बचाने के लिए डॉक्यूमेंट फाईल्स का नियमित रूप से बैकअप करें।
- साइबर सुरक्षा उपाय के बारे में उपयोगकर्ता को समय-समय पर अद्यतन जानकारी दें।

- पाईरेटेड सॉफ्टवेयर का इंस्टाल और डाउनलोड करने से बचें।
- इन्टरनेट से जुड़े कंप्यूटर का उपयोग ड्राफ्टिंग/संवेदनशील कार्यालयी दस्तावेज स्टोर/पत्राचार के लिए न करें।

- अज्ञात ई-मेल आईडी से प्राप्त ईमेल न खोलें। ऐसे मेलों को ईमेल एकाउंट इनबॉक्स से हटा दें।
- अज्ञात स्त्रोत से आए हुए फाइल एटेचमेंट को न खोले और न ही डाऊनलोड करें।
- ब्राउज़र / वेब पेज में यूजर नाम और पासवर्ड के ऑटो स्टोरेज को शेयर कंप्यूटर जिसमें इन्टरनेट कार्य किया जाता है को अशक्य (डिसबेल) कर दीजिए।
- कार्यालय के कंप्यूटरों में व्यक्तिगत यूएसबी स्टोरेज डिवाइस/ स्मार्ट डिवाइस का प्रयोग न करें। अज्ञात यूएसबी स्टोरेज डिवाइस को अपने कंप्यूटर में प्रयोग न करें।
- अपना पासवर्ड किसी से शेयर न करें। सभी वेबसाइट और सर्विसेस में एक ही पासवर्ड का उपयोग न करें।

जेनरिक मैलवेयर से इनफ़ेकटेड कंप्यूटर के लिए कुछ संकेतक

- कंप्यूटर सामान्य से धीरे चलता है, अक्सर काम करते हुए बंद हो जाता है। कंप्यूटर क्रैश हो जाता है और कुछ मिनटों में पुनः स्टार्ट होता है।
- लगातार असामान्य एरर मैसेज पॉपअप होता है।
- आपके वेब ब्राउज़र में नया टूलबार, लिंक्स अथवा फेवरेटेस जुड़ जाता है।
- होम पेज, मायूस पॉइंटर अथवा सर्च प्रोग्राम में अप्रत्याशित परिवर्तन हो जाता है।
- कंप्यूटर से कोई इन्टरनेट कार्य न करने पर भी असामान्य नेटवर्क ट्राफिक और कनेक्टिविटी।

(यह सभी मैलवेयर इन्फेक्शन के सामान्य चिन्ह हैं, लेकिन यह हार्डवेयर अथवा सॉफ्टवेयर समस्या के सूचक मात्र भी हो सकते हैं)

1. हमेशा ऑपरेटिंग सिस्टम, एंटी- वाइरस और अप्लीकेसन के लिए आटोमैटिक अपडेट सेट करें। विंडो ओएस का अपडेट निम्नलिखित रूप से करें:-

   कंट्रोल पैनेल - विंडो अप - चेंज सेटिंग्स - आटोमैटिक इंस्टाल अपडेट्स

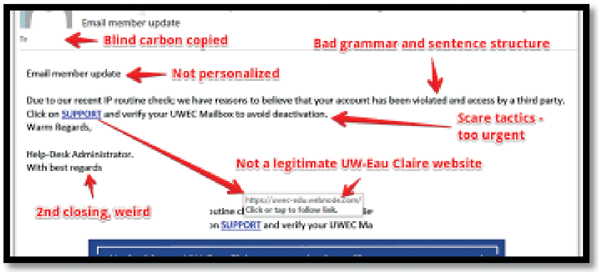

2. "netstat – na" कमांड से विंडोज़ में असामान्य नेटवर्क ट्रैफिक जांच करें।
   "run" में "cmd" और netstat – na" टाईप करें। ओनरशिप के लिए फ़ारेन ईस्टैब्लिशमेंट और आईपी एड्रेस देखें।
3. देखें कि विंडो स्टार्टअप में अपने आप (ऑटोमेटिकली) किसी असामान्य एक्सिक्युटेबल रन हो रहा है या नहीं।

   देखें "run" में "msconfig" को टाइप करें और असामान्य एक्सिक्युटेबल रन हो रहा है या नहीं।

   (किसी अनावश्यक/ अज्ञान एक्सिक्युटेबल/ प्रोग्राम को डिसेबल, डिलीट अथवा अनइंस्टाल करें।)

4. यूएसबी स्टोरेज डिवाइस का प्रयोग करते समय विशेष रूप से एनेब्ल हिडेन फाइल, फोल्डर और सिस्टम फाइल तथा कोई असामान्य अथवा हिडेन फाइल को देखें।

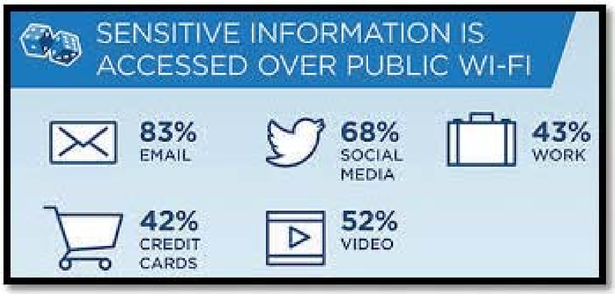

कंट्रोल पैनल - फोल्डर ऑप्शन - व्यू - "शो हिडेन फाइल और फोल्डर" ऑप्शन को सिलेक्ट करें और "हाइड प्रोटेकटेड ऑपरेटिंग सिस्टम फाइल" को अनसिलेक्ट करें।

सुनिश्चित करें कि यूएसबी स्टोरेज डिवाइज़ में किसी प्रकार की हिडेन फाईल और फोल्डर नहीं है। डाटा फाइलों (doc, ppt, xls और pdf इत्यादि) के अलावा कोई असामान्य फाईल (फाईल जिसका एक्सटेंशन exe, com, dat, scr, और ini इत्यादि) होने पर डिवाइस को फॉरमेट करें।

5. विंडो के "Temp" और "Temporary Internet files" के कंटेट को नियमित रूप से डिलीट करें।

"run" में %temp% टाईप करें तथा टेम्पोरेरी फोल्डर के सभी कंटेटस को डिलीट करें। टेम्पोरेरी इन्टरनेट फाइलों को डिलीट करने के लिए विभिन्न ब्राउजरों जैसे विंडोस इन्टरनेट एक्सप्लोरर, गूगल क्रोम, मोज़िला फायरफॉक्स, ओपेरा और एपल सफारी के दिए गए स्टेप का अनुसरण करें।

ईमानदारी का पुरस्कार

आशीष कुमार यादव
प्रअ (अनुरक्षण)

जमैका की राजधानी किंगस्टन में एक गरीब महिला एकैशा ग्रीन को सेंट्रल पुलिस स्टेशन के पास एटीएम में एक भारी भरकम बैग मिला। ग्रीन ने बैग खोला तो देखा उसमें 500 और 1000 डॉलर के नोट ठूंस कर भरे हुए थे। इतने डॉलर एक साथ देखकर वह गरीब महिला स्तब्ध रह गई। पहले उसने इंतजार किया कि शायद जिसका बैग हो वह लेने आ जाए। जब काफी देर तक इंतजार करने पर भी वहां कोई नहीं आया तो ग्रीन के मन में विचार आया कि बड़े अच्छे वक्त पर उसे यह बैग मिला है। इन दिनों उसके पास कोई काम नहीं है, कोई आमदनी का साधन भी नहीं है। इतने डॉलर से तो उसकी जिंदगी भर की गरीबी दूर हो सकती है। अपने परिवार का पालन-पोषण कर सकती है और वह आराम के सारे साधन खरीद सकती है।

ग्रीन के अंतर्मन से आवाज आई, यह धन मेरा नहीं है। इस पर मेरा कोई हक नहीं है। उसने इस दूसरी आवाज की अहमियत समझी और निश्चय किया कि यह बैग पुलिस को दे देगी। इससे पहले कि मन का लालच दोबारा उसके विचार को बदलता, उसने बैग ले जाकर पुलिस स्टेशन में जमा करा दिया। वह बैग एक कारपोरेट कंपनी का था। बैग के साथ वह पूरी रकम उसके मालिक तक पहुंच गई। उसके बाद ग्रीन की ईमानदारी सार्वजनिक हो गई। उस कंपनी के मैनेजिंग डायरेक्टर और कई सारे लोग ग्रीन से मिलने आए। उसे इनाम के रूप में बारह लाख डॉलर भेंट किए और यह भी कहा की उसकी इस ईमानदारी के लिए कंपनी उसकी पूरी मदद करेगी, उसके बच्चों की पढ़ाई-लिखाई का पूरा ध्यान रखेगी।

इतना धन पाकर ग्रीन की ख़ुशी का ठिकाना नहीं था। उसकी ईमानदारी की शोहरत सुनकर और बहुत से लोगों ने उसकी सराहना की। एनसीबी फाउंडेशन, बैंक और जमैका और किंग अलार्म लिमिटेड ने भी ग्रीन की तारीफ करते हुए उसकी मदद करने का वादा किया। ग्रीन को यकीन नहीं हो रहा था कि ईमानदारी का इतना बड़ा उपहार भी मिल सकता है।

निगमित सामाजिक दायित्व और स्थायी विकास

रोहित पाण्ड्य
उप्र (सीएसआर)

कॉर्पोरेट सामाजिक दायित्व एवं स्थाई विकास कम्पनी की प्रतिबद्धता है। इसके स्टकेहोल्डर, व्यवसाय में आर्थिक, सामाजिक और पर्यावरणीय रूप से स्थायी विकास करने के लिए प्रयत्नशील हैं।

कंपनी अनेक कार्यक्रम पूरा करने के लिए वचनबद्ध है जिससे सामाजिक और व्यावसायिक लक्ष्यों को स्थायी रूप से स्वीकृत कर सामाजिक प्रभाव, समावेशी विकास गतिविधियों से समाज में विशेष रूप से प्रभाव दिखाई दे। इस संबंध में कंपनी ने कॉर्पोरेट सामाजिक जिम्मेदारी एवं स्थायी नीति को स्वीकार किया है जो कंपनी अधिनियम 2013 की धारा 135 और इसके अंतर्गत बनाए नियमों के अनुपालन में है।

वित्तीय वर्ष 2018-19 के लिए आपकी कंपनी का सीएसआर बजट रुपये 16.13 करोड़ था (पिछले तीन वित्तीय वर्ष औसत 2% लाभ कंपनी अधिनियम 2013 की धारा 198 के अंतर्गत)। इसके अतिरिक्त 13.12 करोड़ पिछले वित्तीय वर्ष से कैरी फॉरवर्ड हुआ है। इसमें से आपकी कंपनी ने वित्तीय वर्ष 2018-19 में रुपये 23.47 करोड़ खर्च किया है। रुपये 5.78 करोड़ खर्च नहीं हो पाया है जिसका कारण कुछ परियोजनाओं के निष्पादन में एजेंसियों द्वारा निष्पादन में विलंब है।

आपकी कंपनी ने सीएसआर पहल के तौर पर विभिन्न परियोजनाओं का निष्पादन मुख्य रूप से शिक्षा, स्वास्थ्य एवं स्वच्छता, कौशल विकास और ग्राम विकास के क्षेत्रों में किया है। सभी सीएसआर परियोजनाएं कंपनी अधिनियम के अनुसूची VII के अनुरूप हैं। वित्तीय वर्ष 2018-19 में निष्पादित मुख्य परियोजनाओं का विवरण निम्न है:-

शिक्षा

एमडीएल ने अपना निरंतर समर्थन खराड़े ग्राम पंचायत शाहपुर में आदिवासी बालिका स्कूल के लिए किया है। कैडेट मेस मिलिटरी स्कूल भोसलें (बीएमएस) नागपुर का एमडीएल ने डायनिंग हाल एंड किचन को आटोमेटेड मशीन और फर्नीचर से सुसज्जित किया है। जिससे कि छात्र स्वच्छ एवं साफ ढंग से भोजन कर सकें। इसके अलावा, कम्पनी ने सूरत जिला (गुजरात) के सरकारी स्कूलों के 10,000 छात्रों को मीड-डे मील देने में सहायता किया है।

कम्पनी ने एक फ्लॅगशिप प्रोजेक्ट यानी "एमडीएल सुपर 10" की भी पहल किया है जिसमें थाना जिला के शाहपुर के आदिवासी क्षेत्र के 10 छात्रों का चुनाव प्रतिवर्ष भोसला सैनिक स्कूल नागपुर में अध्ययन करने के लिए किया जायेगा। इन चुने हुए छात्रों की पढ़ाई का पुरा खर्च इस आवासीय स्कूल में कम्पनी वहन करेगी। पहले बैच के 10 ऐसे छात्रों ने प्रथम वर्ष स्कूल कोर्स पूरा किया है।

फ्लॅगशिप प्रोजेक्ट के अंतर्गत "सुपर 10" के 10 छात्रों के साथ सैनिक स्कूल में सीएमडी तथा एमडीएल के अधिकारी

ग्रामीण

एमडीएल ने आदर्श ग्राम विकास परियोजना के अंतर्गत खरडे ग्राम पंचायत के लिए अपना समर्थन जारी रखा है और अनेक नई पहल शुरू किया है जैसे सेनेटरी पैड निर्माण इकाई, निशानपाड़ा में पाईप

लिंक वाटर, सरकारी स्कूलों का आईएसओ प्रमाण देना, मशरूम स्थान उत्पादन ईकाई इत्यादि स्थापित करना। इस वर्ष एमडीएल ने अन्य 100 परिवारों को इस माध्यम से सहायता किया है और इसके द्वारा जीविका का अवसर इस परियोजना के अंतर्गत कुल 200 परिवारों के लिए किया है।

डीसीसीपी को सैनेटरी पैड यूनिट दिखती महिला

इसके अलावा सुखा प्रभावित मराठवाड़ा क्षेत्र के लिए कम्पनी ने अपना निरंतर समर्थन एवं जिविका विकास परियोजना बीड़ जिला के पास से ग्राम विकास किया है। इस परियोजना के अंतर्गत एमडीएल ने इस क्षेत्र के किसानों को एक किसान उत्पादक कम्पनी गठित करने के लिए संगठित किया है। एफ पीसी एक बार पूर्ण रूप से परिचालित होने पर यह किसानों को अपने उत्पाद का उचित मूल्य प्राप्त करने में सहायता करेगा।

स्वास्थ्य एवं सफाई

कम्पनी ने पनवेल स्थित आँख के अस्पताल लक्ष्मी चेरीटेबल न्यास का नवीनीकरण पूर्ण किया है और अस्पताल को आधुनिक उपकरण एवं मशीनों से सुसज्जित किया है। नवीनीकरण के बाद यह स्टेट आफ द आर्ट अस्पताल न केवल मोतिया बिन्द आपरेशन के लिए सक्षम हुआ है। बल्कि अब ग्लूकोमा तथा शिशु अंधापन के मरीजों का उपचार भी कर सकेगा। इसके अलावा,एम डी एल ने 05 विभिन्न राज्यों के 09 कैंसर अस्पतालों के कैंसर मरीजों के समर्थन और सलाह की परियोजना शुरू किया है। इस परियोजना के अंतर्गत इस वर्ष महत्वपूर्ण परिवर्तन 26000 से अधिक कैंसर मरीजों के जीवन में किया है। इसके आगे, एमडीएल ने मानखुर्द स्थित शिशु सदन के मानसिक रूप से कमजोर 278 बच्चों के लिए अपना समर्थन दिया है।

भारत सरकार के स्वच्छता मिशन के साथ एमडीएल नें कुछ बड़ी परियोजना स्वच्छता क्षेत्र में आरम्भ किया है जैसे 05 नगर परिषदों का मेकैनिजेशन शहरी स्थानीय निकायों का नंदुबार जिलों कचरा प्रबंधन के लिए किया है। इस परियोजना के अंतर्गत एम डी एल ने मशीन और उपकरण जैसे वैकूम इम्पटियर मशीन, रिपर रोड स्वीपर मशीन, ड्रेन क्लिनिंग मशीन ,मोबाईल शौचालय इत्यादि की आपूर्ति संम्बधित नगर परिषदों के उचित कचरा प्रबंधन के लिए किया है। गाँव में खुला शौच मुक्त दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुए एम डी एल ने अपने जारी परियोजनायों जैसे रायगड़ जिला के कर्जत ब्लाक में 1000 निजी शौचालयों का निर्माण किया है। एमडीएल की जारी अन्य परियोजनाएं जैसे मुम्बई के जय भीम नगर में सामुदायिक शौचालय ब्लाक का निर्माण और एमडीएल के चारों ओर सफाई भी वित्तीय वर्ष 2019 से जारी है। एमडीएल ने भारत सरकार के स्वच्छ भारत कोष एवं गंगा सफाई निधि में अंशदान दिया है।

वैक्यूम इंपीटियर मशीन

कौशल विकास

एमडीएल ने बड़े कदम कौशल प्रशिक्षण के क्षेत्र में आईटीआईवीटीसी के साथ प्रशिक्षु प्रशिक्षण और कौशल प्रशिक्षण थर्ड पार्टी एजेन्सी के माध्यम से गोद लेकर किया है। थाना जिला के शेनवे औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान में एमडीएल ने भवन का नवीनीकरण किया है। कम्पनी ने अमरावती जिला के चिकलधारा आईटीआई को औद्योगिक विजीट संस्थान के माध्यम से साफ्ट स्कील प्रशिक्षण और स्कालर शिप छात्रों को देने में सहायता किया है।

कम्पनी ने स्टेट आफ द आर्ट व्यावसायिक प्रशिक्षण केन्द्र निर्माण के लिए भी सहायता दिया है जो अपंग बच्चों के कौशल विकास के लिए है। इसके अलावा थाना जिला प्रशासन केन्द्र के लिए बुनियादी सुविधा कौशल विकास एवं प्रशिक्षु प्रशिक्षण के लिए भी वित्तीय वर्ष 2018-19 से जारी है।

एमडीएल ने लगभग 400 नौजवानों को वाहन चालक (एमडीएल) ट्रेड का व्यवसायिक प्रशिक्षण भी प्रदान किया है। यह परियोजना नौजवानों को न केवल प्रशिक्षण प्रदान करती है बल्कि प्रसिद्ध संस्थानों में उनका नियोजन भी सुनिश्चित करती है। कम्पनी प्रशिक्षुओं का प्रशिक्षण अपने इन हाउस प्रशिक्षण केन्द्र में देने में सहायता करती है।

कमोडोर जे एम जांगीर, महाप्रबंधक स्वदेशी एवं सीएसआर द्वारा ड्राइविंग लाइसेन्स का प्रमाणपत्र देते हुए

सीएसआर समिति ने प्रमाणित किया है कि कंपनी कि सीएसआर नीति का कार्यान्वयन और मॉनिटरिंग सीएसआर उद्देश्य नीति के आज्ञानुसार है।

आदिवासी ग्रामीणों को स्वरोजगार देने के उद्देश्य से 100 परिवारों को बकरी पालन हेतु बकरी के बच्चे दिये गए हैं जिससे कि वे आर्थिक रूप से स्वालंबी हो सके।

जमाना बदल रहा है

रामअवतार यादव
क्यूसी निरीक्षक

क्योंकि जमाना बदल रहा है।
माँ के दूध का वर्चस्व ढल रहा है,
इंसान ही आज इंसान से जल रहा है,
एक का यश दूसरे को ख़ल रहा है,

क्योंकि यह जमाना बदल रहा है।
आतंक की आग में समाज जल रहा है,
ईर्ष्या और द्वेष का सैलाब उबल रहा है
क्योंकि यह जमाना बदल रहा है।

उत्पादन कार्यशाला - दक्षिण यार्ड

रोशन कुमार
वरिष्ठ अभियंता (उत्पादनशाला)

उत्पादन शाला को माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड का हृदय कह सकते हैं जैसे कि हार्ट पम्प से रक्त का संचार शरीर के सभी अंगों में होता है, उसी प्रकार उत्पादन शाला से कट मैटेरियल सभी एसेम्बली शापों और बर्थ (पनडुब्बी और जहाज निर्माण दोनों) तथा अन्य सहायक कार्यशालाओं को भेजी जाती है जैसे फिटिंग शाप, पाईप शाप, इत्यादि। इस प्रकार अधिकतम उत्पादन, उत्पादन शाला से निरंतर जारी रहता है। कार्य की जरूरत अनुसार कार्यपाली कभी-कभी 2 से 3 पालियों में चलाई जाती है। वर्ष 2018-19 के दौरान कंपनी ने 2563 टन का उत्पादन किया है जो एमओयू लक्ष्य 2000 टन से 563 टन अधिक है ।

सीएनसी गैस कटिंग मशीन

बुनियादी सुविधाएं

उत्पादन शाला अति उन्नत एवं आधुनिक मशीनों से सुसज्जित है।

1000 टन की प्रेस मशीन

सीएनसी प्लाज्मा मशीन

250 टन प्रेस मशीन

पंचिग मशीन

1.2 सीएनसी प्लाज्मा मशीन

2.2-सीएनसी गैस कटिंग मशीन

3- 1000 टन की प्रेस मशीन (भारी जाब के लिए)

4- 250 टन प्रेस मशीन (हल्के जाब के लिए)

5. 1400 टन की रोलिंग मशीन

6. पीयूजी / बेवेल मशीन

7.3 शिपटिंग मशीन

8. पंचिग मशीन

सभी उपरोक्त मशीने निरंतर कार्य कर रही हैं प्रत्येक मशीन प्री-फेब्रीशन के विभिन्न जॉब को पूरा करती है।

उत्पादन शाला कैसे काम करता है:

यह शाला जहाज निर्माण - पीएएसी / पीएमटी विभाग से कार्य आदेश प्रतिदिन / साप्ताहिक आधार पर प्राप्त करता है और कुछ कार्य आदेश प्रत्यक्ष रूप से बर्थ एवं अन्य विभागों से आवश्यकता अनुसार प्राप्त होते हैं।

कार्य आदेश में सेटिंग यूनिट पार्ट, रिवाईजड यूनिट पार्ट, बिल्ट इन ट्रेक, ईस्टयार्ड, जिग जाब्स इत्यादि शामिल हैं।

एक बार कार्य आदेश प्राप्त होने पर सामग्री रिकविजीसन, फूल प्लेट्स एवं कट पीसेस के समक्ष बनाया जाता है।

समानांतर रूप से, विभाग के पास प्लेट के नेस्टिंग डाक्यूमेंट्स हार्ड कापी होती है जो रूपांकन विभाग के साथ प्लेट कट करने के लिए नेस्टींग प्रोग्राम सैप सिस्टम में उपलब्ध होता है।

प्रक्रिया के क्रमों को पूरा किया जाता है।

1. मानक आकार के कच्ची प्लेट्स एवं कट पीसेस की कटिंग नेस्टिंग के अनुसार प्लाज्मा सीएनसी अथवा गैस कटींग मशीन पर की जाती है।

2. वेल्डिंग/फेब्रिकेशन उद्देश्य के लिए एज/बीवेल तैयारी करना।

3. टेम्पलेट डिजाईन के अनुसार 2डी कट सामग्री 3डीशेप में शेप करना। प्लेट का टेम्पलेट्स माउल्ड लाफ्ट में रूपांकित कर शेप्ड की जाती है।
4. अंत में डिस्पैच पार्ट को संबंधित शाला अथवा अन्य स्थानों पर इसके आगे यूनिट फेब्रिकेशन के लिए ट्रेलर, लारी, जम्बों, फोर्क लिफ्ट एवं अन्य परिवहन साधनों से भेजा जाता है।

   यद्यपि यह प्रक्रिया देखने में साधारण एवं आसान दिखाई देती है लेकिन इसमें अनेक चुनौतियों का सामना प्रतिदिन करना पड़ता है। सबसे चुनौती पूर्ण कार्य कच्चे सामग्री को नियंत्रित करना है कि किसी प्लेट को प्राथमिकता के आधार पर जांचकर कट करना है। दूसरी चुनौती है कि कटे हुए भाग को सही जगह पर भेजना क्योंकि सैकड़ों पार्ट प्रतिदिन उसी मशीन से एक के बाद दूसरा विभिन्न यार्डो, सीटिंग, यूनिट्स इत्यादि के लिए काटे जाते हैं। प्रत्येक पार्ट के लिए छटाई करना आवश्यक है जिससे कि आवश्यक पार्ट इसके जरुरी स्थान पर भेजा जा सके।

   जहाज पर अनेक उपकरण एवं मशीनरी हैं जिनको जहाज पर स्थापित करना एवं प्रतिष्ठापित सीटिंग पर करना है। हम, कार्य आदेश बड़े और छोटे सीटिंग से प्राप्त करते हैं जो उनके वजन कटिंग एवं फैब्रिकेशन के अनुरूप वर्गीकृत है। यह अलग से पोतों के लिए है। ये सीट अधिकता उप ठेकेदार के माध्यम से उत्पादन शाला सुपर वाईजर के अधीन बनाये जाते हैं। कुछ सीट शालाओं में भी निर्मित होते हैं।

बीआरटीएस (शेष बचा भंडार को वापस करना)

एक पूर्ण प्लेट को काटते समय प्लेट का कुछ हिस्सा बिना कटे रह जाती है। इसके लिए एक अलग कोड बनाया जाता है और शेष बचे भाग को स्टील स्टोर में उपयोग के लिए वापस किया जाता है। रूपांकन विभाग के पास शेष बचे प्लेटों का विस्तृत ब्योरा रहता है और इनका उपयोग कट पीस के रूप में भविष्य की इकाइयों एवं परियोजनाओं के लिए किया जाता है।

5 एस/एच एसई/गुणवत्ता नियंत्रण:

हमारी कार्यशाला एमडीएल की पहली कार्यशाला है जिसने 5 एस/ एचएसई/गुणवत्ता नियंत्रण सिद्धांत को लागू किया है और निरंतर दैनिक आधार पर जारी है।

हाउस कीपिंग:

हमारे अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक की परिकल्पना है कि कार्यस्थल को साफ- सूथरा, धूल रहित और डम्प सामग्री से मुक्त कायम रखें। हाउस कीपिंग सेवा नियमित रूप से दो पालियों में काम करती है और कार्य स्थल के साथ - साथ कार्यालय को धूल मुक्त रखते हैं।

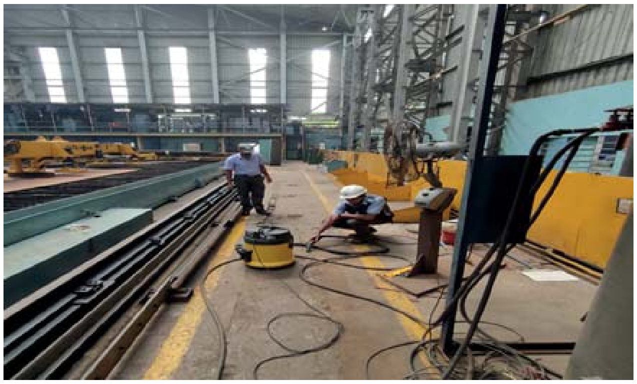

कटे अंशो की शोध

उत्पादनशाला सीएनसी मशीन पर कटे मद का तिथिवार रिकार्ड रखती है जिसे आसानी से खोजा जा सकता है। पोत निर्माण के किसी चरण में यदि कोई सामग्री दोषपूर्ण पाई जाती है तो उसे आसानी से खोजा जा सकता है जिसे आपूर्तिकर्ता को कच्ची सामग्री के बैच नम्बर/ द्वीप नंबर के साथ पता लगाया जा सकता है।

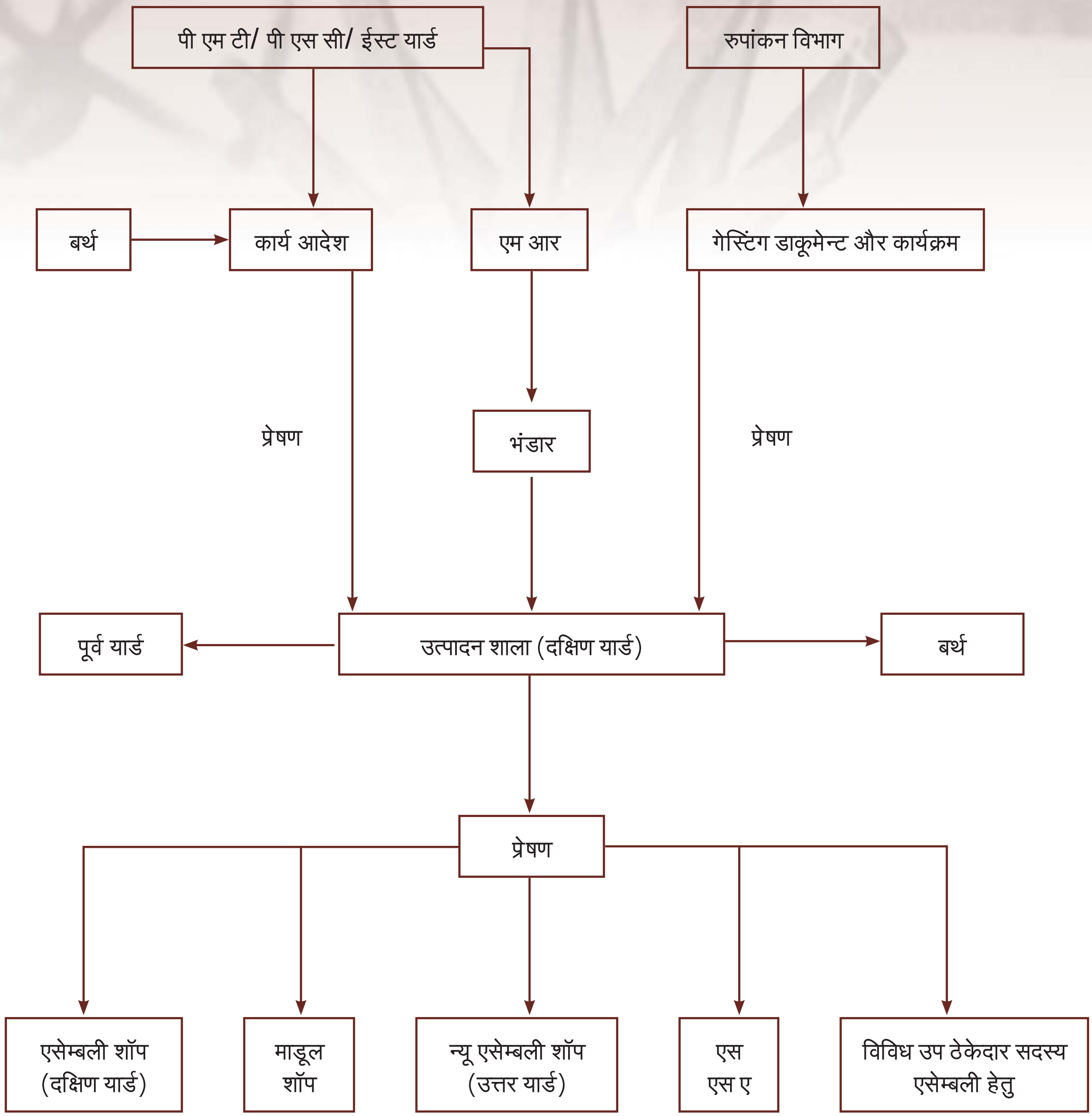
पी एम टी/ पी एस सी/ ईस्ट यार्ड
रुपांकन विभाग
बर्थ
कार्य आदेश
एम आर
गेस्टिंग डाकूमेन्ट और कार्यक्रम
प्रेषण
भंडार
प्रेषण
पूर्व यार्ड
उत्पादन शाला (दक्षिण यार्ड)
बर्थ
प्रेषण
एसेम्बली शॉप (दक्षिण यार्ड)
माडूल शॉप
न्यू एसेम्बली शॉप (उत्तर यार्ड)
एस एस ए
विविध उप ठेकेदार सदस्य एसेम्बली हेतु

माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड

प्रशिक्षु प्रशिक्षण शाला एवं समुद्री अभियांत्रिकी प्रशिक्षण

शशि भूषण तिवारी
अपर महाप्रबंधक(एटीएस/एमईटी)

सन 1960 में माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड को भारत सरकार की मुख्य जहाज निर्माण कंपनी का राष्ट्रीय दर्जा प्राप्त होने के पश्चात सन 1963 में रोजगार एवं प्रशिक्षण महानिदेशालय, श्रम एवं रोजगार मंत्रालय, भारत सरकार के निर्देशानुसार तकनीकी के विभिन्न क्षेत्रों में रोजगार, कौशल विकास और उद्यमशीलता बढ़ाने के उद्देश्य से प्रशिक्षण विभाग का गठन किया गया, जिसे 'प्रशिक्षु प्रशिक्षण विभाग'' कहा गया। सर्वप्रथम इस विभाग का संचालन कंपनी के उत्तर खंड (नॉर्थ यार्ड) से कार्यान्वित हुआ, जिसका प्रमुख उद्देश्य कंपनी के कार्य से संबन्धित व्यवसायों में प्रशिक्षु अधिनियम 1961 के आधार पर प्रशिक्षुओं का चयन कर प्रशिक्षण देना था । ये व्यवसाय विशेषतः ड्राफ्ट्समन (मेकेनिकल), इलेक्ट्रिशियन, फिटर, मिलराइट मैकेनिक, वेल्डर, रीगर आदि थे।

सन् 1970 के दशक में प्रशिक्षु अधिनियम 1961 में संशोधन के पश्चात राज्य के तकनीकी संस्थानों में अभियांत्रिकी के विभिन्न क्षेत्रों में स्नातक एवं डिप्लोमा कर रहे अथवा कर चुके विद्यार्थियों को उनके विषय से संबन्धित उद्योगो में रोजगार, व्यवहारिक कुशलता एवं उद्यमशीलता बढ़ाने की दृष्टि से सीमित अवधि के लिए प्रशिक्षण देना निर्देशित किया गया ।

तत्पश्चात प्रशिक्षु प्रशिक्षण शाला से क्षेत्रीय निदेशक, क्षेत्रीय शिक्षुता प्रशिक्षण निदेशालय (पश्चिमी क्षेत्र) मुंबई, रोजगार एवं प्रशिक्षण महानिदेशालय, श्रम एवं रोजगार मंत्रालय, भारत सरकार की निगरानी में प्रशिक्षु अधिनियम 1961 के अंतर्गत विभिन्न व्यवसायों मे प्रशिक्षुओं का चयन कर सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक प्रशिक्षण देना एवं निदेशक, शिक्षुता प्रशिक्षण मण्डल (पश्चिमी क्षेत्र) मुंबई, मानव संसाधन मंत्रालय, भारत सरकार की निगरानी में प्रशिक्षु अधिनियम 1972 के अंतर्गत स्नातक एवं डिप्लोमा कर रहे अथवा कर चुके विद्यार्थियों को उनके विषय से संबन्धित उद्योगों में उनके संस्थानों द्वारा निर्धारित समय अवधि के लिए व्यवहारिक प्रशिक्षण देना सुनिश्चित किया गया।

सन् 1984 में तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी द्वारा पनडुब्बी निर्माण के लिए पूर्व खंड (ईस्ट यार्ड) का उद्घाटन करने के पश्चात प्रशिक्षु प्रशिक्षण शाला का स्थानांतरण 1990 के दशक से माझगांव डॉक लिमिटेड के दक्षिण खंड (साउथ यार्ड) में स्थित ''सिंधिया बिल्डिंग'' में किया गया। यहाँ पर प्रशिक्षु प्रशिक्षण शाला के प्रशासनिक कार्यालय को स्थापित किया गया एवं सभी व्यवसायों के लिए सैद्धांतिक प्रशिक्षण

के लिए कक्षाओं की व्यवस्था की गई एवं व्यावहारिक प्रशिक्षण के लिए यान्त्रिक और विद्युत बुनियादी प्रशिक्षण केन्द्रों को तत्कालीन ऑफशोर यार्ड (अलकॉक यार्ड) में स्थापित किया गया तथा वेल्डर और ड्राफ्ट्समन व्यवसाय के व्यावहारिक प्रशिक्षण के लिए बुनियादी प्रशिक्षण केंद्र को दक्षिण खंड (साउथ यार्ड) में स्थापित किया गया। बुनियादी प्रशिक्षण अवधि समाप्त होने के पश्चात प्रशिक्षुओं को उनकी शेष प्रशिक्षण अवधि में कंपनी के जहाज एवं पनडुब्बी निर्माण से संबन्धित अन्य विभागों में उनके व्यवसायों के व्यावहारिक ज्ञान एवं कार्य कौशल को बढ़ाने हेतु भेजा जाता है ।

माझगांव डॉक लिमिटेड ने समुद्री अभियांत्रिकी के क्षेत्र में प्रशिक्षण संबंधी बढ़ती हुई मांग को देखते हुए सन् 1998 में ऑफशोर यार्ड (अलकॉक यार्ड) में स्थापित अन्य बुनियादी प्रशिक्षण केन्द्रों के साथ ही समुद्री अभियांत्रिकी प्रशिक्षण केंद्र की स्थापना किया जिसके अंतर्गत समुद्री अभियांत्रिकी विषय से संबन्धित संस्थानों में स्नातक कर रहे छात्र अपना व्यावहारिक ज्ञान बढ़ाने एवं संबन्धित क्षेत्र में प्रशिक्षण के लिए प्रतिवर्ष आते हैं।

वर्ष 2014 से कौशल विकास एवं उद्यम मंत्रालय, भारत सरकार की निगरानी में कुल 11 व्यवसायों में व्यवसायिक प्रशिक्षुओं को प्रति वर्ष चयन कर प्रशिक्षण देना सुनिश्चित किया जा रहा है, जो की निम्नलिखित हैं:

ड्राफ्ट्समैन (मेकेनिकल), इलेक्ट्रिशियन, फिटर, पाइप फिटर, स्ट्रक्चरल फिटर (रेगुलर एवं एक्स. आई.टी.आई. दोनों सम्मिलित है), कारपेंटर, इलेक्ट्रानिक मैकेनिक, आई.सी.टी.एस.एम. रिगर एवं वेल्डर (गैस एवं इलेक्ट्रिक).

प्रशिक्षु प्रशिक्षण विभाग में प्रशिक्षुओं का चयन प्रतिवर्ष ऑनलाइन माध्यम से आयोजित प्रवेश परीक्षा द्वारा किया जाता है।

वर्तमान में प्रशिक्षु प्रशिक्षण विभाग पूर्ण रूप से ऑफशोर यार्ड (अलकॉक यार्ड) में सभी व्यवसायों के बुनियादी प्रशिक्षण केन्द्रों के साथ सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक प्रशिक्षण के लिए श्री एस. बी. तिवारी, अपर महाप्रबंधक के नेतृत्व में सफलतापूर्वक कार्यशील है। वर्तमान मे प्रशिक्षु प्रशिक्षण शाला मे सभी वर्गो एवं व्यवसायों में प्रशिक्षण ले रहे प्रशिक्षुओं की कुल संख्या 812 है, जिसमें व्यवसायिक (625), स्नातक / डिप्लोमा (87) और समुद्री अभियांत्रिकी (100) प्रशिक्षण से संबन्धित प्रशिक्षु शामिल हैं।

एटीएस वर्कशॉप में प्रशिक्षुओं को संबोधित करते हुए अप्रनि कमोडोर राकेश आनंद

वर्तमान समय में प्रशिक्षु प्रशिक्षण शाला से प्रशिक्षण प्राप्त अधिकांश प्रशिक्षु माझगांव डॉक लिमिटेड के जहाज एवं पनडुब्बी निर्माण से संबन्धित विभागों में सेवारत हैं और अपनी कार्य कुशलता का योगदान कंपनी के विकास में निरंतर दे रहे हैं। इसके अलावा एल एंड टी, बीएआरसी, नेवल डॉक आदि संस्थानों में भी प्रशिक्षु प्रशिक्षण शाला से प्रशिक्षण प्राप्त प्रशिक्षु कार्यरत हैं एवं रोजगार प्राप्त कर रहे हैं।

पिछले 58 वर्षों से प्रशिक्षु प्रशिक्षण विभाग माझगांव डॉक लिमिटेड के लिए तकनीकी क्षेत्रों में रोजगार, कौशल विकास और उद्यमशीलता से संबन्धित क्षेत्रों में विकास के लिए निरंतर कार्यरत है और अपना यथासंभव योगदान सफलतापूर्वक दे रहा है एवं भविष्य में भी कंपनी के विकास में कार्यशील रहेगा।

धन्यवाद धन्यवाद धन्यवाद

रमेश चन्द्र जैन
मुख्य प्रबंधक (पीएससी)

पृथ्वी को धन्यवाद, पानी को धन्यवाद
अग्नि को धन्यवाद, वायु को धन्यवाद
हरि तक को धन्यवाद, त्रस पानी धन्यवाद ।।
धन्यवाद धन्यवाद धन्यवाद

सबका सहयोग मिला, आनंद का भोग मिला
दिल से उजास खिला, सुंदर सा आज मिला
दानी उत्साह के, गुरुवर को धन्यवाद ।।
धन्यवाद धन्यवाद धन्यवाद

प्यारे माता-पिता, प्यारी संतान हो
बढ़िया हमदम रहे, सभ्यो में शान हो
प्यारा पड़ोस हो, परिजन को धन्यवाद ।।
धन्यवाद धन्यवाद धन्यवाद

सबसे सदभाव हो, प्रेमी स्वभाव हो
दिल में भाई सखा के, बढ़ बढ़ के प्यार हो
सबके कल्याण के, भावो को धन्यवाद ।।
धन्यवाद धन्यवाद धन्यवाद

नेताजी सुभाष चन्द्र बोस

श्री करनैल सिंह
प्र (पी15बी)

देश के अप्रतिम नेता, ओजस्वी वक्ता और तत्कालीन ब्रिटिश सरकार के अधीन सम्मानित आईसीएस की परीक्षा पास करने के उपरांत अंग्रेज सरकार की नौकरी से मुंह मोड़ने वाले त्यागी, स्वाभिमानी तथा देशभक्त नागरिक विरले ही पैदा हुए हैं।

23 जनवरी 1897 को सुभाषचन्द्र बोस जन्म कटक के संभ्रात परिवार में हुआ था। उनके पिताजी श्री जानकी नाथ बसु कटक के नामी वकील तथा नगरपालिका के अध्यक्ष थे। वह बंगाल विधान परिषद के सदस्य भी रहे थे और ब्रिटिश सरकार ने उनको रायबहादूर का सम्मानित खिताब भी दिया था।

सन 1913 में उनकी आयु 15 वर्ष थी और वह मैट्रिक के छात्र थे। उस समय स्कूलों में जो पुस्तकें पढ़ाई जाती थी उनका मुख्य उद्देश्य विधार्थियों को मानसिक रूप से अंग्रेज बनाना था। बच्चों को ग्रेट ब्रिटेन का इतिहास तथा भूगोल पढ़ाया जाता था। देश की कोई भाषा नहीं पढ़ाई जाती थी। बंगाल में हिन्दू से ईसाई बने छात्रों को विशेष सुविधा प्रदान की जाती थी तथा बाकी छात्रों में भेदभाव का व्यवहार होता था। रेल की प्रथम श्रेणी में भारतीयों को बैठने की अनुमति नहीं थी।

सन 1919 में उन्होंने बी.ए की परीक्षा प्रथम श्रेणी में पास किया और अपने पिताश्री की इच्छा का सम्मान करते हुए आईसीएस की परीक्षा में चौथा स्थान प्राप्त किया लेकिन देश की दुर्दशा देखकर नौकरी करने का विचार त्याग दिया।

वह 16 जुलाई 1921 को इंग्लैंड से भारत आये और गाँधी जी से भेट किया लेकिन उनके विचार से सहमत नहीं हो पाये और देश बंधु चितरंजन दास के साथ काम करने लगे। कुछ साल बाद कांग्रेस से जुड़ गए और इसके अध्यक्ष चुने गए। पार्टी में विवाद होने पर अलग हो गए।

सन 1921 में प्रिन्स ऑफ़ वेल्स की भारत यात्रा का कांग्रेस ने बहिष्कार किया। सुभाषचन्द्र बोस भी विरोध करने के कारण 10 दिसंबर 1921 को अपने साथियों सहित गिरफ्तार कर लिये गये।

सन 1922 में बंगाल में भीषण बाढ़ आई जिससे हजारों लोग बेघर हो गये। सुभाष बाबू ने अपने मित्रों के साथ साहसिक सहायता कार्य किया जिसके कारण वह बंगाल में लोकप्रिय होते रहे।

देश बंधु चितरंजन दास ने स्वराज पार्टी की स्थापना बंगाल में किया और कलकत्ता नगर निगम का चुनाव लड़ा- मार्च 1924 में स्वराज पार्टी को पूर्ण बहुमत मिला।

देशबंधु कलकता के मेयर निर्वाचित हुए और उन्होंने सुभाष बाबू को अपना मुख्य कार्यकारी अधिकारी नियुक्त किया। इनका वेतन 3000 रुपया प्रतिमाह तय किया था लेकिन सुभाष चन्द्र बोस ने मात्र 1500

रुपये में कार्य करना स्वीकार किया। अक्टूबर 1924 को सुभाष चन्द्र बोस को तथा अन्य व्यक्तियों को क्रांतिकारी षड्यंत्र के आरोप में बंगाल आर्डिनेंस के अंतर्गत गिरफ्तार कर लिया गया और वर्मा के मांडले जेल में भेज दिया गया। जहाँ पहले कई राष्ट्रीय नेता बंद रहे थे जैसे तिलक जी, लाला लाजपत राय जी।

16 मई 1927 को उनको अस्वस्थता के कारण कलकता लाकर छोड़ दिया गया।

सन 1928 में सुभाष चन्द्र, जवाहरलाल नेहरु जी तथा श्रीनिवास अयंगार ने इडिया इन्डिपेंस लीग नामक संस्था की स्थापना किया। 29 दिसंबर 1928 को कलकता में राजभाषा सम्मलेन हुआ और नेता जी को उसका स्वागताध्यक्ष चुना गया था।

22 अगस्त सन 1930 को सुभाष चन्द्र बोस को कलकता का मेयर चुना गया है और 26 जनवरी 1930 को देश भर में स्वाधीनता दिवस मनाया गया। कलकता के मेयर के रूप में सुभाष चन्द्र ने कारपोरेशन भवन पर तिरंगा झंडा फहरा दिया और निगम के समस्त कर्मचारियों को जुलूस के रूप में लेकर कलकत्ता मैदान की ओर चल पड़े। नेता जी दाये हाथ में राष्ट्रीय ध्वज लिए जूलूस का नेतृत्व कर रहे थे। इसी बीच ब्रिटिश घुड़सवार पुलिस ने अचानक उन्हें घेरकर अंधाधुंध लाठियां बरसानी शुरू कर दी। लाठी के प्रहार से उनका शरीर लहुलूहान हो गया तथा एक हाथ की दो अंगुलियाँ टूट गई।

अंग्रेज सरकार ने उनके विरुद्ध खतरनाक हथियार रखने तथा गैर क़ानूनी रूप से सभा करने का आरोप लगाकर छह माह की सजा सुना दी। जेल में उन्हें अमानवीय यातनायें दी गई। परिणाम स्वरूप उनका क्षयरोग फिर से उभर आया और वे लगातार अस्वस्थ होते चले गये। उनका वजन घटकर 60 पौंड हो गया। उनकी चिंता देश के नेताओं को होने लगी। सरकार पर दबाव बनाकर रिहा करने की कोशिश हुई। सरकार उस शर्त पर रिहा करने के लिए मान गई कि वह यूरोप जाकर अपना इलाज करा सकते है लेकिन देश में नहीं करा सकते हैं। इलाज कराने के लिए वह स्विटजरलैंड गये। वहां पर वह स्वाधीनता के लिए प्रयत्न करने लगे। वियना में आयोजित एशियाटिक सेंट्रल यूरोपियन सोसायटी के सम्मेलन में भाग लेकर भारत की स्वीधानता का मामला उठाया।

रोम में आयोजित एशियाई छात्र सम्मेलन में ओजस्वी भाषण देते हुए भारत की समस्याओं पर प्रकाश डाला। इसी दौरान वह इटली के विख्यात नेता मुसोलिनी से भेंट किया। सुभाष बाबू ने आयरलैंड

जाकर वहां के नेताओं से भी भारत की स्वतंत्रता के बारे में विचार-विमर्श किया। आयरलैड भी इग्लैंड का गुलाम था।

पूरे 750 वर्ष गुलामी झेलने के बाद सघर्ष के बल पर स्वतंत्र हुआ था। आयरलैंड में रहते हुए सुभाष बाबू ने इंडिया स्ट्रगल नामक

पुस्तक लिखी थी जिसे अंग्रेजों ने भारत प्रवेश पर पाबंदी लगा दी थी।

19 फरवरी 1938 को हरिपुरा में ताप्ती नदी के तट पर उनकी अध्यक्षता में कांग्रेस का 51 वाँ अधिवेशन हुआ। उनके स्वागत में इकावन द्वार बनाये गये थे और इकावन बैलों से जुटे रथ में सुभाष बाबू की अभूतपूर्व शोभा यात्रा निकाली गई थी।

सुभाष बाबू महात्मा गाँधी के प्रति श्रद्धा रखते थे किन्तु उनकी नरम और समझौतावादी नीति से असहमत थे। इसलिए गाँधी जी से उनके मत भेद गहरे होते गए। कांग्रेस अध्यक्ष का चुनाव होना था जिसमे गाँधी जी से मतभेद बहुत गहरे हो गया और सुभाष ने कांग्रेस से अप्रैल 1939 में त्याग पत्र दे दिया और मई 1939 में फारवर्ड ब्लाक नामक अलग दल बनाया। इसका पहला सम्मलेन मुंबई के आजाद मैदान में आयोजित किया गया था। जिसमें 2 लाख लोग शामिल हुए थे।

अपने तेजस्वी व्यक्तित्व के कारण नेता जी पूरे देश में लोकप्रिय होते गये।

12 अक्टूबर 1939 को उत्तर प्रदेश के लोगों के अनुरोध पर लखनऊ पधारे और वहां उनका भव्य जुलूस निकाला गया। इस जुलूस में लगभग डेढ़ लाख छात्र और युवक शामिल हुए थे।

गंगा प्रसाद मेमोरियल हाल में हुई विराट सभा में नेता जी ने कहा था आजादी मांगी नहीं जाती, छीन ली जाती है और हम उसे प्राप्त कर के ही रहेगें।

सितम्बर 1939 में यूरोप में द्वितीय विश्व युद्ध आरम्भ हो गया था। नेता जी के फारर्वड ब्लॉक ने अंग्रेजों और महायुद्ध के विरोध में देश भर में विरोध प्रदर्शन का आयोजन किया। सुभाष बाबू ने सभा में कहा था यदि भारत ब्रिटेन के विरुद्ध लड़ाई में भाग ले तो उसे स्वतंत्रता प्राप्त हो सकती है।

विनायक दामोदर सावरकर उन दिनों अंडमान और रत्नागिरी के जेल से रिहा होकर देश में राजनीतिक चेतना पैदा करने में लगे हुए थे। सुभाष बाबू, वीर सावरकर तथा उनके ग्रंथ "1857 का स्वातंत्र्य समर" से बहुत प्रभावित थे।

22 जून 1940 को अचानक सुभाष चन्द्र बोस बम्बई जाकर वीर सावरकर से मिले। उन्होंने अपनी योजना सावरकर के सामने रखा कि मैं चाहता हूँ कि भारत के प्रमुख शहरों में अंग्रेज सत्ताधीशों के जो स्टेच्यु (प्रतिमायें) खड़ी की गई हैं उन्हें तोड़कर जनजागरण आन्दोलन का श्री गणेश किया जाय इससे भारतीय जनता में स्फूर्ति और चेतना पैदा होगी।

सावरकर जी उनकी योजना ध्यान से सुनकर प्रभावित हुए और कहा कि मैं आपकी राष्ट्रनिष्ठ से भली भाँति परिचित हूँ किन्तु आप जैसा वीर योद्धा, महान सेनानी केवल कलकता के हावेल की मूर्ति नष्ट करने के आरोप में वर्षों तक जेल में सड़कर मर जाय, यह मैं पसंद नहीं कर सकता हूँ। सच्ची राजनीति तो यह है कि शत्रु को मारे, स्वयं नहीं मरें। जिस प्रकार रास बिहारी बोस आदि क्रांतिकारियों ने विदेशों में जाकर भारत की स्वतंत्रता का आंदोलन चलाया, उसी तरह आप क्यों नहीं देश के लिए शक्ति संचय करते ? विदेश जाकर सशस्त्र क्रांति का मार्ग अपनाइए, समस्त भारतीय सैनिक समय पड़ने पर आपकी सहायता को तैयार रहेगें।

वीर सावरकर के इन चंद शब्दों ने सुभाष बाबू के ह्रदय और मस्तिस्क को झकझोरकर डाला। उसी समय सुभाष बाबू ने गुप्त रूप से विदेश प्रस्थान कर भारत की आजादी के लिए सशस्त्र संघर्ष छेड़ने का व्रत ले लिया।

25 जून 1944 को सिंगापुर रेडियो से उन्होंने स्वीकार किया कि वीर सावरकर की प्रेरणा से ही विदेश में आजाद हिन्द सेना का गठन किया। सिंगापुर में भारतीयों से चंदा और दान लेकर सेना का खर्च उठाया और आजाद हिन्द सेना के लिए जयहिंद शब्द का संबोधन बनाया जो संस्कृत से जय तथा फारसी से हिन्द शब्द

लेकर बना है। सिंगापुर तथा वर्मा के भारतीयों ने स्वेच्छा से देश की आजादी के लिए दान दिया था। इसमें महिलाओं का योगदान सर्वोपरि था क्योंकि इन्होने अपने कीमती आभूषण देश की खातिर दान कर दिया था।

सिंगापुर में आज़ाद हिन्द फौज की स्थापना भारतीय गिरफ्तार सैनिकों के माध्यम से किया जो जापान सरकार के कब्जे में थे। आ. जाद हिन्द फौज सरकार का कार्यालय और मंत्री मण्डल गठन कर अपना सिक्का और रुपया भी प्रकाशित कराया था जिसके कुछ नमूने नीचे दिए गए हैं।

नेताजी सुभाष चन्द्र बोस ने सिंगापूर में रहते हुए और भारतीय तथा विदेशी लोगों से दान और जनसमर्थन जुटाकर आज़ाद हिन्द सरकार का गठन कर लिया था। सरकार का मुख्य कार्यालय सिंगापूर में स्थापित किया। इसके सभी विभागों में अधिकारी नामित किए गए थे। आज़ाद हिन्द सरकार ने अपना डाक टिकट, सिक्का, मुद्रा तथा अधिकारियों के लिए पदक भी अलग-अलग बनवाया था।

इसके चित्र नीचे दिये गए हैं-

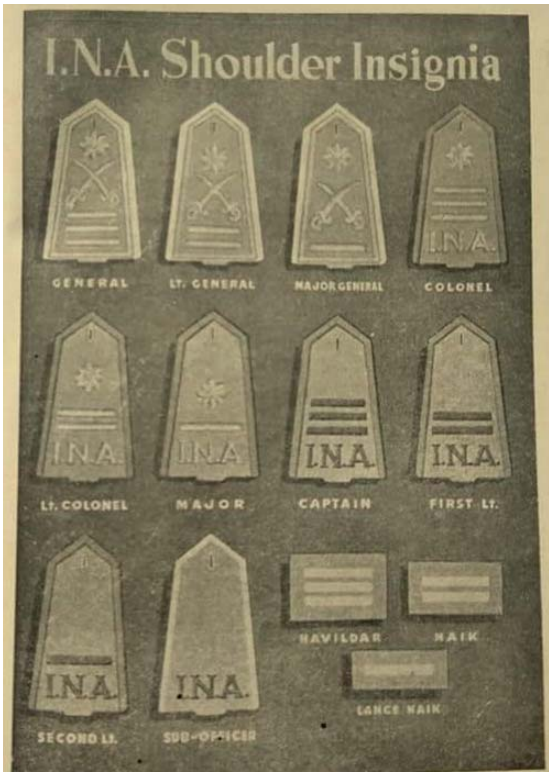

प्रकृति और मानव

रामाश्रय यादव
उप्र (भंडार-पूर्व खंड)

बारिश ने फैला दी है जमी पे मस्तियां,
पेड़ और पौधे भी ख़ुशी से झूम रहे हैं यहाँ, हवाओं में खुशबू बिखेर रही है फूल और कलियाँ,
धूप और बादल भी खेल रहे लुकाछिपी का खेल यहाँ,
मौसम भी हो गया है यहाँ मादक और सुहावना,
पी फूलों का रस इतरा रहे है भवरें और तितलियाँ,
इंद्रधनुष भी दे रहा है सलामी आसमां में,
बोल रहा है डूब जाओ प्रकृति के आनंद में।

प्रकृति सभी के जीवन का महत्वपूर्ण और अविभाज्य अंग है। खूबसूरत प्रकृति के रूप में भगवान के सच्चे प्यार से हम सभी धन्य हैं। कुदरत के सुख को कभी गँवाना नहीं चाहिए। प्रकृति भगवान की बनायी सबसे अदभुत कलाकृति है जो उनसे बहुमूल्य उपहार के रूप में प्रदान की है। जल, हवा, भूमि, पेड़, जंगल, पहाड़, नदी, सूरज, चाँद, आकाश, समुद्र आदि प्रकृति के अनेक मनमोहक रूप हैं। यद्यपि प्रकृति के निर्माण में मानव का कोई योगदान नहीं होता फिर भी वह इसे कई प्रकार से प्रभावित करता है। वह अपनी प्रत्येक आवश्यकता के लिए प्रकृति पर निर्भर रहता है और इस प्रकार वह प्रकृति को आकार देता है। मानव अपने भोजन, आश्रय व लगभग सभी मूलभूत आवश्यकताओं के लिए प्रकृति की ओर निहारता है।

महत्वपूर्ण बात यह है कि प्रकृति मानव को सीखने हेतु परिवेश प्रदान करती है। यह मानव की सभी सृजनात्मक अनुभूतियों के लिए मंच प्रदान करती है। गहन विचारों को छोड़ दे तो बच्चों के लिए प्रकृति एक आनंद का स्रोत बन जाती है। यह उन्हें एक जाना पहचना परिवेश प्रदान करती है जिसके साथ वे सरलता से एक रूप हो जाते है। वे प्रकृति के अवयवों से विभिन्न प्रकार के संबंध स्थापित कर लेते है तथा इसी प्रक्रिया में वे प्रकृति का एक अभिन्न अंग बन जाते हैं।

मनुष्य सदियों से प्रकृति की गोद में फलता-फूलता रहा है। इसी से ऋषि-मुनियों ने आधात्मिक चेतना ग्रहण की और इसी के सौंदर्य से मुग्ध होकर न जाने कितने कवियों, की आत्मा से कविताएँ फूट पड़ी। मानव अपनी भावाभिव्यक्ति के लिए प्रकृति की ओर देखता है और उसकी सौंदर्यमयी बलवती जिज्ञासा प्रकृति सौंदर्य से विमुग्ध होकर प्रकुति में भी सचेत सत्ता का अनुभव करने लगती है। मत्स्यपुराण में प्रकृति की महत्ता को बतलाते हुए कहा गया है - "सौ पुत्र एक वृक्ष समान" प्रकृति की इसी महत्ता को प्रतिस्थापित करते हुए पद्मपुराण का कथन है कि जो मनुष्य सड़क के किनारे तथा जलाशयों के तट पर वृक्ष लगाता है वह स्वर्ग में उतने ही वर्षो तक फलता-फूलता है, जितने वर्षो तक वह वृक्ष फलता-फूलता है।

विश्व की लगभग सारी सभ्यता का विकास प्रकृति की ही गोद में हुआ और तब इसी से मनुष्य के रागात्मक संबंध भी स्थापित हुए, किन्तु कालान्तर में हमारी प्रकृति से दूरी बढती गई। आज मनुष्य अपने स्वार्थ के लिए प्रकृति से खिलवाड़ कर रहा है। पेड़-पौधे जो कार्बन-डाय-ऑक्सीजन प्रदान करते हैं, ये प्रकृति के ही एक रूप हैं लेकिन इंसान इन्हें भी नुकसान पहुँचा रहे है। पेड़ों की अंधाधून कटाई करके अपने जीवन को खतरे में डाल रहा है। जल प्रदूषण, वायु प्रदूषण, भूमि प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण कर रहा है जिसकी वजह से प्रकृति का नुकसान हो रहा है। जंगल में रहने वाले जीव-जंतुओं का पेड़ों की कटाई की वजह से लुप्त होना और यह सभी मानव का ही किया हुआ है। शहरीकरण की वजह से पेड़ों की कटाई की जा रही है जिससे वायु भी शुद्ध नहीं होती और मनुष्य, जीव-जंतुओं को बहुत सी परेशानियों का सामना करना पड़ता है।

फैक्ट्रियों से निकलने वाला हानिकारक धुआँ वातावरण में मिल जाता है और इस वातावरण प्रदूषण से हम बहुत सारी बीमारियों से पीड़ित हो रहे हैं।

फसलें हमें मिट्टी से प्राप्त होती है लेकिन मनुष्य ने प्रकृति की मिट्टी को भी दूषित कर दिया है। उसने बहुत सारे कीटनाशक दवाइयों का उपयोग कर भूमि को उर्वरक क्षमता को नष्ट दिया है। वायु-प्रदूषण, जल प्रदूषण मानव के क्रियाकलापों के कारण हुआ है जिस वजह से बहुत सी बीमारियाँ बहुत तेजी से हमारे बीच फ़ैल रही हैं और हमारे जीवन के साथ खिलवाड़ हो रहा है।

मानव को प्रकृति की सुरक्षा करना बेहद ज़रूरी है। इस प्रकृति ने हमें बहुत कुछ दिया है। प्रकृति के द्वारा दिया गया, जलवायु, पेड़-पौधे, सूर्य की रोशनी आदि का उपयोग प्रकृति स्वयं नहीं करती उसका उपयोग हम करते हैं। इसलिए हम सभी को प्रकृति के साथ खिलवाड़ ना करके प्राकृतिक संपदाओं की रक्षा करनी चाहिए जिससे आने वाले समय में हम बहुत सारी परेशानियों से बच सके।

वास्तव में प्रकृति की रक्षा मानव की सुरक्षा है। सबसे पहले हमें प्रकृति की सुरक्षा के बारे में सोचना चाहिए। अगर हम अपने बारे में ही सोचते हैं और प्रकृति को लगातार नुकसान पहुँचाते है तो अपने दैनिक जीवन में दोहराई हुई छोटी-छोटी गलतियाँ बड़ी परेशानियों का कारण बन सकती हैं।

अस्तु ! हम कह सकते हैं कि प्रकृति से मनुष्य का संबंध अलगाव का नहीं है, प्रेम उसका पक्ष है। प्रकृति का अलगाव अधोगति का कारण बनता है। हमें अधिक से अधिक वृक्ष लगाकर अपना योगदान देना चाहिए। अर्थात

वृक्ष प्रकृति का है श्रृंगार,
इनकों क्यों काट रहा है इंसान,
नष्ट इसे करके अपने ही पाँव पर,
कुल्हाड़ी क्यों मार रहा है इंसान।

मार्टिन लूथर

कृष्ण प्रधान
प्र (मा.सं- समवाय)

यूरोप में धर्म सुधार आंदोलन का जन्मदाता मार्टिन लूथर था, जिसने धर्म के नाम पर फैली कुरीतियों के खिलाफ आंदोलन का नेतृत्व किया। लूथर का जन्म 1483 ई. में सेक्सनी के आइबेम नामक गाँव में एक किसान परिवार में हुआ था। पहले उसने कानून की शिक्षा प्राप्त की, किंतु बाद में जब उसका झुकाव धर्म की ओर हो गया तो उसने धर्म का गहन अध्ययन करके डॉक्टरेट की उपाधि प्राप्त की। कैथोलिक धर्म के प्रति उसकी आस्था थी; किंतु जब वह रोम गया और उसने वहाँ धर्म का जो रूप देखा तो उसे धर्म से वितृष्णा हो गई।

वह चर्च की पवित्रता और बाइबल की प्रमाणिकता में विश्वास करता था। उसने चर्च के भ्रष्ट अधिकारियों की तीखी निंदा की। पोप की कट्टरता के कारण उसे विवश होकर कैथोलिक धर्म के विरुध्द आंदोलन करना पड़ा। जर्मनी के कुछ राजा इससे खुश हुए। इस तरह राजाओं तथा जनता का समर्थन पाकर जर्मनी में लूथर ने आंदोलन को गति प्रदान की। मोक्ष के लिए जब पोप लिखित क्षमा-पत्र बिकने लगे तो लूथर ने इसका विरोध किया। पोप का कहना था कि वह पापियों को क्षमादान दे सकता है। 1519 ई. में लूथर ने चर्च की सत्ता समाप्त कर दी। उसने तीन पुस्तकें लिखीं, जो जनता में बेहद पसंद की गईं। चर्च तथा लूथर के बीच विकट संघर्ष चला। 1520 ई. में लूथर को धर्म-बहिष्कृत कर दिया गया। वह सेक्सनी के सामंत फ्रेडरिख के संरक्षण में चला गया। वहाँ उसने बाइबल का जर्मन भाषा में अनुवाद किया, जो जनता के बीच काफी लोकप्रिय हुआ। लूथर के आंदोलन का नाम 'प्रोटेस्टेंट" पड़ा। 1555 ई. में लूथरवादी सिद्धांतों को मान्यता मिली।

दान में चाहिए ज्ञान

सुधीर दिवेकर
टीआरए

पेशवा माधवराव अपनी दानप्रियता के लिए प्रसिद्ध थे। वह अपने जन्मदिन पर निर्धनों को धन, अन्न, वस्त्र और भूमि दान किया करते थे। उनसे दान लेने बहुत दूर-दूर से लोग आया करते थे। उनके दरवाजे से कोई खाली हाथ नहीं लौटता था। एक बार उनके जन्मदिन पर एक बालक आया। वह देखने से ही बड़ा प्रतिभाशाली लगता था। उसकी चाल ढाल में आत्मविश्वास झलक रहा था। उसने पेशवा को प्रणाम करके कहा, 'मैं यहाँ एक विशेष प्रयोजन से आया हूं।" पेशवा ने पूछा, बताओ बालक क्या है तुम्हारा प्रयोजन?" 'मुझे कुछ और नहीं, बस ज्ञान का दान चाहिए।"

यह सुनकर वहां उपस्थित लोग चौंक गए। उन्हें समझ में नहीं आया कि इसका मतलब क्या है? आखिर यह बालक चाहता क्या है? पेशवा ने मुस्कुरा कर पूछा, 'केवल ज्ञान का दान क्यों?" इस पर वह बालक बोला, मैंने देखा है कि जिन्हें दान में धन मिला है, उनका धन एक दिन समाप्त हो गया। कपड़े भी पुराने हो गए, फट गए। जिन लोगों ने आपसे दान में भूमि हासिल की उन्हें भी खास फायदा नहीं हुआ। कुछ समय में भूमि भी ऐसे ज्यादातर लोगों हाथ से निकल गई। सो, मेरा निष्कर्ष यह रहा कि दान में ली गई चीजें टिकती नहीं हैं।"

बालक आगे बोला, 'मैं ऐसा दान चाहता हूं जो हमेशा टिका रहे। काफी सोचने के बाद मैंने पाया कि ज्ञान ही वह वस्तु है जो कभी समाप्त नहीं होती। ज्ञान हमेशा स्थिर रहता है। इसीलिए मैं दान में सिर्फ ज्ञान चाहता हूं। अनाथ और निर्धन होने के कारण मैं शिक्षा प्राप्त नहीं कर पाया। यदि आप मेरी शिक्षा की व्यवस्था कर दें तो मैं आपका आजीवन ऋणी रहूंगा।" बालक की बात सुनकर पेशवा बहुत प्रभावित हुए। उन्होंने उस बच्चे के अध्ययन की व्यवस्था कर दी। वह बालक कोई और नहीं बल्कि रामशास्त्री थे जो आगे चलकर प्रसिद्ध न्यायाधीश बने।

मानव संसाधन - साझेदार कार्यनीति

सत्यनारायण प्रधान
अमप्र (मा.सं - समवाय)

मानव संसाधन क्या है? यह पारंपरिक प्रशासनिक मानव संसाधन से कितना भिन्न है?

वर्तमान में, मानव संसाधन का कार्य बहुत अधिक कंपनी के क्रय विभाग के समनुरुप बनाया गया है। वस्तु, सामग्री और आपूर्तिकर्ताओं की तरह लोग उनके संचालन की कमी और विकास दर के आधार पर उपयोगकर्ता विभाग द्वारा अपेक्षित है। दोनों संसाधनों की गुणवत्ता नियंत्रण और लागत या बजट की कमी के लिए जाँच की जाती है। केवल मामूली अंतर यह है कि खरीदे गए हिस्सों, सामग्री के विपरित लोगों को प्रशिक्षित या तैयार किया जाता है इससे पहले कि वे अपेक्षित पार्टियों को भेजे जाएं जो उन्हें वास्तविक तैनाती या उपयोग से पहले प्रशिक्षित कर सकते हैं। मानव संसाधन भी अनुपयोगी उपकरणों की हैंडलिंग की तरह कर्मचारियों का स्थानापन्न, सेवा समाप्ति तथा सेवानिवृत्ति में शामिल है। संक्षेप में,अधिकांश मानव संसाधन प्रणाली केवल संसाधन पुनःपूर्ति और रखरखाव के लिए होता है जिसे **"पीपुल"** कहा जाता है।

वास्तव में, कार्यनीतिक मानव संसाधन इन प्रशासनिक जिम्मेदारियों को नहीं छोड़ता है। अन्यथा, कंपनी का कोई अन्य विभाग इन **"ऑपरेशन-ससटेनिंग"** गतिविधियों को नहीं करेगा। लेकिन इसका मुख्य कार्य प्रशासन समर्थन के बजाय कॉर्पोरेट नीति में भाग लेना है। कार्यनीतिक मानव संसाधन अन्य कार्यात्मक क्षेत्रों के साथ अपने संबंधों में प्रतिक्रियाशील होने के बजाय अधिक सक्रिय है। भविष्य में वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धा करने के लिए इसके आंतरिक ग्राहकों की क्या जरूरते हैं, इसके बारे में इसे अधिक चिंतित होना चाहिए। कार्यनीति मानव संसाधन प्रबंधक निर्देशों, मांग या शिकायतों की प्रतीक्षा नहीं करते हैं। वह अपना होमवर्क करता है, भविष्य पर शोध करता है, और सक्रिय समाधान और कार्यनीति सलाह मांगने पर प्रदान करता है। संक्षेप में वे अपने दृष्टिकोण में अधिक **"भविष्यवादी"** हैं।

कार्यनीतिक मानव संसाधन सुधारात्मक या दंडात्मक के बजाय निवारक है।

पारंपरिक एचआर का कार्य न्याय के प्रबंधन एवं कार्यान्वयनकर्ता और कॉर्पोरेट संपत्ति के रक्षक के रुप में है। यह कर्मचारियों को संसाधनों के रूप में विकसित होने के बजाय कार्यनीतिक संसाधनों को बर्बाद नहीं करने के रूप में देखता है। कार्यनीतिक एचआर का उद्देश्य कर्मचारियों को पहली बार सही काम करने के लिए अनुकूल माहौल बनाना है। इसका उद्देश्य उन्हें दंडित करने के बजाय गलतियों को रोकना है। यह दिशानिर्देश में विकासात्मक है।

कार्यनीतिक एचआर पारंपरिक कार्यात्मक मामलों के बजाय कॉर्पोरेट लक्ष्यों और कार्यनीतियों के साथ प्रदर्शन मानदंड प्रणालियों को संरेखित करता है।

अधिकांश पारंपरिक मानव संसाधन कार्य मूल्यांकन प्रणाली मूल रूप से अनुमान करती है कि मूल्यांकन अवधि के दौरान अपने प्रबंधक या वरिष्ठ को कितनी अच्छी तरह संतुष्ट किया है। संतुष्टि का यह स्तर इस बात से संबंधित हो सकता है या नहीं कि कर्मचारी ने कॉर्पोरेट लक्ष्यों में कितना अच्छा योगदान दिया है। अधिकतर समय, ऐसा नहीं होता है। इस कारण से, पारंपरिक कार्यनिष्पादन /प्रदर्शन मूल्यांकन एक अत्यधिक राजनीतिक, विवादास्पद, व्यर्थ का अभ्यास बन गया है जो संगठन में टीम वर्क की तुलना में अधिक नकारात्मकता पैदा करता है। कार्यनीतिक एचआर गुणवत्ता, उत्पादकता, आंतरिक और बाहरी ग्राहक संतुष्टि जैसे अधिक प्रासंगिक आउटपुट प्रदर्शन पर लोगों का मूल्यांकन करता है। इसमें रैंक और फ़ाइल कर्मचारियों और प्रबंधकों दोनों के प्रदर्शन मानदंड शामिल हैं जो उन्हें कॉर्पोरेट लक्ष्यों में योगदान करने हेतु सक्षम करेगें।

कार्यनीतिक मानव संसाधन प्रबंधन एक कर्मचारी के रुप में व्यक्ति और संगठन दोनों के लाभ के लिए कर्मचारियों को आकर्षित, विकसित, पुरस्कृत करने और बनाए रखने का अभ्यास है।

मानव संसाधन विभाग जो कार्यनीतिक एच आर प्रबंधन का कार्य करता है, वह एक साइलो के अंतर्गत स्वतंत्र रूप से काम नहीं करता है; वे अपने लक्ष्यों को समझने के लिए एक संगठन के भीतर अन्य विभागों के साथ बातचीत करते हैं और फिर उन उद्देश्यों के साथ संरेखित कार्यनीति बनाते हैं, साथ ही साथ संगठन के लिए भी रुपरेखा तैयार करते हैं। परिणामस्वरूप मानव संसाधन विभाग के लक्ष्य संगठन के बाकी हिस्सों के लक्ष्यों को प्रतिबिंबित और समर्थन करते हैं। कानूनी अनुपालन या मुआवजे के लिए आवश्यकता के विपरीत सामरिक एचआरएम को संगठनात्मक सफलता में भागीदार के रूप में देखा जाता है, सामरिक स्ट्रैटेजिक एचआरएम अन्य विभागों को मजबूत और अधिक प्रभावी बनाने के लिए मानव संसाधन विभाग के भीतर प्रतिभा और अवसर का उपयोग करता है।

आज की दुनिया में, प्रतिभा की व्यवहार्यता और योगदान करने की क्षमता की गारंटी देने के लिए, एचआर प्रबंधकों को खुद को कार्यनीतिक साझेदार के रूप में सोचने की आवश्यकता है।

इस भूमिका में, एचआर प्रबंधक संगठन विकास, व्यापक व्यापार योजना और उद्देश्यों को पूरा करने में योगदान देता है। मानव संसाधन व्यवसाय उद्देश्यों को संगठन के समग्र कार्यनीति व्यापार योजना और उद्देश्यों की प्राप्ति का समर्थन करने के लिए परिभाषित किया जाना है। कुशल मानव संसाधन प्रबंधक को कार्य प्रणालियों के डिजाइन के बारे में गहराई से जानकार होना आवश्यक है जिसमें लोग सफल हो सकते हैं और योगदान दे सकते हैं ।

यह कार्यनीतिक साझेदारी मानव संसाधन सेवाओं को प्रभावित करती है जैसे कि कार्य स्थिति की डिजाइन; हाइरिंग; पारितोषिक, मान्यता और कार्यनीतिक पारिश्रमिक; निष्पादन विकास और मूल्यांकन प्रणाली; कैरियर और उत्तराधिकार नियोजन; और कर्मचारी विकास। उपरोक्त गतिविधियों को सफलतापूर्वक पूरा करने से, एचआर मैनेजर "**व्यावसायिक सफलता**" के लिए एक कार्यनीतिक योगदानकर्ता के रूप में सोच सकता है।

सफल व्यवसाय बिजनेस पार्टनर बनने के लिए, एचआर मैनेजर को व्यवसाय के लोगों की तरह सोचना पड़ता है, लाइन फंक्शन (योजना, डिजाइन, मार्केटिंग / कामर्शियल और प्रोडक्शन), फाइनेंस / अकाउंटिंग को जानना होता है और लागत में कटौती गणना के लिए जिम्मेदार होना चाहिए और विभिन्न वित्तीय और भौतिक मापदंडों के आधार पर **निष्पादन मापन प्रणाली (पीएमएस)** के माध्यम से निवेश पर रिटर्न (आरओआई) के संदर्भ में सभी मानव संसाधन कार्यक्रमों एवं प्रक्रियाएं की माप की जानी चाहिए।

संक्षेप में प्रस्तुत करने के लिए, मानव संसाधन प्रबंधक को एक व्यवसाय कार्यनीतिकार होने के लिए 10 (दस) तरीके हो सकते हैं:

1. अपने संगठन के व्यवसाय को समझें

एचआर मैनेजर का सरोकार कर्मचारियों से रहता है, कंपनी के भीतर एक छोटा कार्य है, जो संगठन के बड़े कार्यों में से एक है। इसलिए, उसे योजना, डिजाइन, वाणिज्यिक, उत्पादन, गुणवत्ता और लेखा व्यावसायों के साथ बात करने के लिए हर दिन समय बिताने की आवश्यकता है ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि इस बड़ी दुनिया में क्या चल रहा है। उसे आंतरिक ग्राहकों को जानने और प्रबंधन करने का ज्ञान आवश्यक है। उसे समर्थ वातावरण में प्रभावपूर्वक, लाभप्रद तथा सम्मानजनक व्यवसाय के लिए क्या आवश्यकता है और उसे लोगों को मदद करनी चाहिए।

2. व्यापार लक्ष्यों और योजनाओं के लिए जिम्मेदारियां साझा करें

सरकार के साथ समझौता ज्ञापन (एमओयू) सहित सभी व्यावसायिक लक्ष्य मानव संसाधन विभाग की योजना बनाते समय लक्ष्य है। इसलिए, उन्हें सभी व्यावसायिक उद्देश्यों के साथ-साथ मानव संसाधन लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए निर्देशित किया जाना चाहिए। संस्कृति प्रदर्शन विकसित करना एक लक्ष्य है जिसमें एचआर को स्वयं की संभावना होनी चाहिए।

मानव संसाधन प्रबंधक को उन सर्वोत्तम लोगों की आपूर्ति करनी चाहिए जो व्यवसाय में प्रशिक्षित हो, उनके काम से प्रेरित हो, कंपनी द्वारा पुरस्कृत हो और सक्षम प्रबंधन का नेतृत्व करते हो। व्यवसाय के बारे में जानकार होने के नाते और वह ऐसे प्रश्न पूछ सकते हैं जो सभी के निरंतर सुधार को प्रोत्साहित करें।

3. मानव संसाधन व्यवसाय को पूरी तरह से जानें

आंतरिक ग्राहक सही और व्यावहारिक जानकारी और सलाह के लिए मानव संसाधन विभाग पर भरोसा करते हैं क्योंकि यह

विश्वसनीय, श्रेय, भरोसेमंद और जानकार हैं और इसमें गहरी अखंडता है।

यदि मानव संसाधन प्रबंधक लोगों को निराश करते हैं, तो वे सूचना और सलाह के लिए उनके पास आना बंद कर देंगे। वे उत्तर देने में भरोसा और विश्वास खो देंगे। (यह कहना हमेशा ठीक होगा कि आपको पता चलेगा।

4. विभाग व्यवसाय की तरह चलाएं

मानव संसाधन प्रबंधक को समग्र व्यापार के कारोबार में इतना नहीं फंसना चाहिए कि वह विभाग को व्यवसाय की तरह चलाना न भूलें। प्रति सप्ताह रिपोर्टिंग सदस्यों के साथ बैठक करने से सामंजस्य विकसित होता है। प्रत्येक सप्ताह विभाग के सदस्यों के साथ बैठक कर सुनिश्चित किया जाए कि सभी सदस्यों को एक ही तरह के सलाह दिए जाए।

व्यक्तिगत लक्ष्यों को सभी व्यावसायिक उद्देश्यों की उपलब्धि में योगदान करना चाहिए। रिपोर्टिंग प्रबंधकों के लिए लक्ष्यों को दैनिक "टू-डू" सूची में अनुवाद करने की आवश्यकता है। प्रत्येक महत्वपूर्ण गतिविधि के लिए फीडबैक लूप या ऑडिट की आवश्यकता होती है ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि इसे पूरा किया जा रहा है।

5. परिणाम और लक्ष्य उपलब्धि को मापें, कार्य प्रक्रियाओं को नहीं

मानव संसाधन समग्र लक्ष्यों सहित संगठन की उपलब्धि को संभालता है। मानव संसाधन के लिए विशिष्ट लक्ष्यों को पहचानने और मापने के लिए मानव संसाधन भी जिम्मेदार है।

न्यूज़ीलैंड के मानव संसाधन संस्थान के पॉल टॉल्सन और फिलिप डेवे ने 32 संभावित उपायों की एक सूची तैयार की है, जिसका उपयोग संगठन मानव संसाधनों को मापने के लिए करते हैं। फिर उन्होंने मानव संसाधन उपायों की पहचान करने के लिए कई संगठनों में एक बेंचमार्क अध्ययन किया।

रैंक के क्रम में उनके द्वारा लिए गए पूरे नमूने में से छह सबसे अधिक इस्तेमाल किए जाने वाले उपाय थे:

- दुर्घटना क्युिंसी दर (60.3 प्रतिशत),
- ग्राहक संतुष्टि सर्वेक्षण (60.1 प्रतिशत),
- अनुपस्थिति दर (56.3 प्रतिशत),
- प्रशिक्षण और शिक्षा लागत (56.3 प्रतिशत),
- लोगों की लागत (53.9 प्रतिशत) और
- दक्षता (53.2 प्रतिशत) ।

आश्चर्य की बात नहीं, सबसे अधिक इस्तेमाल किए जाने वाले उपाय अच्छी तरह से उचित तरीकों को विकसित करने से जुड़ी कुछ कठिनाइयों को दर्शा सकते हैं और शायद, मानव संसाधन . फंक्शन और विचार की गतिविधियों के महत्व को किसी तरह से मापा जाना चाहिए।

सर्वेक्षण किए गए अधिकांश संगठनों ने उदाहरण के लिए, प्रशिक्षण लागत को मापने, मानव पूंजी में निवेश पर वापसी, प्रति कर्मचारी मूल्य जोड़ा, नौकरियों को भरने का समय, प्रशिक्षण और वरिष्ठता पर वापसी नहीं किया। "

ये परिणाम माप हैं, न कि प्रक्रिया उपायों (प्रशिक्षित लोगों की संख्या) एचआर सफलता को प्रदर्शित करने के लिए महत्वपूर्ण हैं - सफलता जो आपको कार्यकारी तालिका में लाएगी।

6. मानव संसाधन में लोगों को याद रखें

क्या एचआर विभाग उन लोगों के लिए एक चुंबक है, जिन्हें सहायता, सलाह या साउंडिंग बोर्ड की आवश्यकता है? क्या वरिष्ठ प्रबंधकों में से कुछ आगंतुक हैं? यदि ऐसा है, तो मानव संसाधन प्रबंधक को यह याद रखना चाहिए कि उसे संगठन के लोगों की सेवा करने की आवश्यकता है ताकि वे व्यावसायिक लक्ष्यों को पूरा कर सकें।

दक्षिण पश्चिम एयरलाइंस में, मानव संसाधन समारोह को लोगों के लिए कार्यालय कहा जाता है, और वरिष्ठ मानव संसाधन व्यक्ति का एक समान शीर्षक है। (एचआर शीर्षक काम के अधिक वर्णनात्मक होते जा रहे हैं)। और सबसे पहले, वह लोगों की सेवा करने के लिए वहाँ है। मानव संसाधन प्रबंधक एक ऐसे दिन तक अपनी सफलता का न्याय कर सकता है जब एक कार्यकारी, उत्पादन कार्यकर्ता, वरिष्ठ प्रबंधन सलाह या सामान्य चर्चा के लिए रुकता है।

7. एक्सप्रेस थॉटफुल ओपिनियन डेटा एंड स्टडी द्वारा समर्थित

मानव संसाधन प्रबंधक को संख्याओं पर ज्ञान होना चाहिए। इसलिए, वह व्यवसाय की दिशा के बारे में पर्याप्त, बुद्धिमान राय दे

सकता है? व्यवसाय को सीखने से राय बनाने में मदद कर सकता है, जो डेटा के साथ बैकअप होगा। उसे उन निर्णयों के प्रभाव को समझने की आवश्यकता है जो उसका कार्यालय शेष कंपनी के काम के लिए करता है।

यह कहना पर्याप्त नहीं है कि उन्हें लगता है कि प्रबंधकों को काम पर रखने से कर्मचारियों की भर्ती और काम पर रखने में तेजी आएगी। उसे डेटा के साथ भर्ती के तरीकों और निर्णय लेने का बैकअप करना चाहिए।

8. प्रौद्योगिकी के लाभ का दोहन

मानव संसाधन प्रबंधक बेहतर ग्राहक सेवा प्रदान कर सकता है और नए मूल्य वर्धित कार्यनीतियों का सपना देखने के लिए अपना समय मुक्त कर सकता है। कभी-कभी यह प्रभावी मानव संसाधन सूचना प्रणाली (HRIS) के प्रभाव को कम करने के लिए सही नहीं है। प्रबंधन-आवश्यक जानकारी शीघ्र, आसानी से, सही ढंग से और उपयोगी स्वरूपों में प्रदान करना उसे अच्छा दिखता है और अच्छा भी महसूस करता है। कर्मचारी संगठन के सबसे बड़े निवेश हैं। उनकी लागत को ध्यान से ट्रैक करना व्यावसायिक समझदारी है।

इसके अतिरिक्त, एक इंट्रानेट / इंटरनेट और पेपरलेस वर्क कल्चर के उपयोग से कर्मचारियों को खाली समय मिलेगा, जो कि अधिक रचनात्मक, विचारशील, आगे की सोच वाले कार्यों के लिए अनुमति देगा - जैसे व्यवसाय की कार्यनीति विकसित करना।

9. ऐसे लोगों के लिए कार्यक्रम सुझाएं जो लगातार व्यवसाय में सुधार करते हैं

मानव संसाधन प्रबंधक को आदर्श रूप से नए कार्यक्रमों का प्रस्ताव करना चाहिए या लोगों के मुद्दों को हल करना चाहिए, उन समाधानों का सुझाव देना चाहिए जो व्यावसायिक लक्ष्यों की उपलब्धि का समर्थन करते हैं। उदाहरण के लिए, व्यावसायिक उद्देश्यों को पूरा करने हेतु प्रबंधकों को प्रोत्साहित करने के लिए एक नई परिवर्तनीय वेतन प्रणाली का सुझाव देने के कारण हैं।

"धन्यवाद" और "जन्मदिन" कार्ड प्रणाली कर्मचारी प्रेरणा और उत्पादकता में मदद करने के लिए सहायक होती है।

जब भी संभव हो, उसे नए कार्यक्रमों का सुझाव देना चाहिए जो व्यवसाय का समर्थन करने वाले औसत दर्जे के उद्देश्यों पर आधारित हों। फिर, उसे परिवर्तनों को मापने और मूल्यांकन करने के लिए याद रखना चाहिए कि क्या नई प्रक्रिया ने काम किया। जब वह सिस्टम का प्रस्ताव करता है और सुधार करता है कि व्यवसाय के एक पहलू को बेहतर बनाता है, तो उसे कार्यकारी पटल पर अपनी कार्य को दृढ़ करना चाहिए।

10. हर संभावित विधि के माध्यम से हर दिन सीखें और बढ़ें

मानव संसाधन प्रबंधक को अपने ज्ञान का उपयोग करने के लिए आवश्यक है कि लोगों को सीखने के विकास को जारी रखने के लिए क्या करना आवश्यक है। संक्षेप में उन्हें निम्नलिखित गतिविधियों को अंजाम देना आवश्यक है:

- एक और अधिक अनुभवी "मेंटर" या साउंडिंग बोर्ड की तलाश करें, जिसे वह इसमें शामिल कर सकता है और उससे सीख सकता है।
- पेशेवर मानव संसाधन सम्मेलनों, बैठकों और घटनाओं में भाग लें।
- विभिन्न मानव संसाधन पेशेवर संघों के अलावा कार्यकारी नेतृत्व और प्रबंधन बैठकों में भाग लें। ज्ञान की तलाश करें जो अनुशासन और विभाग की सीमा से परे हों।
- हर साल कम से कम चालीस घंटे प्रशिक्षण और शिक्षा में भाग लें। सुनिश्चित करें कि प्रत्येक प्रबंधक भी उपस्थित हों। व्यवसाय के सभी पहलूओं को कवर करें और व्यवसाय चलाएं।
- ऐसे लोगों की तलाश करें, जो सवाल पूछेंगे और उसकी मान्यताओं को चुनौती देंगे, ताकि वह आगे बढ़ सके।

निष्कर्ष:

एचआर प्रबन्धक एक कार्यनीतिकार होने के कारण सीएफओ की भाषा बोलने और लोगों की प्रतिभा और क्षमता को दिखाने के लिए सीईओ के विश्वसनीय सलाहकार होने के बीच संतुलन कायम रखते हुए अपने मूल्य प्रस्ताव को प्रदर्शित करने का अवसर है।

मानव संसाधन स्थानापन्न, सेवा समाप्ति, सेवानिवृत्ति तथा कर्मचारियों की अनुपयोगी संपत्ति की प्रक्रिया में शामिल रहता है जो मूल्यह्रास उपकरणों की हैंडलिंग की तरह होता है।

जब गोरों ने एक गांव को घोषित किया "गैरचिरागी"

महीप गोयल
प्रबंधक (मानव संसाधन)

ब्रिटिश अधिकारियों की प्रतिहिंसा इतने से भी संतुष्ट हो जाती तो गनीमत थी। उन्होंने तब तक चैन नहीं लिया, जब तक सरकारी नक्शों से महुआडाबर का नाम नहीं मिट गया।

अवध में गांवों के उजड़ने व बसने का सिलसिला करीब-करीब उसके इतिहास जितना ही लंबा है। इस लिहाज से वहां आज भी गांवों का मोटे तौर पर दो श्रेणियों में विभाजन किया जाता है। इनमें पहली श्रेणी चिरागी गांवों की है और दूसरी गैरचिरागी गांवों की। चिरागी श्रेणी में ऐसे गांव आते हैं जहां चिराग जलते हैं यानी ग्रामीण आबाद हैं। इनके विपरीत गैरचिरागी वे गांव हैं, जो वक्त की मार कहें या सत्ता, सामंतों व जमींदारों के अनाचार-अत्याचार नहीं झेल पाए, उजड़ जाने को अभिशप्त हो गए और अब उनमें कोई 'दीया-बाती" तक करने वाला नहीं है।

जानकारों के अनुसार प्रायः हर गैरचिरागी गांव के उजड़ने के पीछे कोई न कोई विचलित कर देने वाला वाकया हुआ करता था। दो तीन दशक पहले तक गैरचिरागी गांवों के इस तरह के वाकये उनके पड़ोसी गांवों के बड़े बुजर्गों की जुबान पर रहा करते थे। लेकिन अब बदलती पीढ़ियों के साथ वे विस्मृति के गर्त में डूबते जा रहे हैं।

इनमें बस्ती जिले के बहादुरपुर ब्लॉक में ऐतिहासिक मनोरमा नदी के तट पर बसे और हथकरघों का केंद्र रहे महुआडाबर गांव का वाकया इतना अनूठा और अलग है कि पुराना पड़ जाने के बावजूद अब तक जनश्रुतियों का हिस्सा बना हुआ है।

दरअसल, 1857 में दस जून को अवध के फैजाबाद जिले से बिहार के दानापुर जा रही ब्रिटिश सेना कोई पांच हजार की आबादी वाले इस गांव के निकट पहुंची तो बागी ग्रामीणों में उसे लेकर जाने कितना गुस्सा भरा हुआ था कि उन्होंने उसे असावधान पाकर आव देखा न ताव, चारों ओर से घेरकर उस पर हमला बोल दिया। ऐसा विकट हमला, जिसमें न सिर्फ उसे उलटे पांव लौटने को मजबूत होना पड़ा, बल्कि पांच लेफ्टिनेंटों क्रमशः लिंडसे, थामस, इंग्लिश, रिची व काकल के साथ सार्जेंट एडवर्ड की जानें भी चली गईं।

सच पूछिए तो आधुनिक अस्त्र-शस्त्रों से सज्जित उस नियमित सेना के लिए यह डूब मरने जैसी बात थी कि वह ग्रामीणों से अप्रत्याशित मुकाबले में उनके लाठियों, भालों व बर्छियों जैसे पारंपरिक हथियारों से भी पार नहीं पा सकी और शिकस्त खाकर बिखर गई। लेकिन उसका सार्जेंट बुशर किसी तरह अपनी जान बचाकर भागने में सफल हो गया तो उसने खुद को खुशकिस्मत समझ ईश्वर को धन्यवाद दिया और शर्मिंदगी का तमगा गले में लटकाए हुए सैन्य शिविर में जाकर वरिष्ठ अधिकारियों को वस्तुस्थिति की जानकारी दी। लेकिन उन अधिकारियों ने, संभवतः रणनीति के तौर पर, और कुमुक लेकर उक्त बागी गांव पर फौरन धावा बोलने से परहेज रखा।

दस दिनों तक इंतजार करने के बाद 20 जून को, जब उन्होंने समझा कि अब ग्रामीण असावधान हो चुके होंगे, डिप्टी मैजिस्ट्रेट विलियम्स पेपे के नेतृत्व में घुड़सवार सैनिकों से घिरवाकर समूचे गांव में आग लगवा दी। इस अग्निकांड में कितने ग्रामीणों की बलि चढ़ी, कितनी मांओं की गोद सूनी हुई, कितने बच्चे यतीम हुए और कितने सुहाग उजड़ गए, इतिहास की पुस्तकों में इसकी कोई तफसील दर्ज नहीं है। अलबत्ता, ये पुस्तकें बताती हैं कि उस दिन की बदले की कार्रवाई में ब्रिटिश सेना ने गांव के जले हुए मकानों, मस्जिदों व हथकरघों को सायास जमींदोज कर डाला और उसके बाहर एक बोर्ड लगाकर उस पर लिखा दिया था-'गैरचिरागी''।

यही नहीं लौटते हुए अंग्रेजी सेना पड़ोसी गांव के पांच निवासियों- गुलाम खान, गुलजार खान, निहाल खान, घीसा खान व बदलू खान को अपने साथ लेती आई। महुआडाबर के ग्रामीणों को भड़काने के आरोप में इन पांचो पर मुकदमे चलाए गए और 18 फरवरी, 1858 को इन सबको फांसी दे दी गई।

ब्रिटिश अधिकारियों की प्रतिहिंसा इतने से ही संतुष्ट हो जाती तो भी गनीमत थी। उन्होंने तब तक चैन नहीं लिया, जब तक सरकारी नक्शों व रिपोर्टों से महुआडाबर का नाम तक नहीं मिटा दिया गया। इसीलिए आज की तारीख में किसी गजेटियर में भी उस गांव का जिक्र नहीं मिलता।

हां, जानें क्यों इस कांड के कुछ ही दिनों बाद उन्होंने इस गांव से पचास किलोमीटर दूर बस्ती और गोंडा जिलों की सीमा पर गौर ब्लॉक में बभनान के पास महुआडाबर नाम से ही नया गांव बसा दिया, जो आज भी आबाद है।

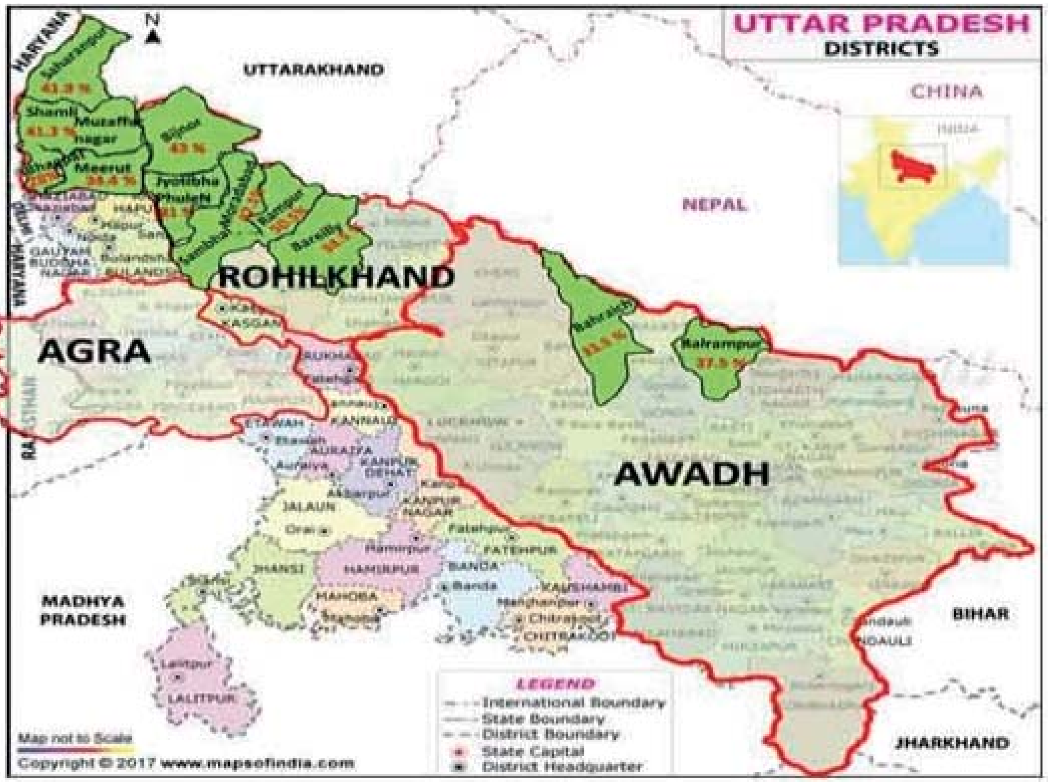

मुंबई उपक्रम टॉलिक द्वारा पुरस्कार ग्रहण करते समय कमोडोर टी वी थॉमस, नि(सयो एवं का), श्रीनिवास सिन्हा, रामप्रीत यादव, सुरेश कदम, पी डी सिद्दीकी, सिमनलाल आर्य।

स्कोप द्वारा उत्कृष्ट पत्रिका का पुरस्कार प्राप्त करते हुए श्री संतोष कुमार मल्लिक मप्र(मा.सं), श्रीनिवास सिन्हा अमप्र-(मा.सं), श्री रामप्रीत यादव सप्र(राजभाषा)

माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड
राष्ट्र के पोत निर्माता

Skill India
कौशल भारत - कुशल भारत

Digital India
Power To Empower

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर